॥ ओ३म् ॥

दक्षिण अफ्रीका की यात्रा

तथा

वैदिक धर्म प्रचार

लेखक

श्री० महता जैमिनी बी० ए० वैदिक मिश्नरी
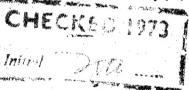
प्रकाशक तथा मुद्रकः-

विश्वम्भर सहाय 'प्रेमी'

अध्यक्ष—प्रेमी प्रिण्टिङ्ग प्रेस मेरठ शहर

प्रथमबार १०००] [मूल्य १)

अशुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	२	२ नौम्बर	१२ नौम्बर
४	२	बराब	बराबर
२४	२	३ दिसम्बर	३० दिसम्बर
२५	२१	सद्दान	सुल्तान जंजीबार
२५	२२	रकन्त	रैनकिन
६८	२	हुक्मचंद	मोहकमचन्द
७०	१५	१९१७	१९१२
७५	६	१९२५	१९२५
७७	१५	१९२४	१९२८
८२	३	हुक्मचंद	मोहकमचन्द
८३	५	वाले मकान	कार्यालय
९४	१५	काउमेज	कैटोमाईनर
१००	९	मामगहड्ड	सटाङ्कश
१३३	१	रिचमन	रिचमंड
१७८	१	कयू	मेंटो
१७८	६	आर्य सभा	आर्य सङ्गीत सभा
१७९	२	पक्षपात	पक्षपात रहित
२०६	२०	१९१	भूल से लिखा गया है।
२०७	१०	कयूमाइनर	कैटोमाईनर

भूमिका

पूर्वी अफ्रीका में प्रचार समाप्त करके दयानन्द अर्द्ध शताब्दि अजमेर में सम्मिलित होने के लिये हम २६ अगस्त १९३३ को भारत में लौट आये। यद्यपि हमें दक्षिण अफ्रीका में प्रवेश करने का आज्ञा पत्र वहां की सरकार ने दारासलाम में तार द्वारा भेज दिया था और टांगानीका सरकार के चीफ़ सेक्रेटरी ने हमारे पासपोर्ट पर उसे दर्ज कर दिया था परन्तु हमारी हार्दिक इच्छा यही थी कि किसी तरह दयानन्द अर्द्ध शताब्दि का दृश्य देख आयें क्योंकि ऐसा शुभ अवसर फिर इस जीवन में नहीं मिल सकेगा। विचार यही हुआ कि शताब्दि का उत्सव समाप्त करते ही नौम्बर में लौट आयें और दिसम्बर में दक्षिण अफ्रीका पहुंच जायं इसलिये हमने मिस्टर वर्मा को अफ्रीका में इस बात की सूचना भी कर दी। हम आर्य समाज नैरोबी का उत्सव समाप्त करते ही वहां पांच दिन कथा करने के पश्चात् १७ अगस्त के जहाज़ में सवार होकर २६ अगस्त को बम्बई पहुंच गये।

बम्बई में एक व्याख्यान देकर सूरत, आनन्द, और मेरठ एक एक दिन सहारनपुर, अम्बाला छावनी, लुधियाना प्रचार करके ९ सितम्बर को लाहौर पहुँचा। ९ सितम्बर को आर्य समाज लाहौर में अफ्रीका का भारत के साथ सम्बन्ध विषय पर व्याख्यान दिया। तत्पश्चात् मैं ज़िला शेखूपुरा, ननकाना साहब, कमालिया में प्रचार

करता हुआ अकाड़ा, रमदास में प्रचार करके मुजफ्फरनगर, ऋषि-केश, देहरादून, अम्बाला शहर और खन्ना में प्रचार करके करनाल और बाँदीकुई में प्रचार किया। इस प्रकार १३ अक्तूबर को अजमेर पहुंच गया। २० अक्तूबर तक मैंने उत्सव की शोभा देखी। मेरे भी दो व्याख्यान हुये। जनता ने उन्हें बहुत पसन्द किया। लोग चाहते थे कि मेरे और भी व्याख्यान हों परन्तु प्रबन्धकर्त्ता कार्य क्रम में परिवर्तन करना उचित न समझते थे। उत्सव के प्रबन्ध में बहुत त्रुटियां थीं इसलिये मैं वहां से कुछ उत्साह और उत्तेजना लेकर नहीं आया। उल्टा निराश होकर ही लौटा।

स्वामी व्रतानन्द जी ने अजमेर में प्रार्थना की कि मैं उनके गुरुकुल चित्तौड़ के उत्सव में अवश्य सम्मिलित होऊं जो २१ से २३ अक्तूबर तक आपने नियत कर रक्खा था। मैं २० अक्तूबर की रात्रि को अजमेर से चल कर २१ अक्तूबर को प्रातःकाल चित्तौड़ पहुँच गया। मेरे तीन व्याख्यान उत्सव में हुये। २२ अक्तूबर को सायङ्काल को मेरा मंत्री श्रीराम भारती भी अपने कुटुम्बियों को देहली पहुंचाकर चित्तौड़ में आ गया और हम २३ अक्तूबर को प्रातःकाल चित्तौड़ से प्रस्थान करके २४ अक्तूबर प्रातःकाल बम्बई पहुँच गये। वहां पहुँचकर पता लगा कि अब यह नियम हो गया है कि जहाज़ में बैठने से दो सप्ताह पूर्व चेचक का टीका लगवाना चाहिये। हमारा जहाज़ पहली नवम्बर को चलने वाला था इसलिये हम उसमें न बैठ सके और १५ नवम्बर के जहाज़ की प्रतीक्षा करने लगे। बम्बई में पांच दिन व्याख्यान देकर सूरत में प्रचार करने चल दिये। वहांपर टीका लगवाया और

छः दिन वहां प्रचार करके नदियाद, आनन्द, नौसारी और सूपा के गुरुकुल में प्रचार करते हुये २ नवम्बर को प्रातःकाल बम्बई लौट आये जिससे कि पुस्तकों के पारसल वसूल करके उन्हें ट्रङ्कों में बन्द करें ! यहां पर १५० रु० नक़द श्रीराम भारती के लिये एमीग्रेशन वालों ने अमानत के रखा लिये और १० रु० उस पर स्टाम्प वगैरः का व्यय चार्ज कर लिया। यह रुपया बम्बई समाज के मंत्री द्वारा रखवाया गया। अब की बार भी बम्बई में तीन व्याख्यान दिये।

मंत्री समाज ने दो दिन तो हमें आर्य निवास से भोजन कराया तत्पश्चात् अपना प्रबंध करने के लिये कहा। मुझे बड़ा शोक हुवा कि आर्य समाजों में इतना भी अतिथि यज्ञ, श्रद्धा, प्रेम और भक्ति भाव नहीं रहा कि एक उपदेशक को जो प्रचार करने के लिये विदेशों में जा रहा है और जो बम्बई रहकर भी एक दिन आराम नहीं करता, प्रति दिन समाज के आधीन व्याख्यान दे रहा है जिसे जनता बड़े प्रेम से सुनती है, उसके लिये केवल भोजन का प्रबन्ध भी नहीं किया जा सकता। विदेशों में तो अन्य जातियों के लोग आर्य उपदेशकों का भली प्रकार स्वागत करें, हर प्रकार की सुगमता दें और उनका सन्मान करें परन्तु भारत की समाजें अपने उपदेशकों का साधारण सत्कार भी न करते हुये यह आशा करें कि संसार भर में वैदिक धर्म का नाद बजावेंगे और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अपने मंदिर में लिख रक्खें सब धारणामात्र है। डाक्टर कल्याणदास को जब पता लगा कि हमारा ऐसा निरादर हुवा है तो उसने अपने गृह पर हमारे भोजन का प्रबन्ध कर दिया। उसको इस घटना के

सुनने से अत्यन्त क्लेश पहुंचा। अब वह समाज में बहुत कम आते जाते हैं परन्तु उनके हृदय में समाज का जोश और लग्न बराबर वैसी ही दृढ़ है। शायद सामाजिक लोगों के बर्ताव ने ही उन्हें सामाजिक कार्यों में तत्परता से भाग लेने में निरुत्साही बना दिया है।

१५ नौम्बर को प्रातःकाल हम जहाजके स्थान पर पहुँच गये। डाक्टरी निरीक्षण के पश्चात हमने जहाज पर पग धरा। इस प्रकार हम ८० दिन अर्थात् २ मास बीस दिन अफ्रीका से लौटकर भारत में रहे। इस समय में हमने बम्बई, सूरत, नदियाद, आनन्द, नौसारी, सूपा, बम्बई, मेरठ मुजफ्फरनगर, देहरादून, सहारनपुर, खन्ना अम्बाला छावनी व शहर, लुधियाना, लाहौर कमालिया, अकाड़ा रमदास शेखूपुरा ननकाना, करनाल, बाँगीकुई, अजमेर, चित्तौड़ आदि २५ स्थानों में ६८ व्याख्यान दिये। केवल १२ दिन खाली रहे जो कुछ तो यात्रा में और छः दिन अजमेर व्यतीत हुये इसके अतिरिक्त तीन पुस्तकें हिन्दी में तैयार करके छपवाईं और दो अंग्रेजी में अर्थात् (१) पूर्वी अफ्रीका की यात्रा (२) मेरा भूमण्डल प्रचार (३) विदेशों में भारतीयों की अवस्था (४) वैदिक मिशन इन अफ्रीका (५) संसार को भारत का संदेश। इन पुस्तकों में बहुत गवेषणा तथा अनुसन्धान से काम लिया गया है जो अवलोकन करने योग्य है।

इस प्रकार मैंने भारत में भी समय व्यर्थ नहीं खोया किन्तु उसे भली प्रकार से उपयोग में लाया। इस यात्रा में अफ्रीका से

आने जाने और भारत में भ्रमण करने में सातसौ रुपये व्यय हुये। इस प्रकार छटी जल यात्रा और सातवीं जल यात्रा के मध्य के समय को मैं उपयोग में लाया। अब इस पुस्तक में सातवीं जल यात्रा का वर्णन है। इसमें पुर्तगीज़ अफ्रीका और दक्षिण अफ्रीका की अवस्था और प्रचार का वर्णन है। जिससे भारत की जनता को पता लग जायगा कि विदेशों में प्रचार किस प्रकार हो रहा है और बाहर के लोग वैदिक धर्म प्रचार को किस दृष्टि से देखते और उपदेशकों का सन्मान करते हैं।

महता जैमिनी
वैदिक मिश्नरी

पहिला अध्याय

पूर्वी बृटिश अफ्रीका में दो मास पुनः प्रचार

म १५ नवम्बर को स्टिरिया जहाज़ में सवार हुये। हमारे पास ९ ट्रङ्क पुस्तकों और कपड़ों के थे। मार्ग में खाने का सामान भी हमने अपने साथ रख लिया था। हमारे पास चार सौ सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी, ५० सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी, गुजराती तामिल व तैलगू भाषा के थे। इनके अतिरिक्त आठ सैट वेद भाष्य के, अजमेर शताब्दि पर जो नवीन पुस्तकें प्रकाशित हुईं थीं उनकी कई कई प्रतियां, मेरे अपने रचित ग्रंथ, और कई प्रकार की अंग्रेजी पुस्तकें आर्य सिद्धान्तों पर थीं। इनके अतिरिक्त गुजराती, मरहठी, तामिल, तैलगू भाषा के भी कई धार्मिक ग्रन्थ थे जिससे कि विदेशों में पुस्तकों द्वारा भी प्रचार किया जा सके।

जहाज़ में हमारे साथ महाशय पूर्णचन्द सभासद आर्यसमाज और महाशय रामनाथ पूर्व मंत्री आर्य समाज मम्बासा भी थे जो

अर्द्ध शताब्दि का उत्सव देखकर अफ्रीका को वापिस जा रहे थे। उनके कारण हमें मार्ग में अच्छा साथ मिल गया और खाने पीने में कोई कष्ट न हुआ। समुद्र शान्त रहा इसलिये मैंने "विदेशों में आर्य समाज का इतिहास" पुस्तक की सामग्री को संग्रह किया और अवकाश के समय को उनके साथ वार्तालाप तथा खेल कूद में व्यतीत करता रहा। २४ नवम्बर को प्रातःकाल हम मम्बासा पहुंच गये। आर्य प्रतिनिधि सभा अफ्रीका का तार और खत पहिले से आये पड़े थे। दक्षिण अफ्रीका वालों ने इण्डियन विव्ज (Indiau Views) समाचार पत्र १७ नवम्बर १९३३ ई० में हमारे आगमन सम्बन्ध में पहिले से मुद्रित करा दिया था। रात को मेरा व्याख्यान आर्य समाज मम्बासा में "दयानन्द अर्द्ध शताब्दि के वृतान्त" पर हुआ। हमारे पास जञ्जीबार का टिकट था इस लिये हम अधिक नहीं ठहर सकते थे। आर्य समाज मम्बासा ने बहुत प्रेरणा की कि हम उनके उत्सव तक पूर्वी अफ्रीका में ठहरें जोकि ३०, ३१ दिसम्बर १ जनवरी के लिये नियत हो गया था। साथ ही मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा का पत्र भी आया कि मैं कसोमों अल्डोरियट, मम्बासा, दारासलाम और जञ्जीबार के उत्सवों पर व्याख्यान देकर दक्षिण अफ्रीका में जाऊं। इन सब समाजों ने मेरे आगमन का समाचार सुनकर अपने अपने उत्सव नियत कर दिये। चूंकि हमारा दक्षिणअफ्रीकामें कोई विशेष कार्य तो था नहीं, केवल प्रचार करना ही था इसलिये हमने उनकी प्रार्थना को स्वीकार करते हुये निश्चय कर लिया कि यह उत्सव समाप्त करके दक्षिण अफ्रीका जायंगे।

GOOD NEWS

FOR THE

Hindu Community, of Durban.

Towards the end of the year South African Indians will have amidst them one of the best known Vedic Missionaries in the person of Pundit Mehta Jaimini, B A. L L. B. M. R A. S. Ph. D. He has travelled widely for the last ten years in his voluntary efforts to preach the Vedic faith, enlightening both Indians Europeans and others on Aryan civilization, culture and religion. His lectures in East Africa, Siam, Singapore, Malaya, Mauritius, Fiji, New Zealand, Zanzibar, America, Japan and a host of other places throughout the world, and his advent everywhere was heralded with delight and the lectures were really a mine of knowledge and useful information to Indians and Europeans, and shows by his vast knowledge of present day economic and religious problems of India that he is a master of the subject.

The Tanganyika Opinion in its editorial of July 2nd comments.

"Pundit Jaimini by his lecture, refinement, ability and learning has magnitised the people. His sweet, forceful and composed voice will long after him continue to thrill the minds of all those who had the good fortune to hear him give lucid discourses on ancient Aryan culture, the divinity of Vedas, the influence of India on world culture, and Vedic philosophy. His learned exposition of Vedic hymns which he enshrined in the hearts of his big audiences. He preaches the gospel of true culture in a wonderful garment of illustrations and expressions. Pundit Mehta Jaimini seems to be specially fitted for the stupendous task. His old age he is now in his sixty-third year--commands respect from the richest to the lowly, his vast experience of Indian life makes him a keen observer, his travels all over the world and his personal contact with human nature in other countries force attention of his listeners, and above all his simplicity and unostentatious personality bring him within the reach of the rich and poor alike. He is an honorary missionary who has volunteered his services to make his contribution, however humble as he may think, to the cause of humanity. He has mastered his subjects. He quotes from memory

facts of history, dates and events, verses from the Bible, the Quaran and the Vedas.

Pundit Jaimini does not only preach, but he also writes. He has preserved the history and experiences of his travels in twenty different volumes which he has published at his own expense. He broadcasts this storehouse of learning and observations in all countries he visits.

Presently the learned Pundit is participating in that great National event, the semicentary of Swami Dayanand Saraswati at Ajmere, and will be leaving for South Africa about the end of December, 1933, or January 1934."

लेख—इण्डियन विव्ज़ समाचार पत्र १७ नोम्बर १९३३

शुभ संदेश

अर्थात्—इस वर्ष के अन्त में दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों के अहोभाग्य से उनके मध्य में भारत का एक प्रसिद्ध वैदिक मिश्नरी पंडित जैमिनी बी० ए० उपस्थित होगा। वह दस वर्ष से संसार भर में भारतीयों, यूरोपियन लोगों और अन्य जातियों में भारत की सभ्यता, धर्म और तत्व ज्ञान पर प्रचार करता रहा है। उसके

व्याख्यान पूर्वी अफ्रीका, स्याम, फीजी, मारीशस, जावा, उत्तरी, दक्षिणी और मध्य अमेरिका, जापान, चीन और कई स्थानों में बड़े महत्वपूर्ण हुये हैं। हर जगह पर जनता ने आपका बड़े प्रेम और उत्साह से सन्मान और स्वागत किया है। उनके व्याख्यान वास्तव में अनुसन्धान और गवेषणा के कोष और भारतीयों तथा युरोपियन जनता के लिये लाभदायक, शिक्षादायक और प्रभावशाला हुये है जिनसे प्रतीत होता है कि उन्हें वर्तमान समय की आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक अवस्था का पूर्ण रीति से ज्ञान है और वह अपने विषय में निपुर्ण और पूर्ण ज्ञाता है।

समाचार पत्र टाँगानीका ओपोनियन आपके सम्बन्ध में २२ जुलाई के अङ्क में निम्न लिखित सम्पादकीय टिप्पणी देता है:-

"पंडित जैमिनी ने अपने व्याख्यानों, योग्यता, त्यागभाव और विद्वता से टाँगानीका की जनता को आकर्षित कर लिया है। उसके मधुर, उत्तेजक, शान्त, नम्र भाषण चिरकाल तक उन लोगों के हृदयों में गूंजते रहेंगे जिन्हें आपके व्याख्यान भारत की संस्कृति वेदों के महत्व संसार की सभ्यता पर भारत का प्रभाव और वैदिक तत्व ज्ञान पर सुनने का शुभ अवसर मिला है। वेद मन्त्रों की व्याख्या बड़ी विद्वत्ता, योग्यता और ऐसे मनोरञ्जक ढंग से की है कि बड़ी भारी उपस्थिती के हृदयों में उसने अपना स्थान बना लिया है। वह सच्चे धर्म का प्रचार ऐसे उत्तम दृष्टान्तों और मनोहर अलङ्कारों से करता है कि लोग उस पर मुग्ध हो जाते हैं। वह ऐसे महान कार्य के लिये सुयोग्य प्रतीत होता है। उसकी वृद्ध अवस्था निकृष्ट से लेकर धनाढ्य पुरुषों के हृदय में भी उनका

सन्मान और सत्कार उत्तेजित करती है। उसका विशाल अनुभव मनुष्य जीवन के सम्बन्ध में, उसका संसारभ्रमण और भिन्न भिन्न देशों के अद्भुत वृतान्त, मनोरञ्जक घटनायें, जनता को ऐसा आकृष्ट और मोहित करती हैं कि जनता कभी उनसे वञ्चित होना नहीं चाहती ।

इसके अतिरिक्त उसका सरल स्वभाव, त्यागभाव और नम्रता धनाढ्य और कंगाल सब जनता को उसके संसर्ग में आने पर आकर्षित करते हैं। वह अवैतनिक और स्वतन्त्र प्रचारक है जो मनुष्य मात्र के उपकार के लिये लगातार प्रचार द्वारा कार्य कर रहा है। वह अपने व्याख्यानों और विषयों में पूर्ण रीति से निपुण और योग्य है। वह अपनी स्मरण शक्ति और मस्तिष्क से ऐतिहासिक घटनाओं, तिथियों और प्रमाणों को उपस्थित करता है। बाईबिल, कुरान और वेद के मंत्रों को जनता के सामने अपनी स्मरण शक्ति से दोहराता जाता है। पंडित जैमिनी केवल प्रचार ही नहीं करता किन्तु उत्तम लेखक भी है। उसने अपनी यात्रा के अनुभवों और ऐतिहासिक घटनाओं को बीस पुस्तकों के आकार में मुद्रित करके सुरक्षित किया है और जहां कहीं जाता है जनता में उन्हें प्रचलित करता है जिससे लोग उसके अनुभवों से लाभ उठावें। वह अब दयानन्द अर्द्ध शताब्दि के लिये अजमेर जा रहा है और दिसम्बर १९३३ या जनवरी १९३४ तक फिर लौट कर दक्षिण अफ्रीका जाने के लिये इधर आवेगा।"

२५ नौम्बर शाम को मम्बासा से रवाना होकर २६ नौम्बर को हम जञ्जीबार पहुंच गये। हमारे स्वागत के लिये जहाज पर

मिस्टर अनन्तानी, मंत्री समाज और अन्य आर्य पुरुष आ गये इसलिये हमें अपना असबाब उतारने में कोई भी कष्ट न हुआ। उन लोगों ने सब प्रबन्ध कर दिया।

रात्रि को मेरा व्याख्यान दयानन्द अर्द्ध शताब्दि की सफलता पर हुआ। २६ नौम्बर से १ दिसम्बर तक मैंने कठ उपनिषद् की कथा की। पम्बा टापू के लोग हमारे प्रचार के लिये बहुत उत्सुक थे। पहिली यात्रा में भी उनकी बड़ी अभिलाषा थी कि हम उनके यहां प्रचार करें। परन्तु हमें अवकाश नहीं मिला था इसलिये अब हमने वहां जाकर प्रचार करने का निश्चय किया। कसोमो समाज के दो तार आये हुये थे कि हमने अपना उत्सव २३, २४, २५ दिसम्बर नियत कर दिया है। आप हमारे उत्सव पर अवश्य पधारें। जञ्जीबार आर्य समाज भी इन्हीं तिथियों पर अपना उत्सव करना चाहता था इसलिये जञ्जीबार समाज को समय परिवर्तन कर देने के लिये कहा गया। उन्होंने १८ से २१ जनवरी तक अपना उत्सव नियत कर दिया और हमने निश्चय कर लिया कि २१ जनवरी के पश्चात् सीधा डरबन को प्रस्थान करेंगे और दारुसलाम का उत्सव जनवरी के पहिले या दूसरे सप्ताह में करायेंगे। अल्डोरियट समाज को लिख दिया कि आप अपना उत्सव हमारी दक्षिण अफ्रीका से वापिसी पर रक्खें।

पहिली दिसम्बर की रात्रि को हम जहाज़ में सवार हुये और दूसरी दिसम्बर को दिन के ९ बजे वैती में पहुँचे। यहां पर मैंने पांच व्याख्यान दिये। वहां से चाकेचाके के गुजराती भाई हमें लेने आये। वहां जाकर चार व्याख्यान दिये। यहां दोनों स्थानों में

गुजराती भाइयों ने अपने बच्चों की शिक्षा के लिये पाठशालाय खोली हुई हैं। चाके चाके में एक भवन और एक खैराती औषधालय भी खोला हुआ है। यहां नारियल और लौंग बहुत उत्पन्न होते हैं जो संसार भर में यहां से जाते हैं। यह द्वीप जञ्जीबार से ६० मील की दूरी पर है और सुल्तान जञ्जीबार के आधीन है। यहां भी हमारे गुजराती व्यापारी लोग रहते हैं। सभी अच्छे समृद्धशाली हैं। यहां पहिले कोई प्रचारक प्रचार करने नहीं आया था। मैंने ९ व्याख्यान इस द्वीप में आकर दिये। डाक्टर दीनानाथ पञ्जाबी वैद्यों में और डाक्टर रतनचन्द पञ्जाबी मरवानी के सरकारी अस्पतालों में डाक्टर हैं।

१० दिसम्बर को हम वहां से लौट कर जञ्जीबार आये। रात को फिर उपनिषद् की कथा की। ११ दिसम्बर को हम दारुसलाम रवाना हुये। १२ दिसम्बर को हम ३ बजे दोपहर को वहां पहुंच गये। रात्रि को अर्द्ध शताब्दि की सफलता पर व्याख्यान दिया जिसे जनता ने बहुत पसन्द किया।

दारुसलाम में दूसरा व्याख्यान जो मैंने भारत और अफ्रीका के प्राचीन सम्बन्ध पर दिया उसे वहां की जनता ने अत्यन्त पसन्द किया। उस व्याख्यान पर समाचार पत्र टांगानीका हैरल्ड ने निम्नलिखित लेख १५ दिसम्बर १९३३ के अङ्क में मुद्रित किया।

The Tanganyika Herald. Friday, 15th Dec. 1933

Africa's Relations With India

Shriman Mehta Jaimini, who is again in our midst since last Tuesday, after delivering

an interesting speech on the Semi Centenary of Swami Dayanand which he attended at Ajmer, took the subject of his second discourse 'Africa's relations with India". He poured forth a store of solid information on this topic to the astonishment of his hearers quoting freely from *Vishhu Puran, Agni Puran and Vayu Puran* corroborated by the writings of Lieutenant Wilford and Professor Gregory. He proved that in the pauranic period East Africa was divided by an ocean running between the Eastern portion called Kush Dwip and Western portion called Shiam Dwip But after sometime a cataclysm replaced the ocean by land called "Great Desert". In those days whole Africa was called Aeria-from the numerous settlements colonized by the Aryans there. The decendents of Prince Kusha, son of Rama the Great, emigrated ther · and put this name after their ancestors and colonised it.

Panditji then put forth the historical fact that Prince Devdas ruled from Mediterranean sea as for as the Indus valleys. His vast knowledge of this sudject and wonderful memory, all quotations being on the tip of his tongue, made the audience his admirers. In the course of his urther investigation of the subject he revealed

that during last four milleuniums the Indians frequented the continent as merchants and everywhere established trade centres and commerce emporiums. Coming down to the present age, he explained that during the recent period, that is since the advents of European and British nations, the Indians immigrated here as indentured labourers and clerks in various department, thus losing the mighty Empire established by their ancestors, and accepting inferior positions in East Africa.

Panditji has got inquisitive mind, wonderful faculty of investigation, miraculous memory and a store of analogies, parables and allegories which magnetise the audience and attract gathering.

Jaimiuiji will be leaving for Mombasa the day after tomorrow. He will speak on 'Ramayan' continuously for two nights, and it is hoped that people in large numbers will avail themselves of the opportunity of listening to his erudite lectures that has presented itself.

टांगानीका हैरल्ड १५ दिसम्बर सन् १९३३

अफ्रीका का भारत से सम्बन्ध

अर्थात्-श्रीमान् महता जैमिनी, जो पुन: हमारे मध्य में पिछले मङ्गलवार से उपस्थित हैं। दयानन्द अर्द्धशताब्दि अजमेर के

सम्बन्ध में व्याख्यान देने के पश्चात् आपने दूसरा व्याख्यान अफ्रीका और भारत के प्राचीन सम्बन्ध पर दिया। उसने इस विषय पर इतना गवेषणा और अनुसन्धान का कोष जनता के सन्मुख रक्खा और विष्णु पुराण, अग्नि पुराण, वायु पुराण से इतने स्पष्ट प्रमाण उपस्थित किये और उनके समर्थन में लैफ्टीनैण्ट विल्फोर्ड और प्रोफेसर ग्रैगोरी की पुस्तकों के उद्धरण पेश किये कि जनता उन्हें सुनकर चकित रह गई। उसने सिद्ध किया कि यहां प्राचीन काल में अफ्रीका दो भागों में विभाजित था। इसके मध्य में भारी सागर था जहां आजकल मरुस्थल उपस्थित है। पूर्वी भाग का नाम कुश द्वीप था और पश्चिमी भाग का नाम श्याम द्वीप था। कुछ काल के पश्चात् एक भीषण विप्लव और भूकम्प आया जो लघु प्रलय के समान थे जिन से समुद्र के स्थान में मरुस्थल उत्पन्न हो गया। समस्त अफ्रीका का नाम एरिया था। ग्रेगोरी महोदय लिखते हैं कि आर्य लोग और अहीर जाति के मनुष्यों ने इस महाद्वीप में उपनिवेश बनाये। इस लिये उन्होंने इसका नाम एरिया (जो आर्य का अपभ्रंश है) रक्खा। राजा कुश जो प्रसिद्ध राम का पुत्र था उसकी सन्तान और अनुयाइयों ने यहां आकर अपने उपनिवेश स्थापित किये और अपने पूर्वजों के नाम पर उसे कुश द्वीप नाम दिया।

तत्पश्चात् पंडित जी ने ऐतिहासिक घटना वर्णन की कि राजा देवदास का राज्य बहरे रूम (मध्य सागर) से लेकर सिन्ध की घाटियों तक विस्तृत था।

पण्डित जी का इस विषय पर विशाल ज्ञान और अद्भुत स्मरण शक्ति (सारे प्रमाण आपको स्मरण थे) को देखकर जनता

आप पर मुग्ध हो रही थी। फिर उसने वर्णन किया कि ४ अहर वर्षों से भारतीय लोग यहां आकर व्यापार का काम करते हैं और हर स्थान पर भारतीयों ने ही व्यापार की दुकान और केन्द्र स्थान तथा मंडियां स्थापित की हैं। उसने फिर वर्तमान समय का वर्णन करते हुये कहा कि पश्चिमी जातियों के आगमन के पश्चात् भारतीय लोग यहाँ कुली, परिश्रमी और बाबू बनकर आने लगे और इस प्रकार से अपने प्राचीन पूर्वजों के विशाल सम्राट से वाञ्छित होकर पूर्वी अफ्रीका में दुर्दशा के भागी बने हैं।

पंडित जी की खोजने और गवेषणा करने की शक्ति अद्भुत है। आपकी स्मरण शक्ति एक प्रकार का चमत्कार प्रगट करती है। आपके पास दृष्टान्तों और प्रमाणों का इतना कोष और भण्डार है कि आप श्रोतागण को जादू के समान वशीभूत कर लेते हैं।

पंडित जी अब रामायण पर कथा करेंगे और आशा है कि जनता उनके मनोहर उपदेशों से पूर्ण लाभ उठावेगी। फिर वे मम्बासा जावेंगे।

टांगानीका ओपीनियन समाचार पत्र ने २२ दिसम्बर के अङ्क में निम्न लिखित मुद्रित किया है।

The Tanganyika Openion. 22-12-33

Africa's Relations With India

Pandit Jaimiu's Multi-sided Exposition

A Portion of Rama Empire

A very instructive exposition was given by Pandit Jaimini Mehta at the Arya Samaj Girls

School on the subject of "Africa's Relations with India"

The learned Pandit cited quotations from Puranas, the ancient epic stories of the Aryans 5,000 years old, and from the writings of foreign explorers and research scholars and established that Africa was a part of India.

He also enumerated numerous instances to prove that Georaphically, hydrographically, ethnologically, and philologically, Africa was a part of India.

Mysteries of Miocene Era.

"There was a time in Miocene era when Africa and India were connected together", began Pandit Jaimini Mehta. He copiously reffered to Vishnu Puran and Agni Puran to show that the names of several places in Africa to-day had their origins as mentioned in these Puranas. Indian research scholars had prepared maps on the basis of geographical description of the world in the Puranas. He also narrated the physical transformation of the land which gradually gave newer and newer shapes to the map.

Quoting Gregory the author of "Hydrography" Panditji pointed out: "The equitorial plateau of East Africa was once connected with Indian Peninsula by a land which occupied the northern part of Indian Ocean. It was called Lemura Continent."

Wilford in his "Asiatic Researches" Vol. III states that in prehistoric times Africa was divided into two parts, there being an ocean separating both portions. The Eastern portion was called Kush Dwip and was connected with India. The northern portion was connected with Europe. The Eastern portion extended as far as Australia, then called New Guini. Kush Dwip included inter alia Nubia, Ethiopia, Abyssinia, etc. These territories were occupied by Prince Kush, son of King Rama of the Ramayana fame.

The speaker continued that the land now known as Egypt and countries bordering on the Nile and the other portions of the continent were called Aeria, a word which has its derivation from the word "Aryans"— from the numerous esttlements established therein by Aryans.

Strabo, in his "Travels" points out that settlements on the Nile were of those of Indians; Abyssinia was known as Middle India. Marco Polo further supports the same view. The country between the Caspian Sea and the Euxine was known both as India and Ethiophia.

Archosia has been described as white India and Persians as Yellow Indians by Isodorus. Prince Dev Das ruled over a portion of Kush Dwip which extended from the north of Africa to the banks of the Indus.

The speaker referred to the writings of Ross who maintained ethnologically that African races had a blood mixture of Indians and had various religious customs resembling those of ancient Aryans.

Speaking philologically, Pandit Jaimini referred to several words from African languages and showed that they had roots in Sanskrit words. Habbey in his "Bantu Beliefs and Magic" describes how there was a community of diet between the Indians and the Bantus There were several customs and rites which Habbey described as resembling with those of ancient Indians.

Modern History.

Pandit Jaimini further dwelt at length on the modern commercial connection between Africa and India. He quoted Sir Setalvad, Mr. Wintson Churchill, Sir John Kirk, Dr. Schnee and others who paid a tribute to the pioneer Indian commercial centres which carried civilisation to every nook and corner of this part of the Dark and unexplored continent. Indian settlements served as a practical means for European powers to hold political sway on this land and even the British administration over these territories had Indian commercial settlements as its foundation.

यहां की समाज ने हमारे आगमन पर १३, १४ जनवरी के लिये अपना उत्सव नियत कर दिया। हमारा विचार था कि दारूसलाम से होकर रेलगाड़ी द्वारा बटोरा और मवान्जा में प्रचार करते हुये कसोमो पहुँच जावें और उनके उत्सव में सम्मिलित हों परन्तु सामाजिक लोगों ने बताया कि यह मार्ग कठिन है और अधिक रुपया और समय खर्च होगा इसलिये हम १७ दिसम्बर तक छः दिन वहां प्रचार करके १८ दिसम्बर के जहाज में सवार होकर १९ दिसम्बर को मम्बासा पहुंच गये और वहां से रेल में बैठ कर २० दिसम्बर को नैरोबी पहुंचे। वहां से शाम को रेल में सवार होकर २१ दिसम्बर को रात्रि के ९ बजे कसोमो में पहुंच

गये। इस प्रकार तीन दिन रात बराबर यात्रा करने में व्यतीत किये। मार्ग में म्यो पर्वत पर बहुत शीत था क्योंकि वह आठ हज़ार फिट भूमि से ऊंचाई पर है। मम्बासा में गर्मी थी परन्तु यहां बहुत सर्दी थी। मार्ग में भोजन भी न मिला।

२२ दिसम्बर को मैंने दयानन्द अर्द्ध शताब्दि अजमेर की सफलता पर व्याख्यान दिया और २३ दिसम्बर को उत्सव आरम्भ हुआ। पहिले दिन मैंने दो व्याख्यान, एक स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर, दूसरा वैदिक धर्म के महत्व पर हुये। २४ दिसम्बर को मेरा उपदेश और एक व्याख्यान प्रातःकाल की कार्यवाही में हुआ। मध्य काल में भी मेरा एक व्याख्यान हुआ। रात्रि को आर्य कांफ्रेंस का मुझे प्रधान बनाया गया। आध घंटे तक मैंने आर्यों के कर्तव्य पर भाषण दिया। इस प्रकार एक दिन में चार व्याख्यान दिये।

२५ दिसम्बर को फिर मेरा उपदेश, एक व्याख्यान प्रातः और एक रात्रि को हुआ। इस प्रकार मैंने कसूमों में नौ व्याख्यान दिये।

२६ दिसम्बर को प्रातःकाल कसूमों से प्रस्थान करके सायङ्काल ५ बजे हम नकोरो पहुँचे। रात्रि के समय आर्य समाज मंदिर में दयानंद अर्द्ध शताब्दि के महत्व पर व्याख्यान दिया। २७ दिसम्बर को ४ बजे से ५॥ बजे तक ब्रादरहुड मुवमेंट (Brotherhood movement) भ्रातृ भाव प्रचारिणी सभा के भवन में मेरा व्याख्यान शान्ति के उपाय पर हुआ। जनता ने इसे बहुत पसन्द

किया। ७ बजे हमारी गाड़ी रवाना होने वाली थी इसलिये हम सात बजे सवार होकर दूसरे दिन प्रातःकाल नैरोबी पहुंच गये। यहाँ शाम को ७ बजे से ८॥ बजे तक दयानन्द अर्द्ध शताब्दि के समाचार पर व्याख्यान हुआ। जनता ने अत्यन्त प्रसन्नता प्रगट की। २९ दिसम्बर के ४ बजे हम मम्बासा रवाना हुये और ३ दिसम्बर को प्रातःकाल वहाँपर पहुंच गये। नैरोबी से और भी बहुत से भाई हमारे साथ गाड़ी में बैठे। चूंकि समाजें यहां मार्ग व्यय देने में भी संकोच करती हैं इसलिये हमने तीसरे दरजे में ही यात्रा की। ३० दिसम्बर को मेरे हाथ से ओ३म् का झण्डा लहराया गया। मैंने संक्षिप्त भाषण भी दिया। तत्पश्चात् नगर कीर्तन हुआ। रात्रि को महाशय बद्रीनाथ ने मैजिक लैंएटर्न द्वारा रामायण के दृश्य दिखाये।

३१ दिसम्बर को मेरा एक उपदेश एक व्याख्यान प्रातःकाल की कार्यवाही में, एक व्याख्यान सायंकाल की कार्यवाही में हुआ। पहली जनवरी को मेरा प्रातःकाल की कार्यवाही में एक व्याख्यान हुआ। २ बजे के पश्चात् चूंकि हमारा जहाज जाता था इसलिये हम वहां से प्रस्थान कर आये। इस प्रकार मम्बासा में मेरे पांच व्याख्यान उत्सव पर हुये। अस्तु।

दिसम्बर मास में मैंने कुल ३३ व्याख्यान आठ भिन्न भिन्न स्थानों में दिये। नवम्बर के पांच दिन के व्याख्यान मिलाकर कुल ३९ व्याख्यान हुये। दक्षिणी अफ्रीका के लिये हमें जो आज्ञापत्र मिला था वह १९३३ ई० के लिये था। इसलिये यहां अधिक ठहरने से उसकी मियाद समाप्त हो गई। हमने पुनः प्रार्थना-पत्र

आज्ञा-पत्र लेने के लिये दक्षिण अफ्रीका की सरकार को टांगानीका की सरकार द्वारा भेज दिया था। अब हम पहली जनवरी को मम्बासा से चल कर ३ जनवरी को दारासलाम पहुँच गये। ४ जनवरी से मैंने कठ उपनिषद् से कथा आरम्भ की। यद्यपि दो दिन के पश्चात् ही मेरे कान में घाव होगया था और दर्द होता था परन्तु मैंने कथा का कार्य जारी रक्खा। जनता इस कथा को सुनकर बड़ी प्रसन्न हुई। १२ जनवरी को कान में अधिक दर्द था इस लिये कथा न कर सका। १३,१४ जनवरी आर्य समाज का उत्सव हुआ। पहिले दिन पुत्री पाठशाला की कन्याओं के खेल और सम्वाद हुये। डाइरेक्टर शिक्षा विभाग की धर्मपत्नि ने इनाम बांटे।

१४ जनवरी को मेरा एक व्याख्यान हुआ। रात्रि को आर्य कांफ्रेंस में मुझे प्रधान बनाया गया और मेरा भाषण हुआ जिस का परिणाम यह हुआ कि वहां पर स्त्री समाज की स्थापना हो गई। १५ जनवरी को हम वहां से रवाना होकर जञ्जीबार पहुंचे। कान में दर्द था इस लिये दो दिन आराम किया। अधिकारी गण उत्सव की तैयारी में लगे हुये थे। १८ जनवरी से उत्सव होने वाला था। मेरा एक उपदेश और एक व्याख्यान पहिले दिन हुवा। इसी प्रकार दूसरे दिन एक एक उपदेश हुआ। दो नामकरण संस्कार और एक मुंडन संस्कार कराया।

तीसरे दिन पुत्री पाठशाला की पुत्रियों ने अद्भुत खेल और कर्तव्य दिखाये। सुलतान का पुत्र, उसका प्राइवेट सेक्रेटरी, लेडी रकन्ला धर्म पत्नि रेजीडेन्ट महोदय और उनका प्राइवेट सेक्रेटरी भी इस उत्सव में सम्मिलित हुये।

लड़कियों के कौशल देखकर सभी अत्यन्त प्रभावित हुये। मेरा व्याख्यान और एक उपदेश हुआ। २१ जनवरी को मेरा एक व्याख्यान हुआ। चूंकि अभी तक मेरा शरीर स्वस्थ न था इसलिये लोगों ने २१ जनवरी के स्टीमर में न जाने दिया। आज्ञा पत्र दक्षिण अफ्रीका से तार द्वारा आ गया था। सामाजिक लोगों ने बड़ा अनुरोध किया कि हम चार दिन और ठहर कर २६ जनवरी के स्टीमर में जायें। इसलिये हमने चार दिन और ठहर कर वहां पर निवास किया। प्रतिदिन, रात्रि के समय उपनिषदों की कथा होती रही।

जिस दिन वहां से चलना था उस रात्रि को समाज ने २५) रुपये भेंट किये जिन्हें मैंने लौटा दिया। चलते समय मंत्री समाज ने दारासलाम में गोविन्द भाई पटेल को पत्र भेजा कि महता जी को हमारी तरफ से एक सौ शिलिङ्ग डरबन तक का डैक का किराया दे दें। मुझे यह सुनकर अत्यन्त दुःख हुआ कि आर्य समाजों में कितनी कृतघ्नता आगई है कि यदि कोई संस्था के नाम पर चन्दा मांगने आये तो हजारों रुपये ले जावे परन्तु यदि उपदेशक उनके यहां आकर ५४ व्याख्यान देता है जो आज तक एक वर्ष में भी किसी उपदेशक ने नहीं दिये तो ऐसे उपदेशक को डैक का किराया। और वह भी पूरा नहीं दिया जाता। इससे प्रतीत होता है कि उपदेशक की इतनी भी कद्र नहीं कि उसे सैकिंड क्लास के लिये किराया भी दे दिया जाय। उत्सव की शान पर चाहें पांच सौ रुपया खर्च हो जाय तो कर लेंगे परन्तु उपदेशक को मार्ग व्यय देना भी कठिन प्रतीत होता है। मैंने यह बात इस

लिये लिखी है कि जो लोग भारत में यह विचार करते हैं कि विदेशों में प्रचार करने से मैं वहां की समाजों से धन कमा लाता हूं। समाजों की अवस्था को देखें तो प्रतीत होता है कि वे संस्था की पुजारी है। उपदेशकों का सत्कार करने वाली नहीं।

चूंकि मैंने संस्थाओं के लिये मांगना छोड़ दिया है इस लिये समाजें तो मार्ग व्यय देने को भी उद्यत नहीं होती।

हम २६ जनवरी को सांयकाल के समय दारासलाम पहुंच गये। उस समय स्त्री समाज का सतसंग था। मैंने उसमें जाकर व्याख्यान दिया। दारासलाम में हमारे जाने से पूर्व बैरा पुर्तगीज़ प्रान्त के आर्य भाइयों ने गवर्नर से हमारे लिये आज्ञा पत्र लेकर हमारे नाम दारासलाम में भेज दिया था और उनके कई प्रार्थना पत्र आये पड़े थे कि मैं वहां उनके पास अवश्य ठहर कर प्रचार करूं। उन बेचारे श्रद्धालु आर्यों ने १० पौण्ड के लगभग आज्ञा पत्र (परमिट) प्राप्त करने में व्यय किये। इस लिये हमने पहिले वहां जाने का निश्चय किया। ३१ जनवरी को जरमन जहाज़ जाने वाला था इस लिये हमने उसमें जाने का निश्चय किया। चार रात्रि यानि २७ जनवरी से ३० जनवरी तक प्रति दिन रात को मैं आर्य गर्ल स्कूल में कथा करता रहा। लोग बड़े प्रेम से आकर सुनते रहे और अत्यन्त प्रभावित हुये। आर्य समाज दारासलाम ने हमें बैरा तक तीसरे दर्जे का टिकट लेदिया। यह तीसरा दर्जा, सेकिण्ड क्लास के समान ही होता है इसमें हर प्रकार का आराम होता है। कोठरी मिलती है और खाना आदि जहाज की ओर से मिलता है। इस प्रकार हमने पूर्वी अफ्रीका का

भ्रमण और प्रचार ३१ जनवरी को समाप्त किया और अब पुर्तगीज अफ्रीका को रवाना हुये।

इस प्रकार जनवरी में २६ व्याख्यान दिये। तीन उत्सवों में सम्मिलित हुये और पाँच संस्कार कराये। कुल व्याख्यान पूर्वी अफ्रीका की यात्रा में ६५ हुये और पाँच संस्कार तथा चार उत्सव कराये। पूर्वी अफ्रीका की दूसरी यात्रा में कुल व्यय ५७०) रुपया हुआ इसमें से २७५ शिलिंग आर्य समाज कसोमो, ३५ शिलिंग मम्बासा, १०० शिलिंग आर्य समाज जन्जीबार और ३६५ शिलिंग आर्य समाज दारासलाम ने दिये कुल ७७५ शिलिंग अर्थात् ५५०) रुपये प्राप्त हुये। २०) रुपये अपने पास से व्यय किये।

दूसरा अध्याय

पुर्तगीज़ अफ्रीका में हमारा भ्रमण तथा प्रचार

पहला काण्ड

अफ्रीका में पुर्तगीज़ हकूमत

जनवरी १४१७ ई० में वास्कोडिगामा टैग्सन (पुर्तगाल) से भारत की खोज करने के लिये तीन जहाज लेकर रवाना हुआ और दक्षिणी अफ्रीका के मार्ग से उसने भारत आने का निश्चय किया । जब वह दक्षिणी अफ्रीका के सागर में पहूंचा तो उसे आशा लग गई कि वह ठीक मार्ग पर आ रहा है। वहां जल मार्ग तंग था उसे दुगना चौड़ा कर दिया और उसका नाम केप आफ़ गुड होप (Cape of good hope) रक्खा । तत्पश्चात् पूर्वी अफ्रीका के तट पर गुज़रता हुआ भारत पहुँचा । इस मार्ग का पता लगाने का यह परिणाम हुआ कि शनैः शनैः दक्षिणी अफ्रीका से लेकर मम्बासा, पूर्वी अफ्रीका के अन्त तक पुर्तगीजों ने अपना राज्याधिकार जमा लिया । जिस प्रकार अमरीका की खोज कोलम्बस के

करने पर पुर्तगीज़ों ने उस समय की तमाम अमरीका की आबादी पर अपना अधिकार जमा लिया था वैसे ही अफ्रीका में उन्होंने किया। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि पुर्तगीज़ लोग दीर्घदर्शी, पुरुषार्थी और बुद्धिमान न थे क्योंकि थोड़े ही समय में यूरोप की अन्य जातियों ने इन्हें भारत अमेरिका और अफ्रीका के राज्यों से वञ्चित कर दिये और अब बहुत थोड़ा प्रान्त इनका उपरोक्त देशों में रह गया है। इस समय अफ्रीका में अधिकतया अंग्रेजी राज्य है। पुर्तगीज़ों के अधिकार में पूर्वी अफ्रीका का एक भाग है जिसे पुर्तगीज़ पूर्वी अफ्रीका कहते हैं। इस भाग में तीन प्रान्त सम्मिलित हैं अर्थात मोज़म्बिक, बैरा और लारेन्स मारकुइस (इसका पहिला नाम डलगोआ बे था)। इन तीनों प्रान्तों का क्षेत्रफल ३ लाख वर्गमील के लगभग है।

मोज़म्बिक और लारेन्स मारकुइस में तो पुर्तगाल सरकार का राज्य है परन्तु बैरा का प्रान्त सरकार ने एक पुर्तगीज़ कम्पनी को ठेके पर दे रक्खा है जिसकी मियाद १९४२ ई० में समाप्त हो जावेगी। उस कम्पनी का नाम पुर्तगीज़ ओरियण्टल कम्पनी है। वह ऐसे ही राज्य करती है जैसे ईस्ट इण्डिया कम्पनी भारत में १८५७ से पूर्व राज्य करती थी। कम्पनी का अपना गवरनर है जो नियमपूर्वक प्रबन्ध शासन करता है। लारेन्स मारकुइस में गवरनर जनरल रहता है जो लारेन्स, बैरा और मौज़म्बिक तीनों प्रान्तों पर अपना अधिकार रखता है। मौज़म्बिक में अलग गवरनर रहता है जिसकी राजधानी का नाम भी मौज़म्बिक है। जैसे बम्बई प्रान्त का नाम भी है और शहर का नाम भी ऐसे ही मौज़म्बिक और लारेन्स मारकुइस शहरों के नाम हैं और देशों के नाम भी हैं।

गवरनर जनरल को पुर्तगाल की प्रजातंत्र (Republic) सरकार नियत करती है। ये तीनों देश पुर्तगाल सरकार के आधीन हैं।

पुर्तगीज़ पूर्वी अफ्रीका सरकार की विशेष बातें।

(१) यहां सबसे मुख्य बात यह है कि यहां वर्ण, वेष, धर्म और जाति का कोई भेद भाव नहीं है। सब जातियों और जनता के लिये समान अधिकार और समान राज्य नियम हैं। किसी जाति के लिये यहां रियायत या अनियमता नहीं है। सबके साथ अदालतों में, दफ्तरों में, अस्पतालों और स्कूलों में समान बर्ताव किया जाता है।

(२) पुर्तगीज़ राज्य अधिकारी न तो अनुभवी हैं न पुरुषार्थी और न उसमें बुद्धिमता ही है। इसलिये वह अपने देश को न तो अधिक आबाद करते हैं न उसकी उपजाऊ वस्तुओं से लाभ उठाते हैं। न वे धरती के गर्भ से रत्न, हीरे और कई अन्य प्रकार की वस्तुयें जो पृथ्वी में हैं, निकालते हैं। न किसी कम्पनी को ठेका देकर ही निकालने देते हैं। केवल एक स्थान पर एक अंग्रेज़ी कम्पनी ने तांबा निकालने का ठेका लिया हुआ है। अब किसी को ठेका देकर या स्वयं उद्यम और पुरुषार्थ करके ऐसी उत्तम भूमि से न तो लाभ उठाते हैं और न कृषि सम्बन्धी यत्न करके उसे आबाद करते या अधिक उपजाऊ वस्तुयें उत्पन्न करते हैं। इसलिये न तो यह प्रान्त बहुत आबाद हैं न ही पुर्तगीज़ सरकार को इन देशों से अधिक लाभ प्राप्त होता है।

(३) मूलनिवासी ही यहाँ ज्वार, मक्की आदि की कृषि करते

हैं और उसी पर अपना निर्वाह करते हैं। गन्ना और कई प्रकार की सब्ज़ियां भी यहां उत्पन्न होती हैं जिनसे जनता की आवश्यकतायें पूरी होती हैं।

(४) पुर्तगाल सरकार ने यहां सोने और चांदी का सिक्का बन्द कर दिया है। कुल सोना चांदी अपने देश में मंगा लिया है। अब दो पेंसे से ऊपर नोट ही नोट चलता है। ५ सेंट से लेकर सैंकड़ों पौंड तक नोट ही दिखाई देते हैं। अलबत्ता अंग्रेज़ी सिक्के शिलिङ्ग, फ़िलोरिन, हाफ क्राउन और क्राउन, शिलिङ्ग के मिल जाते हैं। यहां भिन्न २ जातियों के लोग आबाद हैं परंतु किसी को आज्ञा नहीं कि यहां से कोई रुपया अपने देश में भेजे या मनीआर्डर करा दे या साथ ले जावे। यदि किसी को कभी रुपया भेजना हो तो पहिले गवरनर महोदय को प्रार्थना पत्र भेजें। वह अपने हस्ताक्षर स्वीकारी के कर देवे फिर उसी देश के किसी बैंक से पत्र व्यौहार करे तब बड़ी कठिनाई से रूपया जा सकता है। तात्पर्य यह है कि यहाँ का धन बाहर न जाने पावे।

(५) यहां कस्टमड्यूटी भी बड़ी कड़ी है। ९ पैंस के जापानी जूते पर चार शिलिङ्ग ड्यूटी है। इस लिये यहां माल मंहगा बिकता है और निर्वाह में बहुत कठिनाई है अर्थात रहन सहन का व्यय अधिक होता है गवर्नमेंट से हर एक काम करने के लिये लाइसैन्स (आज्ञा पत्र) लेना पड़ता है। प्रत्येक लाइसैन्स की फ़ीस कम से दो पौंड मासिक है। जो भी काम करना हो चाहे नाई या धोबी या गलियों में सब्ज़ी बेचने या दुकान या व्यापार करने या किसी प्रकार की एजन्सी का सब पर लाइसेन्स फ़ीस

देनी पड़ती है। यहां तक कि दुकान पर बोर्ड लगाने का भी लाइसैन्स है और उस पर जो अक्षर लिखे जाते हैं उन पर भी टैक्स है। यहाँ पर कोई काम भी लाइसैन्स के बिना नहीं हो सकता। जो भी प्रार्थना पत्र दिया जावे उस पर भारी स्टाम्प लगता है। इस प्रकार प्रजा टैक्सों से दबी रहती है।

(६) जब से आर्थिक दशा खराब हो रही है और बेकारी बढ़ रही है तब से यहां पर प्रवेश करने के नियम कड़े कर दिये हैं। १९३२ ई० से तो एक प्रकार से आना जाना बन्द कर दिया गया केवल यात्री लोग तीन मास के लिये आ सकता है। उसे भी पहिले गवरनर से आज्ञा-पत्र (परमिट) लेना पड़ता है। जिस पर १० पौंड के लगभग खर्च हो जाता है। दूसरे फिर जहाज़ी कम्पनियों के पास ५०० पौंड नक़द अमानत रखना पड़ता है, या कोई प्रसिद्ध पुरुष जिसकी आमदनी बहुत अच्छी हो, या उसका रुपया बैंक में जमा हो या कोई फर्म जिसके कारोबार में पुर्तगीज़ प्रजा हो, ज़मानत ५०० पौंड की दे और फिर जहां जाना है वहां का कोई प्रसिद्ध पुरुष उसके सम्बन्ध में इक़रारनामा लिखदे कि यह हमारा आदमी है। तब कहीं इस देश की यात्रा और भ्रमण कर सकता है। यहां तक कि व्याख्यान देने के लिये भी पहिले आज्ञा लेनी पड़ती है।

(७) सरकार ने अब यह क़ानून बना दिया है कि हर एक फ़र्म या दुकान पर ७० फ़ीसदी नौकर पुर्तगीज़ प्रजा के लोग रक्खे जायं। जिस दुकान पर तीन नौकर हों उनमें दो पुर्तगीज़ प्रजा के हों। यदि कोई दुकानदार एक भारत निवासी नौकर रखना चाहे

तो पहिले दो पुर्तगीज़ प्रजा के आदमी नौकर रक्खे तब तीसरा आदमी हिन्दुस्तानी रख सकता है। इससे हिन्दुस्तानी लोगों को अपने कारोबार में बहुत हानि पहुंची है। इसके अतिरिक्त सरकार ने पौंड के नोट का मूल्य १३ रुपये और सुनहरी पौंड की क़ीमत १९ रुपये कर दी। इससे हिन्दुस्तानी व्यापारियों को सख्त नुक्सान पहुँचा। अब बहुत से हिन्दुस्तानी अपने देश को वापिस चले गये हैं। अब पुर्तगीज़ अफ्रीका में चार पांच हज़ार हिन्दुस्तानी हैं। पहिले दस हज़ार से भी अधिक थे। हिन्दुस्तानी लोग पुर्तगीज़ों के यहां प्रवेश करने से सहस्रों वर्ष पहिले से व्यापार करते चुनाचे वास्कोडिगामा का पथ दर्शक (Pilate) एक गुजराती भाई था जो मम्बासा से कालीकट का मार्ग दिखाने के लिये उसके साथ गया था। भारतीयों ने पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका को समृद्धिशाली बनाने में और यहां व्यापार का काम बढ़ाने में बहुत सराहनीय कार्य किया। जंगल को मंगल बना दिया। अफ्रीका के जंगली लोगों में जाकर व्यापार किया और जहाँ कहीं आठ दस झोंपड़ियाँ इन जंगली अफ्रीका निवासियों की हैं वहां भी एक न एक हिन्दुस्तानी विराजमान है। परन्तु भारतीयों के इतना पुरुषार्थ करने और इस देश को सरसब्ज़ और मालामाल करने पर भी अब उन्हें इन देशों से धक्के देकर बाहर निकाला जाता है और ऐसा तंग किया जाता है कि वह स्वयं ही इन देशों को त्यागकर चले जायं।

(८) लारेन्स मारकुइस का सिक्का, बैरा के सिक्के से भिन्न है। पुर्तगीज़ लोग अपनी भाषा बोलना गौरव समझते हैं हिन्दु-

स्तानियों को तरह नहीं कि अपनी भाषा को छोड़ कर अंग्रेजी में खत लिखना अभिमान समझने लगे हैं। दुकानों पर सुन्दरी लड़कियां सौदा बेचने के लिये यह लोग नौकर रखते हैं जो फ़ैशनेबिल लिबास में बैठती हैं जिससे लोगों को आकर्षित कर सकें। औरतों का लिबास विशेष प्रकार का होता है। अधिकतर काला वस्त्र पसन्द करती हैं। मकान दूर फासले पर होते हैं जो प्रायः एक मंजिला होते हैं। सब्जी बेचने वाले बन्द गाड़ियों में सब्ज़ी ले जाते हैं और बेचते हैं जिससे गर्द-गुबार सूखी सब्जियों पर न बैठने पावे। दुकानें नियत समय पर खुलती और बन्द होती हैं

दूसरा काण्ड

बैरा शहर का मनोरञ्जक वृत्तान्त

(१) यह प्रान्त मौज़म्बिक और लारेन्स मार्कुइस के मध्य में स्थित है जो पुर्तगीज़ औररिटयल कम्पनी के आधीन है वही उस के राज्य शासन का प्रबन्ध करती है। इस नगर की मनुष्य संख्या १० हज़ार है। यहां से रेलवे लाइन रोडेशिया और नियासा को जाती है। यहां से रेल के द्वारा दक्षिणी अफ्रीका में पहुँच सकते हैं। यह शहर नया बसा हुआ है। रोडेशिया और नियासा को तमाम तिजारती माल यहां से रेल द्वारा जाता है जो बैरा के बंदरगाह पर जहाज़ों के द्वारा उतरता है। इसलिये यह बंदरगाह बहुत

प्रसिद्ध है। यहाँपर सदैव जहाज आते जाते रहते हैं। पुर्तगीज कम्पनी ने बंदरगाह का हारबर भी नहीं बनवाया। इसे अंग्रेजों ने अपनी लागत पर तैयार कराया है। इसलिये जहाजों के ठहरने का किराया और माल उतरवाने पर जो महसूल लगता है यह सब लाभ अंग्रेज लोग उठा रहे हैं।

(२) चूंकि यह प्रान्त पुर्तगीजों का है इसलिये यहां जो भी हिन्दुस्तानी आये उनमें से अधिक गोआ, डामन, डयू के हैं जो हिन्दुस्तान में पुर्तगीजों के आधिपत्य में हैं। इनके अतिरिक्त गुजरात, काठियावाड़ के व्यापारी भी अधिक संख्या में हैं। गोआ के हिन्दुस्तानी लोग तो सब ईसाई हैं क्योंकि पुर्तगीज सरकार ने गोआ में लोगों को जबरन ईसाई बना लिया था। बाकी डामन और डयू के लोग हिन्दू धर्म पर दृढ़ हैं। गोआनी ईसाई भी अब तक जात पांत को मानते हैं। ब्राह्मण ईसाई अपने आपको दूसरे ईसाइयों से उत्तम और बड़ा समझते हैं अभी तक भारत की सभ्यता उनकी रगों में हरकत करती है और भारत की सभ्यता पर व्याख्यान कराते हैं। उन्हें सुनकर अत्यन्त प्रसन्न और प्रभावित होते हैं। इन सब हिन्दुस्तानियों की संख्या बैरा शहर में एक हजार के लगभग है।

(३) मुसलमानों ने यहां अपनी मसजिद बना ली है परन्तु हिन्दू लोगों ने जो इनसे संख्या में अधिक हैं और धनाढ्य भी हैं न अपना कोई मंदिर न भवन और न कोई संस्था बनाई है। गोआनी लोगों ने अपने क्लब और वाचनालय (रीडिंग रूम) बनाये

हुये हैं। परन्तु हिन्दू लोगों ने सिवाय धन कमाने के और कोई कार्य हाथ में नहीं लिया है।

(३) बैरा में अभी तमाम सड़कें पुख्ता नहीं हैं। मकान नये ढंग के हैं। उनमें सफ़ाई का अधिक ध्यान दिया जाता है। कोई हिन्दुस्तानी धोती पहन कर भ्रमण नहीं कर सकता। सब को पायजामा या पतलून पहनना पड़ता है। फैशन परस्ती प्रतिदिन बढ़ती जाती है। मोटरकार और लारियां आम तौर पर हैं। चूंकि यहीं से तमाम माल दक्षिण अफ्रीका जाता है इसलिये यहां व्यापार का काम अधिक है। नगर प्रतिदिन बढ़ता जाता है। यहां मासिक व्यय भी बहुत होता है। मज़दूरी बहुत कड़ी है। हमारे आर्य समाजी भाई मकान की चुनाई का काम करते हैं। वर्तमान समय में बेरोज़-गारी के कारण उन्हें दस शिलिङ्ग प्रतिदिन मिलते हैं परन्तु वह कहते हैं कि अच्छे दिनों में एक पौंड और २५ शिलिंग तक प्रति दिन मज़दूरी मिलती थी

(४) प्रत्येक मनुष्य पर एक पौंड वार्षिक टैक्स है और हर दुकान पर ५० पौंड वार्षिक लाइसैन्स की फ़ीस है। चाहे दुकान बड़े पैमाने पर हो चाहे छोटी सी हो, सबको बराबर टैक्स देना पड़ता है। ऐसे ही सब कारोबार के लिये, चाहे वह किसी पेशे का हो बहुत लाइसैन्स फ़ीस है। नाई को ९ पौंड व दर्ज़ी को ७ पौंड वार्षिक लाइसैन्स फ़ीस देनी पड़ती है। यहाँ भी सत्तर फ़ीसदी पुर्तगीज़ प्रजा को अपनी दुकान या कारोबार में नौकर रखने की शर्त है। जब कोई व्यक्ति यहांपर जहाज़ से उतरे और उसे यहां पर स्थाई रूप से रहना हो अर्थात् किसी दुकान का नौकर बनकर

आया हो तो १२ शिलिङ्ग यदि ३ मास के लिये यात्री बनकर आया हो तो तीन शिलिङ्ग सरकार बतौर टैक्स के लेती है। मैं पहिले भी लिख चुका हूं कि यहां उतरना भी बहुत कठिन है। हमारे आर्य भाइयों को हमारे उतारने के लिये दस पौंड व्यय करने पड़े।

(५) कस्टम ड्यूटी प्रत्येक वस्तु पर लगाई जाती है और बहुत कड़ी लगाई जाती है। नकटाई, पहिनने के कपड़े, पुस्तक आदि, लिफाफे तथा छपे हुये फ़ार्म सब पर टैक्स (चुंगी) देना पड़ता है। यदि माल कस्टम आफिस में रक्खें और फिर वहां से कोई चीज़ निकालें तो तीन शिलिंग चार्ज कर लेते हैं।

(६) कोई व्यक्ति गाय को अपने मकान में नहीं रख सकता। शहर से कुछ दूरी पर गाय रख सकते हैं। मुसलमानों ने दो डेयरी फ़ार्म बनाये हैं। गायों के रखने के अलग कमरे, बच्चा देने के अलग कमरे, बीमार गाय के इलाज के अलग, बीमार गाय के रखने के अलग, डाक्टर मवेशियान, दफ्तर, दवाईखाना सब ही के लिये अलग अलग कमरे हों तब डेयरी फ़ार्म का लाइसैन्स दिया जाता है। और फिर भी बड़ी सावधानी की जाती है कि कहीं मिलावट का दूध न बिक जाय। डाक्टर पहिले दूध की परीक्षा करता है। जब तक वह दूध को पास न करदे तब तक कोई नहीं बेच सकता।

(७) यहां भी भूमि गैर मज़रूआ (बिना आबाद हुई) बहुत पड़ी है। ज़मीन को आबाद करने पर बहुत व्यय करना पड़ता है। सरकारी मूल्य बहुत है और पानी सींचने का प्रबन्ध भी संतोष-

जनक नहीं है इसलिये कृषि से अधिक लाभ नहीं होता। मूलनिवासी ज्वार, बाजरा, मकी और चावल की खेती करते हैं और उसी पर अपना निर्वाह करते हैं। भारतीयों के लिये यहां कृषि करके लाभ उठाना कठिन है। केला, तरबूज़ आदि फल सब्ज़ियां उत्पन्न होती हैं। दूसरे फल दक्षिण अफ्रीका से यहां आकर बिकते हैं।

(८) रोमन कैथोलिक पादरियों ने यहां एक शिल्पकारी का स्कूल खोल रक्खा है जिसमें लड़कों को बढ़ई, दर्जी, लुहार और लकड़ी का काम सिखाया जाता है। यहांपर नस्ल या रङ्ग का भेद नहीं है और न सरकारी स्कूलों में कोई जाति भेद है। सब जातियों के बालक सम्मिलित रूप से स्कूल में शिक्षा पाते हैं प्रचलित भाषा पुर्तगीज़ है। कोई पक्षपात नहीं है। अलबत्ता हबशी लोगों के लिये औषधालय आदि पृथक हैं क्योंकि वह अभी जंगली लोग हैं इस लिये उनपर नियमों की कड़ी पाबन्दी नहीं है।

(९) हिन्दुस्तानी लोग सब व्यापार का काम करते हैं। गोआनी लोग नौकरी करते और कुछ दफ्तरों में नौकर हैं। यह लोग युरोपियन फैशन में रहते हैं। उनके रूप और फैशन से यह पता नहीं लगता कि ये लोग भारत के हैं या पुर्तगीज़ हैं। अंग्रेज़ी और गुजराती भाषा में बहुत निपुण हैं।

(१०) समुद्र के किनारे एक बन्द बनाया गया है जो दूर तक चला गया है। कहा जाता है कि संसार भर में ऐसा बन्द कहीं नहीं है। इस पर बैठने के स्थान बने हुये हैं जहां लोग बैठकर समुद्र की उत्तम वायु का आनन्द ले सकते हैं। युरोपियन लोग

दूर २ से इस स्थान को देखने और सैर करने के लिये यहां आते हैं। यहां भारत के विपरीत ऋतुयें होती हैं। जनवरी फ़रवरी के महीने गर्म और जून, जुलाई के महीने शीतकाल के होते हैं। यही दशा पुर्तगीज़ पूर्वी अफ्रीका में सब जगह पर है। बिजली और पंखे सब जगह लग गये हैं। रात्रि को बिजली की रोशनी होती है और दफ्तरों में बिजली के पंखे चलते हैं। गुजराती लोग सिर पर गांधी टोपी पहिनते हैं। यहांपर एक अखबार सप्ताह में दो बार निकलता है, इसका नाम बैरा न्यूज़ है।

(११) यहांपर कृषि का काम और सब्ज़ी बोने का काम चीनी लोग करते हैं। हिन्दुस्तानी लोग कृषि का काम नहीं करते।

(१२) वर्षा काल में अधिक वर्षा जनवरी व फ़र्वरी में होती है। लोग वर्षा का पानी पीते हैं। नलके का पानी खारी होता है। दुकानों पर खाने की वस्तुयें ढकी रहती हैं। बिना ढके कोई नहीं रख सकता। शनिवारको आधे दिन तथा रविवार को सारे दिन रहती हैं।

तोसरा काण्ड

बेरा आर्यसमाज का इतिहास और हमारा प्रचार

५ फ़र्वरी से २२ फ़र्वरी १९३४ तक

हम यहाँ ४ फ़र्वरी को रात्रि के ८ बजे पहुँचे। गुजराती भाई दिन के १२ बजे से प्रतीक्षा कर रहे थे। एक सौ के लगभग किनारे पर खड़े रहे परन्तु जहाज़ १२ बजे न आया। रात के आठ बजे पहुंचा। इसलिये बहुत से भाई निराश होकर ४ बजे तक प्रतीक्षा करके चले गये। रात के ८ बजे तीन आर्य भाई मोटर बोट में बैठ कर समुद्र में जहां जहाज़ खड़ा था आ गये और हमें उतार कर ले गये। हमारा सामान जहाज़ में रहा और हम उनके साथ मोटर बोट में बैठकर किनारे पहुँचे। वहां तोस चालीस गुजराती भाई सत्कार के लिये खड़े थे। पुष्प मालाओं से उन्होंने हमारा सत्कार किया। हमें सामाजिक भाई अपने स्थान पर ले गये। बड़े आराम से हमको उन्होंने अपने यहां ठहराया।

इस स्थान में आठ आर्य समाजी भाई मिलकर निवास करते हैं जो काठियावाड़ के ड्यू (देव) द्वीप के निवासी हैं। ये लोग मकान बनाने का काम करते हैं। ये सब आर्य हैं और बड़े प्रेमी पुरुषार्थी और आर्य समाज के भक्त हैं। इनके अतिरिक्त पांच और भी आर्य समाजी भाई हैं। कुल १२ आर्य समाजी हैं। यदि कोई

सेठ या धनाढ्य पुरुष सामाजिक कार्यों में सहानुभूति प्रगट नहीं करता तो भी इन लोगों ने जो धनाढ्य पुरुष नहीं है परन्तु उनके हृदय प्रेम और श्रद्धा से भरपूर हैं—समाज का कार्य चलाया हुआ है। तीन वर्ष से इन्होंने आर्य समाज खोला हुआ है। समाज मंदिर तो नहीं है परंतु ये लोग साप्ताहिक सत्संग अपने स्थान पर कर लेते हैं। देव द्वीप में भी उनके सम्बन्धियों और भाइयों ने आर्य समाज खोला हुआ है। अपना मंदिर भी उन्होंने बनाया हुआ है। वहां की हिन्दू जनता ने उनका विरोध किया हुआ है। यहां तक कि उनका बिरादरी से नाभिप्रवर्तन है। परन्तु उन्होंने इस बात की परवाह न करके अपने आपको धर्म पर दृढ़ बना लिया है। यहां भी गुजराती लोग उनसे विशेष संसर्ग में नहीं आते परन्तु ये लोग बड़ी श्रद्धा से सामाजिक कार्य करते हैं। संध्या, हवन आदि करते हैं। उनके पास सामाजिक साहित्य भी है जिसका वे अवलोकन करते हैं। गुजराती भाषा में सत्यार्थ प्रकाश व संस्कार विधि आदि पुस्तकें इनके पास हैं। यहाँ के हिन्दुस्तानी हिन्दी लिखना पढ़ना कम जानते हैं परन्तु हिन्दी भाषा को भली प्रकार से समझते हैं। समाज की नियमपूर्वक रजिस्ट्री नहीं हुई है। रजिस्ट्री कराने पर ४० पौंड व्यय होता है परन्तु यदि रजिस्ट्री हो जावे तो सरकार उनकी रक्षा की ज़िम्मेदार हो जाती है। जब तक मंदिर अपना न हो तब तक रजिस्ट्री कराने से कुछ लाभ नहीं है।

यहां अब तक कोई उपदेशक नहीं आया। १९२१ ई० में श्रीमती सरोजनी नायडू आई थीं जो दक्षिण अफ्रीका भारत जाते हुये एक दिन जहाज़ ठहरने के कारण यहाँ उतर गई थीं। उन्होंने

कुछ भाषण भी किया था। अब रजिस्ट्री न होने के कारण पब्लिक व्याख्यान कराने के लिये सरकार से आज्ञा लेनी पड़ती है और आज्ञा लेने पर दस शिलिंग व्यय हो जाता है। सरकार व्याख्यान में शांति रखने के लिये अपना एक सिपाही भेजती है। जिसका व्यय दस शिलिङ्ग फी घंटा चार्ज करती है। मेरे एक व्याख्यान पर जो एक घंटा २० मिनट हुआ सरकार ने १३॥ शिलिङ्ग सिपाही भेजने का व्यय चार्ज कर लिया। समाज के प्रधान मूलजी भाई और मंत्री कालीदास माधो जी भाई हैं।

हमारा प्रचार—

५ फर्वरी से हमारा प्रचार प्रारम्भ हुआ। पहिले रात्रि को सेठ वृन्दावन की दुकान पर व्याख्यान का प्रबंध कराया गया क्योंकि अभी तक सरकार से पब्लिक व्याख्यान की आज्ञा न मिली थी। मैंने अमेरिका में भारत की सभ्यता पर एक घंटे और श्रीराम भारती ने आध घंटे तक धर्म की महिमा पर व्याख्यान दिया। दूसरे दिन युरोपियन एसोसियेशन में मेरा व्याख्यान कराया क्योंकि अब आज्ञा मिल गई थी। ७ फर्वरी को इण्डो-पुर्तगीज़ क्लब में मेरा व्याख्यान अंग्रेज़ी भाषा में 'भारत की संस्कृति' पर हुआ। मिस्टर रैगो प्रेजीडेण्ट सभा ने प्रधान पद स्वीकार किया। इसमें गोआनी लोग अधिक संख्या में उपस्थित थे। सारा हाल अन्दर बाहर से जनता से भरपूर था। लोगों ने व्याख्यान को बहुत पसंद किया।

ता० ८, ९ फर्वरी को उसी भवन में सवा २ घंटे मैंने जापान की उन्नति पर व्याख्यान दिये और आध घंटा प्रतिदिन श्रीराम

भारती भाषण देता रहा। मैं ४५ मिनट तक हिन्दी में और आध घंटा अंग्रेजी में बोलता था जिससे गोआनी लोग भी लाभ उठा सकें। भीड़ बहुत होती थी। जनता व्याख्यानों से अत्यन्त प्रभावित होती थी। १० फ़र्वरी को फिर प्राइवेट दुकान पर व्याख्यान हुआ। हिन्दू मुसलमान सभी इन व्याख्यानों में सम्मिलित होते रहे। ११ फ़र्वरी को रविवार था। प्रातःकाल मिलकर हवन, यज्ञ किया गया और प्रार्थना व भजन हुये। शाम को साढ़े तीन बजे से साढ़े पांच बजे तक दुकान पर मेरा और श्रीराम भारती का भाषण हुआ। मेरे व्याख्यान का विषय 'आर्य समाज ने विदेशों में हिन्दू जाति की किस प्रकार रक्षा की है' था। जनता ने इसे बहुत पसंद किया।

ता० १२ फ़र्वरी को शिवरात्री का दिन था। आर्य समाजी भाइयों ने अपना काम बन्द करके पहिले वृहद् हवन किया। रात्रि को हवन के पश्चात् प्रार्थना की और यज्ञ की महिमा पर मैंने उप-देश किया। आध घण्टा शंका समाधान के लिये समय दिया गया। जनता की शंकाओं को निवारण किया गया। रात्रि को ८ बजे से १० बजे तक श्रीराम भारती और मैंने स्वामी दयानन्द के जीवन और मिशन पर व्याख्यान दिये। आध घण्टा जनता को शंका समाधान के लिये समय दिया गया। लोग इन व्याख्यानों से अत्यन्त प्रसन्न और प्रभावित हुये। १३, १४, १५ फ़र्वरी को भगवान कृष्ण की बांसुरी अर्थात् गीता के उपदेशों पर मेरे व्याख्यान हुये। पहिले आध घण्टा श्रीराम भारती अपने विषय पर भाषण करता और फिर एक घण्टा मेरा भाषण होता था। जनता बड़ी प्रसन्न होती रही।

१६ फ़र्वरी को महाभारत की शिक्षा पर और १७ फ़र्वरी को वेद के महत्व पर व्याख्यान हुये। १८ फ़र्वरी को काळजी भाई ने अपनी दुकान पर हवन कराया। यहां पर जनता अच्छी संख्या में उपस्थित होगई। मैंने यहां यज्ञ के महत्व पर व्याख्यान दिया और जनता की शंका समाधान के लिये समय दिया। यह यज्ञ ८ बजे से ११ बजे तक जारी रहा। रात को वैदिक धर्म की विशेषताओं पर मैंने व्याख्यान दिया जिससे जनता बहुत प्रभावित हुई। १९ और २० फ़र्वरी का रामायण की शिक्षा पर व्याख्यान दिये जो जनता ने बहुत पसंद किये।

२१ फ़र्वरी को इण्डो पुर्तगीज़ इन्सटीट्यूट के हाल में मिस्टर ऐ० फ़रनानडूज़ प्रेजीडेण्ट व डाइरेक्टर गोआनी रीडिङ्ग क्लब ने अंग्रेजी लैक्चर का प्रबन्ध किया और पुर्तगीज़ भाषा में निमंत्रण पत्र छपवाकर पुर्तगीज़ लोगों में तक़सीम किये और आनरेबिल लैफ्टीनेण्ट कर्नल एबिल डी सोजा मोइनड़ो कमाण्डर को प्रधान बनाने का प्रबन्ध किया गया। चुनाचे रात को कमाण्डर साहब के अतिरिक्त हिज़ एक्सीलैन्सी दी गवरनर बैरा प्रेजीडेण्ट म्यूनिसिपल टाउन, मि० ऐ० फ़रनानडूज़ डाइरेक्टर क्लब और मिस्टर रैगो प्रेजीडेण्ट ऐसोसियेशन और अन्य कई भद्र पुरुष पुर्तगीज़, गोआनी और हिन्दुस्तानी विराजमान थे। लैक्चर ९ बजे से १० बजे तक हुआ। तमाम जनता ने व्याख्यान को पसंद किया। अन्त में प्रधान ने व्याख्यान दाता का समस्त जनता की ओर से धन्यवाद किया और समस्त श्रोतागण बड़े आनन्द व शांति के साथ विसर्जित हुये। समाचार पत्र नोटेशिया दी बैरा ने अपने पत्र

तिथि २२ फ़र्वरी में निम्नलिखित लेख मुद्रित किया।

२२ फ़र्वरी को हमारा अन्तिम भाषण शहर में पिछले भाग में हुआ। जहां कि पहिले भी व्याख्यान होते रहते थे। श्रीराम भारती और मेरे व्याख्यान के पश्चात् मंत्री आर्य समाज, जग्गो भाई, प्रधान और कई महाशयों ने हमारे शुभागमन तथा अति उत्तम प्रचार और इसके प्रभाव के सम्बंध में भाषण किये और हमारा धन्यवाद करते हुये सब ने प्रसन्नता प्रगट की।

लारैन्स मारकुइस को भारत सभा की ओर से दो तार और तीन पत्र निमंत्रण के रूप में आ चुके थे। वह लोग हमारे आगमन के लिये बहुत उत्सुक थे। इसलिये हमने उचित समझा था कि डरबन जाने से पहिले लारैन्स मारकुइस में दस पंद्रह दिन प्रचार करें। इस लिये सामाजिक भाइयों ने हमारे लिये लारैन्स मारकुइस का जहाज़ी टिकट लिया। २३ फ़र्वरी को सामाजिक भाई अपने काम पर भी न गये। हमारे कारण उन्होंने आर्थिक हानि भी उठाई। बड़े प्रेम और सत्कार से तीन बजे हमें मोटर पर बिठाकर जहाज़ पर पहुँचाने आये। फूलों के हार से रात और दिन सन्मान करते रहे। जहाज़ वहाँ से ४॥ बजे रवाना होता था परन्तु ५॥ बजे रवाना हुआ। उस समय तक सत्तर अस्सी गुजराती भाई जहाज़ के किनारे हमारे लिये खड़े रहे। जब जहाज़ रवाना हुआ तब सब लोग प्रसन्नता में भरे हुये रूमाल हिलाते हुये वापिस गये।

बैरा के सामाजिक भाइयों ने अत्यन्त प्रेम और श्रद्धा प्रगट की इस प्रचार पर उन्होंने लगभग ३ पौंड अर्थात् चार सौ रु०

खर्च किये और जनता पर आर्य समाज के महत्व और वैदिकधर्म के गौरव का प्रभाव डाल दिया। १९ व्याख्यान मेरे तथा १३ व्याख्यान श्रीराम भारती के इस नगर में हुये। इस प्रकार यहाँ प्रचार समाप्त करके हम लारेन्स मारकुइस को रवाना हुये।

Notecea De Beira 22. 2. 1934
(Translated)

Lecture by Swami Mehta Jaimini.

At the request of the Oriental Club's Chairman Mr. Rego Mehta Jaimini held a lecture in the hall of Centro Recreutivo Indo Portugese last evening. Col. Abel de Sauza Commandante was in the chair. Captain Suenhone, the President Town council, and the Private Secretary to His Excellency the Governor; A. C. Fernandes Chairman of Board and many other distinguished Portugese officers were also present.

The speaker dealt with the subject of Indian culture demonstrating his views with hundred quotations from European Scholars. His vast all-round knowledge, upto date solid material information and gigantic memory were admired by the hearers. His yellow costume, saintly appearance, simple but stead fast speech attracted the audience.

At the conclusion of the lecture the commandent Abel de Sauza expressed his thanks to the speaker and congratulated all the Indians Portugese for having opportunity to listen to the learned lecturer.

बेरा अखबार से उद्धृत

स्वामी महता जैमिनी का व्याख्यान

अर्थात्–ओरियण्टल क्लब के प्रधान मिस्टर रैगो की प्रार्थना पर पुर्तगीज़ हाल में स्वामी महता जैमिनी ने कल रात को एक व्याख्यान भारत की सभ्यता पर दिया। कर्नेल एबिल सेनापति ने प्रधान पद को स्वीकार किया। उसके साथ चीफ सेक्रेटरी गवर्नर महोदय, प्रधान टाउन कौन्सिल तथा अन्य राज्य अधिकारी विराजमान थे। हाल जनता से खचाखच भरपूर था। व्याख्यान दाता ने भारत की सभ्यता और संस्कृति पर अपना व्याख्यान अति उत्तमता से दिया और पश्चिमी विद्वानों के अनेक उद्धरण प्रगट किये। उसका महत्वपूर्ण ज्ञान, वर्तमान समय का सब विषयों पर परिचय और आश्चर्य-जनक स्मरण शक्ति ने श्रोतागण को चकित कर दिया। उसका पीले रंग का लिबास, संतों जैसा रूप, सरल भाषण, मधुर वाणी ने श्रोतागण को मोहित कर लिया। व्याख्यान की समाप्ति पर कर्नेल एबिल डी० सोज़ा ने व्याख्यान दाता और श्रोतागण का धन्यवाद किया कि उन्हें ऐसा विद्वत पूर्ण व्याख्यान सुनने का अवसर मिला।

चौथा काण्ड

बैरा से लारैन्स मारकुइस की यात्रा

जहाज़ में सवार होने से पहिले मैंने अपना पीला लम्बा चोग़ा पहिन लिया था और हाथ में लम्बा डण्डा था। यह जहाज़ जर्मन का था इसलिये इसमें अधिकतया जर्मन यात्री ही थे। जर्मन लोग मेरे लिबास और भेष को देखकर मेरी ओर ताकते रहते और मैं उनके आश्चर्य का निशाना बना हुआ था। हमारे अतिरिक्त तीन भारतीय यात्री भी थे। महाशय नत्थूराम, चौथराम फ़र्म का मैनेजर जो बैरा से सवार हुआ था और दो भाई मौज़म्बिक़ से लारैन्स मारकुइस के लिये सवार थे बाक़ी सब जर्मन व गोरे थे। रात को जर्मन लोग बहुत उम्दा सितार बजाते थे। उसमें हम भी सम्मिलित होते थे। खाने के लिये मटर, गोभी, आलू, शाक, गाजर, दलिया चावल, दूध, मक्खन और फल मिलते थे।

दो दिन तक समुद्र शान्त रहा। हमारी कोठरी में बिजली का पंखा दिन रात चलता रहता था क्योंकि गर्मी बहुत पड़ती थी। हमने समय हंसने, खेलने और जर्मनों के गाने बजाने को सुनने में व्यतीत किया। तीसरे दिन जहाज़ को १२ बजे पहुंचना था। परन्तु प्रातःकाल होने से पहिले ही तेज़ हवा चलने लगी। समुद्र ठाठें मारने लगा। इसलिये जहाज़ भी खूब डगमगाने लगा। मेरे साथी तो सारे दिन बिना खाये पीये लेटे रहे। तूफ़ान के कारण जहाज़ को विलम्ब हो गया। रात्रि के ९॥ बजे लारैन्स मारकुइस

पहुँचा मैंने तो बराबर तीनों समय खाया और जहाज़ पर टहलता भी रहा परन्तु दूसरे सब लोग तूफ़ान के भय से अपनी कोठरियों से बाहर न निकलते थे। मस्तिष्क चकरा जाता था। युरोप की जातियां चाहे ईसाई धर्म से घृणा करने लगी हों परन्तु फिर भी उनके अन्दर पादरी का बड़ा सन्मान है। मेरे लिबास से यह लोग मुझे पादरी समझते।

मैं प्रातःकाल उठकर जहाज़ के तख्ते (डैक) पर टहलता था। चूंकि जर्मन लोग भी प्रातः उठने के अभ्यासी हैं इसलिये कितने ही जर्मन पुरुष व स्त्रियां टहलने के लिये निकलते और मुझे बड़े नम्र भाव से झुककर सत्कार करते थे। हमारे देश में तो अबतक उपदेशक का कोई सन्मान नहीं। उनको कुली और दास समझकर उनसे भद्दा बर्ताव किया जाता है। उन्हें भोजन खिलाना भी कठिन समझते हैं। परन्तु विदेशों में अब भी उपदेशक का सन्मान है।

जहाज़ चूंकि रात को पहुँचा इस लिये ऐमीग्रेशन आफ़ीसर और डाक्टर इतनी देर रात को न आ सकते थे। वर्षा भी होरही थी इसलिये जहाज को किनारे से १५० गज की दूरी पर समुद्र में खड़ा कर दिया गया। पुलिस आफ़ीसर जहाज़ पर मोटर बोट के द्वारा आ गया जिससे कि कोई कूद कर जहाज़ से निकलकर भाग न जावे। प्रातःकाल ६ बजे ऐमीग्रेशन आफ़ीसर और डाक्टर जहाज़ पर आ गये। हमारे पास्पोर्ट देखे और अपने कब्जे में कर लिये और कहा गया कि आप यहां नहीं उतर सकते, आपके पास यहां के गवर्नर जनरल का परमिट (आज्ञा-पत्र) नहीं है। हमने कहा कि हम वास्तव में दक्षिण अफ्रीका जा रहे हैं। यहाँ के गुज-

राती भाइयों ने हमें तार द्वारा उतरने के लिये निमंत्रण भेजा था इस लिये जहाज़ी कम्पनी ने हमें टिकट जारी कर दिये और बैरा के आफ़ीसर ने हमारे पास्पोर्ट पर इन्दराज भी कर दिया है। हमने तार दिखाये और दक्षिण अफ्रीका की सरकार का आज्ञा-पत्र भी परन्तु ऐमीग्रेशन आफ़ीसर न माना और हमें न उतरने दिया।

इतने ही में भारत सभा के कई सभासद और मिस्टरवर्मा जहाज़ पर आ गये। उन्होंने खूब दौड़ धूप शुरु की और ऐमीग्रेशन आफ़ीसर, गवर्नर महोदय और अधिकारियों से जाकर मिले। दक्षिणी अफ्रीका की सरकार से टेलीफून द्वारा पूछा गया। अंत में बड़े यत्न और पुरुषार्थ करने से हमारे भाइयों ने पौने तीन बजे हमारे उतरने की आज्ञा प्राप्त कर ली। जो लोग भारत में विजली के पंखों के नीचे बैठे हुये केवल कटाक्ष करना ही जानते हैं, जब घर से निकल कर विदेशों में क़दम रक्खें तो उन्हें पता लगेगा कि देश यात्रा में कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और कितनी वाधायें मार्ग में आती हैं। यदि हमें आज्ञा न मिलती तो यह जहाज़ जर्मनी जा रहा था और जर्मनी से लौट कर फिर डरबन आता। इस प्रकार हमें जर्मनी लेजाकर फिर लौटकर जहां से चले थे वहां हमें छोड़ता। हमसे या हमारे ज़मानतियों से हमारा कुल किराया वसूल करता और डेढ़ मास तक हम जहाज़ में बैठे हुये धक्के खाते रहते। परंतु ईश्वर की कृपा से हमें उतरना प्राप्त हो गया। हमें भारत सभा के भाई मोटर में बिठाकर लाये और भारत सभा के सामने भवन में हमें ठहराया गया। इस प्रकार इस जहाज़ी यात्रा की समाप्ति हुई।

पांचवाँ काण्ड

लारैन्स मारकुइस का मनोरञ्जक वृत्तान्त

पहिले इस देश का नाम डलगोआ था परंतु अब छः वर्ष से पुर्तगीज सरकार ने उसका गवर्नर जनरल के नाम पर जिसने इसे आबाद किया था इसका नाम लारैन्स मारकुइस रख दिया है। यह शहर बहुत सुन्दर और विशाल है। सड़कें पक्की और चौड़ी (कुशादा) हैं। बाजार भी बहुत उम्दा और चौड़े हैं। बाजार में ट्रामकारें भी चलती हैं। मोटर, लारियां, बस दिन रात शपाशप दौड़ती हैं। कुल अफ्रीका में डरबन से दूसरे दर्जे पर शहर है। यहां बैरा की अपेक्षा गर्मी बहुत कम थी। मार्च का मास प्रतीत होता है। अब सर्दी का आरम्भ है। मई, जून, जुलाई शीत ऋतु के हैं। यहाँ की मनुष्य संख्या चालीस हजार है जिसमें १२ हजार पुर्तगीज, दो हजार अन्य गोरे, एक हजार भारतीय, १३०० गोआनी लोग और बाक़ी सब मूल निवासी हैं। दो तीन पंजाबी बाक़ी सब गुजरात, काठियावाड़, डामन, देव और गोआ के लोग हैं।

हिन्दुस्तानी भाई व्यापार और सब्जी फल बेचने का काम करते हैं। गोआनी लोग नौकरी पेशा करते हैं और बैरिस्टर डाक्टर भी हैं। कई भारतीय दुकानदार धनाढ्य और समृद्धिशाली हैं। यद्यपि यहां चार सभायें हैं अर्थात् हिन्दू एसोसियेशन, भारत सभा, चेम्बर आफ़ कामर्स, इण्डो युनियन। परन्तु सच पूछिये तो हिंदुओं में कोई संगठन नहीं। सब अपने अपने कामों में मस्त हैं, स्वार्थ

के पुतले हैं, मिस्टर वर्मा के पुरुषार्थ से यहां भारत सभा की स्थापना की गई है जो दो वर्ष से जारी है। इसके उद्देश्य और नियम वही हैं जो आर्य समाज के हैं केवल नाम मात्र का ही भेद है। कई विशेष कारणों से यह नाम रक्खा गया है। यह रजिस्टी हुई सभा है। इसके आधीन एक पाठशाला है जिसमें ३० बालक और बालिकायें शिक्षा पा रहे हैं। इन्हें गुजराती भाषा और धार्मिक शिक्षा दी जाती है। दूसरी रात्रि पाठशाला है इसमें भी कुछ धार्मिक शिक्षा दी जाती है तीसरी बाय स्काउट है जिसमें नवयुवकों को व्यायाम करना और खेल कूद करना सिखाया जाता है। हिन्दू एसोसियेशन ने व्यायामशाला खोली हुई है और एक पाठशाला भी है जिसमें १५ बालक शिक्षा पाते हैं। यदि ये दोनों पाठशालायें मिल जावें तो बहुत से समय और खर्चे की बचत हो जाये परंतु शोक है कि हिंदू जाति में संगठन नहीं। इतने दूर देशों में भी आ कर येदोनों सभायें ढाई चावल की खिचड़ी अलग अलग पका रही हैं।

चैम्बर आफ़ कामर्स में हिन्द मुसलमान दोनों सम्मिलित हैं। व्यापार और भारतीयों की उन्नति के सम्बन्ध में इकट्ठा हुआ करता है। यहां वस्तुयें बहुत मंहगी हैं क्योंकि कस्टम ड्यूटी (चुंगी) बहुत है। दूध और फलों की बहुतायत है जो दक्षिण अफ्रीका से आते हैं। मौसिम खुशगवार और हृदय को प्रिय लगने वाला है पुर्तगीज़ सरकार अभी सभ्यता, संस्कृति और शिक्षा में बहुत पीछे है। इसलिये यहाँ क़ानून की कड़ी पाबन्दी नहीं है। रिश्वत बहुत चलती है। उन्नति के साधन उपयोग में नहीं लाये जाते। सब

कार्यवाही पुर्तगीज़ भाषा में होती है। भारतीय लोग चाहे चिर-काल से भारत से पृथक होकर यहां अपना निर्वाह कर रहे हैं परंतु फिर भी भारतीय सभ्यता और भारत माता से प्रेम रखते है। मिस्टर वर्मा अत्यन्त पुरुषार्थी, देश भक्त और सज्जन पुरुष है। अपना अधिक समय पबलिक कामों और जाति सेवा के अर्पण करता है। यहां कोई आदमी डाक्टरी या बैरिस्टरी का काम नहीं कर सकता जब तक कि ओज़बन यूनिवर्सिटी की डिग्री प्राप्त करके न आया हो। सालेमंगा में जो लारैन्स मारकुइस से ६० मील पर है गुजराती लोगों ने एक मंदिर ८०० पौंड की लागत से बनवाया हुवा है जिसमें एक पुजारी को बिठाया हुआ है परंतु लारैन्स मार-कुइस में जहां एक हज़ार के लगभग हिन्दुस्तानी आबाद हैं और धनाढ्य हैं कोई, मन्दिर, मुसाफिरखाना या व्याख्यान देने या मिलकर बैठने का भवन नहीं है। मुसलमान जहाँ भी दो तीन दर्जन हों झट से मसजिद खड़ी कर लेते हैं।

मूल निवासी चोरी करना नहीं जानते। उनमें व्यभिचार भी बहुत कम है। लेकिन शराब पीने में पुर्तगीज़ को भी मात कर दिया है। पहिले इनमें नशा पीना कोई न जानता था परंतु पुर्तगीज़ों ने अपनी आमदनी बढ़ाने के लिये उनमें नशा पीने की ऐसी आदत डाली कि उनको नशे में लिप्त कर दिया। यह लोग एक परमात्मा को मानते हैं। उनके सिद्धान्त कुछ नहीं परंतु सदाचार में अब भी सभ्य जातियों की अपेक्षा अच्छे हैं। यह लोग कृषि पर निर्वाह करते है। अधिक लोग दक्षिण अफ्रीका और रोडेशिया में जाते हैं। वहां सोने चांदी की खानों में मज़दूरी करके रुपया कमा लाते

हैं और अपने देश में आकर व्यय कर देते हैं। परंतु अब दक्षिण अफ्रीका की सरकार उनके लिये द्वार बन्द कर रही है। इस लिये यहां भी बेरोज़गारी और आर्थिक दुर्दशा दिन प्रति दिन अधिक हो गई है।

मूल निवासियों के अपने राजा भी हुआ करते हैं। यह राजा हमारे यहां के ठाकुर या बड़े जमींदार के समान होता है। उनके ऊपर एक महाराजा होता है। ये लोग अपनी प्रजा से एक पौंड वार्षिक लेते हैं। सादा लिबास में रहते हैं। उस पर कोई अत्याचार नहीं करते। उनके साथ समानता से खाते पीते हैं परन्तु उनकी प्रजा ने उनकी आज्ञा पालन करने में तत्पर रहती है। जब हमें सालेमंगा में सेठ मगनलाल ले गया तो वहां एक राजा जिसका नाम वचीको था हमें अपने मंत्री सहित आकर मिला। वह बड़े प्रेम से वार्तालाप करता रहा। अन्त में एक किशोरिन हमें भेंट किया जिसे मगनलाल के कहने पर हमने स्वीकार कर लिया।

यहां भी सोने चांदी की खानें हैं परन्तु पुर्तगीज सरकार उन की खुदाई का काम नहीं करती। भारतीय लोग पुर्तगीज अफ्रीका में सब जगह जंगलों में पाये जाते हैं इस लिये सर जान कर्क ने यथार्थ लिखा है जहाँ गोरे लोग नहीं पहुंच सकते या मूलनिवासियों में व्यापार नहीं कर सकते वहां भी भारतीयों ने अपनी जान जोखों में डालकर व्यापार जारी कर रक्खा है और मूल निवासियों में अपना विश्वास ऐसा जमाया है कि वह उनका सन्मान करते हैं और उनपर पूरा विश्वास रखते हैं। लुइस मारकुइस में एक बड़ा सुन्दर बाग़ भी है। दो समाचार पत्र भी निकलते हैं। एक का

नाम नोटेशिया है जो पुर्तगीज भाषा में है और दूसरा गार्डियन है जो आधा पुर्तगीज भाषा में और आधा अंग्रेज़ी भाषा में है।

छटा काण्ड

लारैन्स मारकुइस में हमारा प्रचार

२६ फ़र्वरी से ११ मार्च तक

२६ फ़र्वरी को हम तीन बजे यहाँ उतरे और रात को ७॥ बजे व्याख्यान का विज्ञापन किया गया। मेरा पहिला व्याख्यान "भारत की सभ्यता का प्रभाव अमेरिका में" इस विषय पर भारत सभा के भवन में हुआ। हाल में जनता समा न सकती थी। जनता बहुत प्रसन्न हुई। २७ फ़र्वरी को चैम्बर आफ़ कामर्स के हाल में भारतीयों की बिदेशों में अवस्था पर व्याख्यान हुआ। वहां जनता बहुत अधिक थी। हिन्दू मुसलमान सब सम्मिलित थे। बहुत प्रभावित और प्रसन्न हुये। २८ फ़र्वरी को भारत सभा के आँगन में सभा बुलाई गई। शाम क ३॥ बजे बड़ी भारी भीड़ हिन्दू मुसलमान दोनों की एकत्र हुई। सेठ कल्यान भाई हीरालाल प्रधान सभा नियत हुये। इस सभा में मैंने भारत के भूकम्प और पटना बिहार की जनता की दुर्दशा का चित्र खींचा और वहाँ पर धन भेजने की अपील की।

यहां पर लोग पहिले से दान करने के अभ्यासी नहीं थे क्योंकि वहां कभी कोई उपदेशक नहीं आया था। फिर भी उसी समय

२२५ पौंड एकत्रित हो गये । मिस्टर वर्मा ने कहा कि मैं ५०० पौंड एकत्रित करके बाबू राजेन्द्र प्रसाद को पटना भेज दूंगा । हमारी मौजूदगी में ३०० पौंड से ऊपर हो चुका था । वर्मा महाशय ही पुरुषार्थ से यह कार्य कर रहे हैं । जनता पर इस अपील का बड़ा प्रभाव पड़ा । पहली व दूसरी मार्च को भारत सभा में भगवान कृष्ण की बंसरी पर व्याख्यान दिया जिसमें मैंने बताया कि भगवान् कृष्ण ने प्रेम, संगठन, सेवा भाव, कर्म मार्ग और ज्ञान की बांसुरी बजाई थी । लोग इन व्याख्यानों से अत्यन्त प्रभावित हुये और प्रसन्न हुये । श्रोतागण भवन में नहीं समा पाये । बाहर भी खड़े रहते थे । इसके अतिरिक्त वहां पर और कोई बड़ा स्थान नहीं मिलता था ।

ता० ३ मार्च को मेरा व्याख्यान अंग्रेजी में इण्डो यूनीयन अल्टोमाही में हुआ । डाक्टर क्राडियो जार्ज एल एल० डा० बैरिस्टर ने सभापति का आसन ग्रहण किया । यह व्याख्यान डेढ़ घण्टे तक भारत की संस्कृति और सभ्यता पर हुआ । इसमें पुर्तगीज़ लोग भी थे । जनता इस व्याख्यान से बहुत प्रभावित और प्रसन्न हुई । चुनाचे गार्डियन समाचार पत्र ने अपने ६ मार्च के अङ्क में निम्न लिखित लेख मुद्रित किया ।

Lawrence Marquis Guardian 6 3. 1934.

INDIAN CULTURE.

Lecture by an Indian Savant.

To a crowded audience on Saturday night in the hall of the Indian Union, Alto Mahe, Pundit

J. D. Mehta, who is on a lecturing tour from India and is on his way to the Union, gave a lecture on "Indian Culture." Dr. Claudio Jorge presided and was supported by Mr. Francisco Dias.

Dr. Mehta began by criticising some of those who, after an incredibly short acquaintance with the country or its people, had dared to "write a book" on India. India, he said, had suffered a great deal from that kind of exponent. (Hear, hear.)

He then passed on to quote from world-renowned philosophers who had steeped themselves in Indian lore before putting pen to appear and who were unanimous in declaring that philosophy as we knew it to-day had its birth in India, whereto went even the ancient Greeks.

India, he proceeded, was the home of brotherly love in the truest sense of the world. They heard of brotherhoods elsewhere, but the claims made by the promotors were false for they failed entirely when it came to questions of colour. He had particularly in mind the brotherhoods of America, one of whose conferences

he had attended; and in spite of all their claims, the fact remained that the Lord Jesus Christ would be unable to go among them unless he could get within the Asiatic quota !

Concluding, he said, that India had been the isnpiration of philosophy in the past and would in the future become the inspiration of the whole world. (Applause.)

At the close of the lecture, Miss Ana Aurora Fernandes, daughter of Mr. and Mrs. Miguel Fernandes, presented Dr. Mehta with a bouquet of flowers; and the cordial thanks of the audience were extended to him, both in Portuguese and English, by the chairman.

एक हिन्दुस्तानी महात्मा का व्याख्यान

६ मार्च गार्डियन समाचार पत्र लारैन्स मारकुइस

शनिवार की रात को इण्डो यूनीयन आल्टोमाही हाल में बड़ी भारी उपस्थिति के सामने महता जैमिनी ने जो भारत से व्याख्यान देने के लिये यात्रा कर रहा है और अब दक्षिणी अफ्रीका को जा रहा है—भारत की संस्कृति पर व्याख्यान दिया। डाक्टर क्लाउड जार्ज ने प्रधान पद को स्वीकार किया। डाक्टर महता ने पहिले उन कटाक्षों का समाधान किया जो अमेरिका और युरोप के यात्रियों

ने भारत में थोड़े समय ठहर कर, थोड़ी सी जानकारी पर पुस्तक छाप दी है और इस प्रकार भारत को अत्यन्त हानि पहुँचाई है (करतल ध्वनि)।

तत्पश्चात् आपने जगत प्रसिद्ध तत्व ज्ञानियों के प्रमाण उपस्थित किये जिन्हों ने कि चिरकाल तक भारत के ज्ञान और विद्या का स्वाध्याय किया और उसके बाद अपनी सम्मति को पुस्तकाकार में उपस्थित किया। सब ने सम्मति दी है कि युनान और संसार भर में फ़िलासफ़ी भारत से ही पहुंची है। फिर आपने बताया कि भारत मनुष्य मात्र से प्रेम करने का केन्द्र स्थान था। अमेरिका में भ्रातृ-सभा में आप सम्मिलित हुये और वहां स्पष्ट कहा कि आप की यह सभा मिथ्या है जबकि आपने एशिया के लोगों के प्रवेश का फाटक बंद कर दिया है। बल्कि अब तो आपके देश में आपके क़ानून अनुसार हज़रत ईसा, जिसे आप अपना पैग़म्बर मानते हैं- नहीं आ सकता क्योंकि वह एशिया का निवासी है।

अन्त में आपने कहा कि भारत ही ने तमाम संसार को सभ्यता, संस्कृति और तत्व ज्ञान दिया और अब भी वह संसार भर की तृष्णा अपने ज्ञान से ही मिटावेगा। (करतल व हर्ष ध्वनि) व्याख्यान की समाप्ति पर मिस्टर ऐना औरोराफ़रनाइड्ज़ जो मिस्टर मिगवल फ़रनाइड्ज़ की पुत्री है, फूलों का गुलदस्ता महता जी की भेंट किया। प्रधान ने पुर्तगीज़ और अंग्रेज़ी भाषा में समस्त जनता की ओर से आपका धन्यवाद किया।

४ मार्च रविवार को पहिले पाठशाला का निरीक्षण किया। बालकों के गीत, वेद मन्त्र और सम्वाद सुने फिर उन्हें शिक्षा विषय

पर भाषण दिया। तत्पश्चात् उनके खेल और कर्तव्य देखे जो प्रशंसनीय थे। ४ बजे हिन्दू ऐसोसियेशन के स्काउट के खेल और कर्तव्य देखे। एक घंटा 'हिन्दू धर्म के महत्व और हमारा कर्तव्य' विषय पर व्याख्यान दिया। जनता ने बहुत पसंद किया। इस व्याख्यान में बहुत उपस्थिति थी।

रात को पहिले श्रीराम भारती ने फिर मैंने 'महर्षि दयानन्द, उनका मिशन' पर व्याख्यान दिये जिनसे जनता बहुत प्रभावित हुई। इस प्रकार रविवार को मैंने तीन व्याख्यान दिये। ५ मार्च को सेठ मगन लाल हमें मोटर पर अपनी दुकान सालेमंगा में ले गये। यह फ़ासला ६० मील का था। मार्ग में जंगली दृश्य बड़ा मनोरंजक था। वहां पर पंदरह बीस गुजराती भाई रहते हैं। रात को सब एकत्रित हुये। मैंने धर्म विषय पर व्याख्यान दिया जिसे सुनकर लोग बड़े प्रसन्न हुये। ६ मार्च को संध्या समय हम लौट आये।

६, ७ मार्च को श्रीराम भारती ने धर्म की आवश्यकता और हक़ीक़तराय के जीवन पर व्याख्यान दिये। मेरे व्याख्यान रामायण की शिक्षा पर हुये। ८ मार्च को श्रीराम भारती का भाषण अमेरिका में धर्म की आवश्यकता पर हुआ और मैंने जावा बाली में हिन्दू सभ्यता, मन्दिर और वैदिक धर्म पर व्याख्यान दिया। ९ मार्च को श्रीराम भारती ने जर्मनी, इङ्गलैण्ड में धर्म की आवश्यकता पर और मैंने जापान ने किस प्रकार उन्नति की, विषय पर व्याख्यान दिया।

१० मार्च को गोआनी इन्स्टीट्यूट के हाल में जो बहुत विशाल है मेरा व्याख्यान अंग्रेज़ी में 'भारत में जाति सङ्गठन और नवयुवकों

के कारनामे' विषय पर हुआ। हाल उपस्थिति से खचाखच भर रहा था। मिस्टर सी० गार्ग बैरिस्टर एट-ला ने प्रधान पद को स्वीकार किया। आपने अपने प्रारम्भिक भाषण में जो पुर्तगीज़ भाषा में था कहा कि आज हमें प्रसन्नता और अभिमान है कि जिस देश में हमारी जाति ने सब से पहिले व्यापार करने के लिये पग धरा आज हम उसी जाति के एक नेता की मधुर वाणी से उस देश की अवस्था और भविष्य की उन्नति पर भाषण सुनने के लिये एकत्रित हुये हैं। हमें बड़ी आशा है कि भारत के सम्बन्ध में जो जद्दोजहद (आन्दोलन) स्वतन्त्रता प्राप्त करने के सम्बन्ध में हो रहा है, एक योग्य अनुभवी और ज़िम्मेदार पुरुष के मुख से बातें सुन कर लाभ उठावेंगे। तत्पश्चात् मेरा व्याख्यान आरम्भ हुआ। एक घन्टा पैंतीस मिनट मैंने अपना भाषण किया। पहिले मैंने पुर्तगीज़ और भारत के सम्बन्ध में व्याख्या की, फिर बताया कि पुर्तगीज़ों ने किस तरह भारत की संस्कृति और साहित्य से लाभ उठाया और हमारे अनेकों हस्तलिखित ग्रन्थ लिसबन में ले गये और पुस्तकालयों में सुरक्षित किये।

तत्पश्चात् मैंने पश्चिमी विद्वानों की सम्मतियों से सिद्ध किया कि भारत धन, विद्या, ज्ञान, उपजाऊ वस्तुओं विशेषकर रुई, खांड और स्वर्ण का केन्द्र स्थान था। यहां से ये वस्तुयें अन्य देशों में जाती थीं और दूसरे देशों में उन्हें उपयोग में लाकर लाभ उठाया गया। फ़िर मैंने बताया कि इस देश की दुर्दशा का कारण जाति-बंधन था। राबर्ट रजले सुपरिन्टेण्डेंट क़ौम व धर्म मनुष्य-गणना के कुछ उद्धरण दिये। तत्पश्चात् बताया कि भारत स्वराज्य के

योग्य है। इस पर पादरी संडरलैंड और विलियम डेवर्ट के बहुत से प्रमाण उपस्थित किये।

तत्पश्चात् मैंने सिद्ध किया कि भारत नवयुवक अब भी भारत को स्वतंत्र कराने के लिये तुले हुये हैं और अपनी जान पर खेल रहे हैं। जाति संगठन करने और बड़ाई, छुटाई मिटाने के लिये स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी का नाम लिया। फिर मैंने एक एक करके उदाहरण लिये। मैंने बताया कि राजनैतिक क्रान्ति में पंडित जवाहरलाल नैहरू चार बार जेल जा चुके हैं। भारत के स्वतन्त्र कराने के लिये उन्होंने सब कुछ न्यौछावर कर दिया है। वह एक उत्तम योग्यता और श्रेष्ठ बुद्धिमत्ता रखने वाला बैरिस्टर है जिस ने हजारों रुपये की आय पर लात मार कर इस कार्य को अपने हाथ में लिया है।

विज्ञान की योग्यता के विषय में जे० सी० बोस और सी० वाई० रमन को, फ़िलसफे में राधा कुमार और मिस्टर गुप्ता को, गणित में डाक्डर गणेषप्रसाद व रामानुज को, वीरता और व्यायाम में ध्यानचन्द, गामा व राममूर्ति को पेश किया। अन्त में अपील की, कि आप लोग भारतीय संस्कृति और साहित्य से लाभ उठावें। इससे शान्ति और सुख मिलेगा। भारत की स्वतन्त्रता से ही संसार को आनन्द और शान्ति प्राप्त होगी।

११ मार्च को समाज में पहिले हवन, यज्ञ कराया। फिर छः गुजराती भाइयों के यज्ञोपवीत संस्कार कराये। उन्हें गायत्री मन्त्र का उपदेश भी किया। इसके बाद भारत समाज की ओर से मुझे

अभिनन्दन पत्र दिया गया। पहिले छः सात भाइयों ने मेरे व्याख्यानों और यहाँ के कार्य के सम्बन्ध में प्रशंसात्मक भाषण किये। फिर मन्त्री भारत सभा ने अभिनन्दन पत्र पढ़ कर सुनाया। मैंने अभिनन्दन पत्र लेते हुये उसके उत्तर में पौन घन्टे तक भाषण करते हुये प्रेम और सङ्गठन के साथ रहने की ताकीद की। भारत समाज, जो वास्तव में आर्य समाज का ही दूसरा नाम है, अपना मन्दिर तैयार करावे और दयानन्द का ऋण यहां रह कर उतारे। भारत की संस्कृति और सभ्यता को यहां भी विस्तृत और प्रचलित करें। सब ने प्रेम और श्रद्धा से मेरे बचनों पर अमल करने का वायदा किया।

१२ मार्च को प्रातः समय भारत सभा स्कूल के बालकों को मिठाई और रूमाल बांटे। रात्रि को सेठ मानकचन्द ने अपने गृह पर हमें एट होम (फल दूध का निमंत्रण) दिया। इसमें २५ सिंधी और गुजराती भाइयों को बुलाया गया था। वहाँ भी मैंने प्रेम से संगठित रहने, भारत का नाम उज्ज्वल करने और भारत की संस्कृति और सभ्यता को सुरक्षित रखने का उपदेश किया। तत्पश्चात् हम लौटकर भारत सभा में आये। यहां सब लोग विदाई करने के लिये एकत्रित थे। बहुत से भाई बड़े प्रेम से मिले और अपने घर चले गये। परन्तु साठ सत्तर भाई हमें जहाज़ पर पहुँचाने आये और १० बजे के पश्चात् एक एक करके नमस्ते करके हाथ मिलाकर हमें विदा किया।

इस प्रकार मैंने लारैन्स मारकुइस में १५ दिन निवास करके १६ व्याख्यान दिये। छः यज्ञोपवीत संस्कार कराये, पाठशाला का

निरीक्षण किया, इनाम बांटा और पटना बिहार भूकम्प के लिये चार हजार रुपया एकत्रित करके बाबू राजेन्द्र प्रसाद को तार से वर्मा महाशय द्वारा भिजवाया। इस प्रकार हमने पुर्तगीज़ अफ्रीका की यात्रा समाप्त की। लोगों ने बचन लेना चाहा और आग्रह किया कि मैं एक बार फिर उनके पास आऊं। इस प्रकार मैंने वहां से श्रद्धा और प्रेम साथ लेकर दक्षिण अफ्रीका को प्रस्थान किया।

समाचार पत्र नोटेशिया ने एक घंटे तक मेरे पास वार्तालाप किया जिसमें भारत के वर्तमान आन्दोलन, महात्मा गाँधी जी के कार्य और भारत की स्वतन्त्रता पर अनेकों प्रश्न उत्तर पूछे। उसने अपनी पुर्तगीज़ भाषा के समाचार पत्र में उन्हें मुद्रित कर दिया है और मेरा व्याख्यान भी मुद्रित किया है।

तीसरा अध्याय

दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज का प्रचार

पहिला काण्ड

भारतीय उपदेशकों का आगमन

१६ नवम्बर १८६० ई० में खैरो जहाज में भारत से हिन्दू पाँच वर्ष की शर्तबद्ध मजदूरी पर आये। पहिले मद्रास से लोग अधिक संख्या में आये। फिर उड़ीसा बिहार और संयुक्त प्रांत से भी लोग मजदूरी करने के लिये आने लगे। यह लोग अपने धर्म कर्म से सर्वथा अनभिज्ञ थे। कुछ मुसलमान भी मजदूरी करने आये। परन्तु अधिकतया बम्बई सूरत के मुसलमान व्यापार करने ही आये। हिन्दू लोग अपने रस्म व रिवाज से भी कुछ परिचित न थे। इस लिये उन्होंने मुसलमानों के ताजिये मनाने आरम्भ कर दिये। स्वयं ताजिये बनाने लगे, उन्हें निकालते और उन पर बकरे चढ़ाते थे। दूसरे उन्होंने क्रसमस मनाना आरम्भ कर दिया। क्रसमस में भी शराब पीना और ऐश करना उनका काम था। अपने धर्म से तनिक भी परिचित न थे। केवल नाम मात्र के हिन्दू थे।

परन्तु कुछ हिन्दू ऐसे भी थे जो हनुमान का झण्डा निकालते थे और सत्य नारायण की कथा करते और सुनते थे। उन्हें यज्ञोपवीत पहिनने चोटी रखने या किसी और धार्मिक रसूमात से काम न था। अपने त्योहारों को भी भुला बैठे थे। कुछ हिन्दू विशेषकर मद्रासी लोग काली की पूजा करते और उस पर पशु हत्या भी करते थे। गुजराती लोगों में अपनी प्रान्तीय कई रस्में प्रचलित थीं। अलबत्ता लोग विवाह संस्कार, जात व नाम करण संस्कार और चूड़ाकर्म संस्कार पौराणिक रीति से करते थे। लोगों के अंदर धर्म से कोई प्रेम नहीं था।

अन्त में हिन्दुओं ने अपना पहिला मंदिर १८८८ ई० में डिपो सड़क पर बनवाया। इसके बाद कई अन्य स्थानों में मंदिर बनवाये गये। ये लोग शनैः शनैः पश्चिमी सभ्यता में बहते जाते थे। १८८९ ई० में हिन्दुओं ने डरबन में एक धर्मशाला धर्म प्रचारार्थ ठाकुर द्वारे के नाम से स्थापित की। कहीं कहीं राम और कृष्ण के जन्म उत्सव भी मनाये जाते थे परंतु साधारणतया हिन्दुओं में धर्म की लग्न न थी। यद्यपि कुछ पुरुषार्थी भाइयों ने अगुवा बनकर टौंगाट, सीक्टोलेक, क्लेरोड, असनगिगो, लेडी स्मिथ, पीटरमेयरटिज़बर्ग में हिन्दुओं के मंदिर स्थापित कर दिये। इन मंदिरों में हिन्दू लोग वर्ष में एक दो बार इकट्ठे होते थे। तामिल मंदिरों में अब तक पशु का बलिदान हुवा करता है। बाल विवाह की प्रथा भी इन लोगों में जारी थी।

पीटरमेयरटिज़बर्ग में १९०३ ई० में आर्य समाज की स्थापना हुई। उसका पहिला प्रधान म० गनपतसिंह एक पंजाबी पुरुषार्थी

भाई हुआ था। परंतु डरबन की दशा कुछ संतोषजनक न थी। महाशय हुक्मचन्द वर्मन ने जो तहसील पसरौर ज़िला सियालकोट के एक नवयुवक और पुरुषार्थी व्यक्ति थे। उनके अन्दर वैदिकधर्म की लग्न थी। उन्होंने देखा कि यहां के हिन्दू विनाश की ओर जा रहे हैं, और इसाई मत और इस्लामिया मज़हब के मत वाले बन रहे हैं तो उनके हृदय में यह प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई कि यहां आर्य समाज का प्रचार किया जावे तो हिन्दु जाति का सुधार और बचाव होगा। इसलिये उन्होंने अपने पास से और एक दो मित्रों से मिलकर ४० पौंड एकत्रित किये और महात्मा मुंशीराम को जालंधर लिखा कि किसी उपदेशक को दक्षिण अफ्रीका में प्रचार के लिये भेजें। आपने बचन दिया कि शीघ्र स्वामी योगेन्द्रपाल को प्रचार के लिये भेजेंगे परन्तु दो वर्ष तक प्रतीक्षा करने के उपरान्त भी वह जब न आये तो लाचार वर्मा महाशय ने महात्मा हंसराज जी को लाहौर लिखा। आपने उत्तर दिया कि हम भाई परमानन्द एम० ए०, डी० ए०.वी० कालिज को भेज रहे हैं। इसपर वर्मा महाशय ने महात्मा मुंशीराम को लिखा कि आप हमारा चालीस पौंड महात्मा हंसराज जी को अदा कर दें जिससे कि वह भाई परमानन्द जी को यहां रवाना करें। चुनाचे उन्होंने रुपया अदा कर दिया और भाई परमानन्द जी ५ अगस्त १९०५ ई० को पधारे।

भाई जी सरल स्वभाव, विद्वान और सुशील पुरुष थे। उन्होंने हिन्दी और अंग्रेजी में खूब व्याख्यान दिये। आपने हिन्दुस्तानी तथा युरोपियन जनता पर अपनी योग्यता का पूर्ण प्रभाव डाला। हिन्दू धर्म के महत्व और फ़िलसफे को भली प्रकार से प्रगट किया।

आपने डरबन में हिन्दू सुधार सभा की स्थापना की। आपने नवयुवक सभा भी बनाई। फिर आपने मारटिज्ञबर्ग में भी एक नवयुवक सभा की स्थापना की जो अब तक बड़े उत्साह से काम कर रही है।

आपने तीन चार मास दक्षिण अफ्रीका में कितने ही स्थानों में भ्रमण करके प्रचार की धूम मचा दी। आपने कई स्थानों पर सभायें स्थापित कर दीं फिर आप नवम्बर में यहां से सीधे विलायत चले गये परंतु हिन्दुओं में जागृति और अपने धर्म से प्रेम का बीज बो गये इसके बाद फिर मिस्टर वर्मा और कई भाइयों ने और उपदेशक बुलाने का विचार किया। स्वामी शंकरानन्द जी महाराज उन दिनों विलायत में थे। आपसे वहाँ के पते पर पत्र व्यौहार किया गया। उन्होंने यहाँ आना स्वीकार कर लिया। चुनाचे आप २९ सितम्बर १९०८ ई० को विलायत से डरबन पहुँच गये। स्वामी जी के शरीर और आकृति से ही तेज प्रगट होता था। आप भी बड़े विद्वान् थे तथा अंग्रेजी बोलने में अच्छी योग्यता रखते थे। आपने हिन्दुओं को संगठित करने की यह युक्ति निकाली कि वैदिक धर्म सभायें आरम्भ कर दीं जिससे सब हिन्दू उसकी ध्वजा के नीचे आ जायं। यहां तक कि आपने पीटरमारटिज्ञबर्ग की आर्य समाज का भी वैदिक धर्म सभा में परिवर्तन कर दिया। आपने हिन्दुओं को ताजियों की पूजा करने से रोका और हर जगह हिन्दू त्यौहारों को पुनर्जीवित किया। राम और कृष्ण के जन्म दिन मनवाने प्रारम्भ किये और दीपावलि मनाने का त्यौहार भी पुनर्जीवित कराया। ताजियों की छुट्टी बन्द कराई। आपने डरबन

में एक रथ के जलूस निकालने की कमेटी बनाई जो रामनवमी के दिन बड़े समारोह से रथ की सवारी निकाला करती थी परंतु तीन चार वर्ष के पश्चात् यह प्रथा बंद हो गई।

आपने डरबन में भी एक वैदिक धर्म सभा स्थापित की। क्लियर स्ट्रीट में भी आपने ऐसी सभा की स्थापना की। मारटिज़्बर्ग में आपने वैदिक धर्म सभा के आधीन वैदिक आश्रम भी क़ायम किया और हिन्दू यङ्गमैन एसोसियेशन भी बनाई। इसमें तामिल और हिंदू लोग मिलकर काम करते हैं। अब इस सभा ने अपना स्थान भी बना लिया है। इसमें पाठशाला जारी है। आपके लैक्चरों पर अंग्रेज़ लोग बहुत मुग्ध होते थे और बड़ी प्रशंसा करते थे। आप का सन्मान और गौरव गोरे लोगों में बहुत बढ़ गया और हिन्दुओं में आपने खूब संगठन और उत्तेजना पैदा कर दी।

तीन वर्ष के बाद आपके गुरु आत्मानन्द जी हिन्दुस्तान में बीमार हो गये। आप उनके दर्शनों के लिये १९११ ई० में भारत लौट गये और १९१७ ई० में फिर वापिस आ गये। आपके लौटने पर हिन्दुओं को अधिक जागृत अवस्था में लाने और संगठन पैदा करने के लिये हिन्दू कांफ्रेंस का अधिवेशन डरबन में किया गया। आप उसके प्रधान बनाये गये। इस कांफ्रेन्स में तमाम दक्षिण अफ्रीका से प्रतिनिधि सम्मिलित हुये जिनकी संख्या पौने तीन सौ के लगभग थी।

इस कान्फ्रैन्स में लोगों के अन्दर बहुत उत्साह उत्पन्न हो गया। गोरे लोग भी हिन्दुओं के सङ्गठन से बहुत प्रभावित हुये।

आपने हिन्दू जाति में नवीन जीवन डाल दिया। इसके बाद हिन्दू सभा ने दूसरी कान्फ्रैन्स सन् १९१३ ई० में की परन्तु उस समय स्वामी जी भारत लौट कर चले गये थे और मिस्टर नायडू उसके प्रधान चुने गये थे। आपने कई शुद्धियां भी कीं। आपने केप टाउन और ट्रान्सवाल में भी हिन्दू लोगों के अन्दर सङ्गठन पैदा किया और वहां के गोरे लोगों पर भी अपनी योग्यता और भारत के महत्व का अति उत्तम प्रभाव डाला।

भारत से तीसरे उपदेशक स्वामी मंगलानन्द पुरी सन् १९१३ ई० में आये। आपने भी यहां कई मास रह कर प्रचार किया। आप प्रायः बीमार रहते थे। महायुद्ध आरम्भ होने के पश्चात् आप भारत को लौट गये। आप अंग्रेजी में व्याख्यान नहीं दे सकते थे इसलिये आपके प्रचार को बहुत सफलता प्राप्त न हुई।

फिर पण्डित ईश्वरदत्त जी विद्यालङ्कार और ठाकुर प्रवीणसिंह जी ने यहां आकर खूब प्रचार किया। आपकी कथा करने और प्रचार करने की शैली बहुत अच्छी थी। ठाकुर साहब भजन गाने और बाजा बजाने में निपुण थे। आप दोनों के प्रचार से हिन्दू जनता पर बहुत उत्तम प्रभाव पड़ा।

इसके बाद छटे उपदेशक पण्डित कर्मचन्द जी मैनेजर डी० ए० वी० स्कूल क़ादियां आये और कथा व व्याख्यानों से लोगों को आकर्षित कर लिया। आपने स्कूल के लिये आठ दस हजार रुपया एकत्रित करके ले गये। आपने भी कई स्थानों में भ्रमण करके प्रचार किया

इसके बाद सातवें नम्बर पर डाक्टर भगतराम जी अपनी धर्म-पत्नि सहित आये। आपने भी नैटाल के बड़े बड़े शहरों में भ्रमण करके प्रचार किया और कई स्थानों में आर्य समाज क़ायम किये और वैदिक सभा का नाम बदलकर आर्यसमाज रक्खा। परंतु उनके चले जाने पर न तो वे आर्य समाजें क़ायम रहीं और न उनके द्वारा कुछ कार्य सफलता को प्राप्त हुआ। आप वहाँ से सीधे विलायत को चले गये।

इसके बाद आठवें उपदेशक पंडित रलियाराम जी एम० ए० वाइस प्रिन्सिपल डी० ए० वी० कालिज होशियारपुर आये। आप भी बहुत योग्य विद्वान् और नम्र स्वभाव उपदेशक थे। यहां तीन मास प्रचार करने के पश्चात् आपकी आंखें खराब हो गईं। इसलिये आप यहां से जल्दी ही चले गये परन्तु अपनी योग्यता और उत्तम व्याख्यानों का प्रभाव यहां की जनता पर छोड़ गये।

इसके बाद कुमारी नरायन देवी और राम प्यारी देवी कन्या महा विद्यालय जालंधर की ओर से चन्दा एकत्रित करने आईं। आप दोनों ने कुछ भाषण भी दिये और चन्दा जमा करके ले गईं। इस प्रकार भारत से दस उपदेशक १९३२ तक यहां आये जिन्होंने प्रचार के द्वारा हिन्दु जाति में जागृत अवस्था पैदा की। इनके अतिरिक्त स्थानीय भाइयों ने भी अत्यन्त कष्ट सहकर प्रचार का कार्य किया। पंजाबी लोगों में से जिला लुधियाना के गनपतसिंह, गनपत राय और गाहनसिंह ने, जालंधर के महाशय देवीचन्द ने सियालकोट के हुक्मचन्द वर्मा ने, यू पी० के महाशय (वर्तमान स्वामी) भवानी दयाल जी ने और अन्य यहां के कई सज्जनों ने

आर्य समाज के कार्य को सफल करने और प्रचार करने में बहुत पुरुषार्थ से काम लिया है परंतु अभी यहां आर्य समाज का कार्य बहुत शिथिल है। अभी केवल एक समाज का मंदिर अपना निजी है। मारटिज़बर्ग समाज ने भूमि ले रक्खी है परंतु मंदिर बनाने वाला कोई नहीं है। साप्ताहिक अधिवेशन नियमपूर्वक नहीं होते। ९५ फ़ी सदी से अधिक आर्य समाजी माँस भक्षक हैं। इसलिये जनता पर उत्तम प्रभाव नहीं डाल सकते। उनके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। कारण यह है कि यहां कोई स्थानीय उपदेशक नहीं है। प्रचार का कोई प्रबंध नहीं है। यदि कोई प्रचारक बाहर से आ जावे तो भले ही प्रचार कर जावे परन्तु यहां का उपदेशक कोई प्रचार करने वाला नहीं है। इसलिये समाजों की अवस्था अत्यन्त शिथिल और शोचनीय है।

दूसरा काण्ड

दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज की अवस्था

आर्य प्रतिनिधि दक्षिण अफ्रीका व समाजें

इस सभा की स्थापना दयानन्द जन्म शताब्दि पर २१ फ़र्वरी १९२५ ई० को हुई। इसके प्रधान स्वामी भवानी दयाल जी और मंत्री महाशय मेघराज जी हुये। इस सभा ने वैदिक धर्म के अनु-याइयों के लिये बहुत कार्य किया है। इसके आधीन दो कांफ्रेन्स हो

चुकी हैं अर्थात दयानन्द जन्म शताब्दि और निर्वाण अर्द्ध शताब्दि। धार्मिक त्यौहार मनाये जाते हैं। प्रचार किया जाता है और हिन्दी भाषा सिखाई जाती है। इसका सम्बंध भारतवर्ष की सार्वदेशिक सभा के साथ जुड़ा हुआ है। १९३० ई० में समाज के २५ वर्षीय स्थापना का उत्सव भी मनाया गया था। अब आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ नियमित रूप से निम्न लिखित संस्थायें हैं जिनका संक्षिप्त रूप से वृतान्त भी दिया जाता है।

(१) आर्य युवक सभा डरबन

यह सभा महाशय सत्यदेव के मकान पर एक हिन्दी पाठशाला के रूप में स्थापित हुई और कुछ दिनों के पश्चात् उसके कुछ विद्यार्थियों को लेकर महाशय सत्यदेव ने २५ अप्रेल १९१२ को आर्य बाल मित्र मंडल नाम से एक सभा की स्थापना कर दी जिस के प्रधान महाशय सत्यदेव, मंत्री महाशय भगवान बनाये गये। उसके साप्ताहिक अधिवेशन वीरवार को सत्यदेव के मकान पर होते थे। ३१ मई १९१२ ई० को हिन्दू कांफ्रेन्स में वह सभा सम्मिलित हुई। फिर स्वामी शंकरानन्द ने इस सभा का नाम आर्य युवक मंडल रक्खा। सन् १९१३ ई० में सभा ने पहला वार्षिकोत्सव बड़े समारोह से मनाया। कई शुद्धियां भी कीं और नवयुवकों को ईसाई बनने से बचाया। जैसे कि महाशय जोग बहादुर सिंह और परसराम को। फिर सभा ने आश्रम बनाने के लिये बाओमेज़ में भूमि खरीदने का विचार किया।

पहली मई १९२१ ई० को डरबन में आर्य अनाथ आश्रम की स्थापना हुई। महाशय सत्य भूषण ने उसका रक्षक बनना स्वीकार

किया और १९ मास तक अवैतनिक संचालन किया। अनाथ बच्चों और अपाहजों के निवास व पालन का उसमें प्रबंध किया गया। इसमें अपाहज लोग भी बिना लिहाज मजहब प्रविष्ठ किये जाते हैं। सब सरकारी अफ़सर उसका निरीक्षण करते, उसकी प्रशंसा करते और उससे सहानुभूति प्रगट करते हैं। अब उसका नया मकान बड़ा उत्तम बन गया है। १२ मई १९२५ ई० को सर कुमार रेडी ने इस मकान का उदूघाटन किया। उत्सव के प्रधान यहां के मेयर साहब मिस्टर एटन साहब बनाये गये। उसका निरीक्षण भारत से आये हुये सब नेताओं ने किया है और बड़ी प्रशंसा करके जाते हैं। काओनेज में एक पाठशाला जारी थी जो इस सभा के आधीन कर दी गई। अब उसमें २५० के लगभग लड़के और लड़कियां शिक्षा पाते हैं और अंग्रेजी के साथ २ हिन्दी भी पढ़ाई जाती है। १९२९ ई० से सरकार भी इस पाठशाला को आर्थिक सहायता देती है। उसका मकान ८०० पौंड की लागत से तैयार कराया गया है। उसमें पांच अध्यापक हैं। उसका साप्ताहिक अधिवेशन वीरवार को तामिल इंस्टीटयूट में हुआ करता है। उसके ६५ के लगभग सदस्य हैं। यह सभा रजिस्टर्ड है और २ हजार पौंड के लगभग उसकी सम्पति है। इस सभा के आधीन एक सेवक दल भी है।

(२) आर्य युवक मंडल सी काऊ लेक

सी काऊ लेक (Sea Cow Lake) यह स्थान डरबन से ५ मील की दूरी पर है। यहां ईसाइयों का गिरजा, मुसलमानों की मसजिद और हिन्दुओं का मंदिर है। तामिल लोगों की वैदिक

सन्मार्ग सभा है। नैनाराय ने यहाँ कुछ बालकों को संग्रह करके उनकी पाठशाला स्थापित की। फिर १२ दिसम्बर १९१२ ई० को आर्य युवक सभा डरबन की शाखा बनादी गई। आप शिक्षा व पुस्तकें मुफ्त देते और रात्री को पढ़ाते थे। आपने बाल मित्र मंडल भी अपने विद्यार्थियों से बनाया और रविवार को उसका साप्ताहिक अधिवेशन भी करने लगे।

(३) आर्य युवक मंडल—की ४ नवम्बर १९२९ ई० को स्थापना हुई। विरोधियों ने बहुत सी अड़चनें डालनी प्रारम्भ कीं। परन्तु नैनाराय शान्ति से कार्य करते रहे। आपके चले जाने पर मण्डल का कार्य शिथिल पड़ गया। परन्तु फिर मदनलाल और महाशय नारायण के पुरुषार्थ से पुनर्जीवित हुआ। अब मंडल ने १२५ पौंड की लागत से एक दालान बनवाया है। सोमवार को उसके साप्ताहिक अधिवेशन हुआ करते हैं। संध्या, हवन, उपासना आदि मंडल की रात्रि पाठशाला में होते हैं। बालकों की संख्या ६५ है। इसमें महाशय जै नारायण, शिवपाल, दीपलाल और राम प्रसाद उत्साह से कार्य करते हैं।

(४) पर्मेलियर, पूर्व नागरी हितैषी सभा

यह सभा १९२२ ई० में स्थापित हुई। २५ अक्तूबर १९२४ को यहां एक पाठशाला की स्थापना हुई। लक्ष्मीसिंह अध्यापक उत्साह से काम करते हैं। डाक्टर भगतराम ने उसका नाम आर्य समाज रक्खा और गंगा विशन प्रधान, महाशय भोला मंत्री बनाये गये परन्तु इस समय कार्य शिथिल अवस्था में है। उसके साप्ताहिक अधिवेशन भी नहीं होते।

(५) आर्य समाज केटोमाईनर—

डरबन से ४ मील दूर पर यह स्थान है। यहां हिन्दुओं का मंदिर है। यहां की समाज के आधीन अंग्रेजी हिन्दी पाठशाला भी है। २० सितम्बर १९२२ ई० को वैदिक धर्म जिज्ञासनी सभा की स्थापना हुई। इसके प्रधान अजुध्यादास और मंत्री देवदत्त हुये। साप्ताहिक कार्यवाही होती है। हिन्दी पाठशाला का अच्छा प्रचार है। देवदत्त के पुरुषार्थ से सभा ने भूमि लेकर उस पर छोटा सा मकान बनाया है। २४ फ़र्वरी १९२९ ई० को उसका नाम भी आर्य समाज कर दिया गया। अब उसके प्रधान महाशय देवदत्त और मंत्री रामदास हैं। सभा का साप्ताहिक अधिवेशन रवीवार को दोपहर के समय हुआ करता है। सभा और पाठशाला के संचालकों में से देवदत्त और ईश्वर प्रसाद ने अधिक परिश्रम से कार्य किया है।

(६) आर्य समाज डरबन—

यह समाज फ़र्वरी १९२४ ई० में स्थापित हुई। इससे पहिले कई संस्थायें आर्य समाज के आदेशानुसार कार्य कर रहीं थीं। इसके प्रधान महाशय मोडे और मंत्री परमेश्वर है परंतु ये दोनों सिद्धान्तों से अनभिज्ञ थे। महाशय मेघराज और तिलकधारी के सहयोग से कार्य चलता रहा परंतु अब तो यह समाज सर्वथा शिथिल पड़ी है कभी उसका साप्ताहिक अधिवेशन भी नहीं होता।

(७) यंगमेन आर्य समाज डरबन—

यह समाज २८ फ़र्वरी १९२८ ई० को स्थापित हुई। इसके

५० के क़रीब सदस्य हैं। इसके साप्ताहिक अधिवेशन तामिल इंस्टीटयूट में होते हैं। इसके प्रधान बी आर० सिंह और मंत्री मेघराज हैं।

(८) आर्य समाज स्टनस—

२९ फ़र्वरी १९२९ ई० को स्टनम में महाशय सत्यदेव के उद्योग से आर्य समाज की स्थापना हुई। सत्यदेव के मकान पर मंगलवार को अधिवेशन होने लगे। यहां स्वामी शंकरानन्द ने यङ्गमैन ऐसोसियेशन स्थापित की। परन्तु इस समय समाज शिथिल अवस्था में है।

(९) आर्य समाज पोटस्मेयरटिज़बर्ग

इसके पहिले प्रधान गनपतसिंह १९०३ ई० में थे फिर गनपतराय हुये। भिखारी महाराज वैदिक रीति से हवन कराते रहे। १० अप्रैल १९०८ ई० को स्वामी शंकरानन्द ने इसका नाम वैदिक धर्म सभा रख दिया। इसी सभा के द्वारा एक अनाथ आश्रम बनवाया गया जिसपर एक हज़ार पौंड व्यय हुआ। इस सभा ने पहिले वैदिक त्यौहार मनाने आरम्भ किये। १९०८ ई० में यहां एक हिन्दी व तामिल पाठशाला खोली गई। १९१५ ई० में वैदिक आश्रम में हिन्दी रात्रि पाठशाला की स्थापना हुई परंतु कुछ समय के पश्चात् यह बन्द हो गई। १९२३ ई० में विद्या प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई। श्मशान भूमि उत्तम बनाई गई।

विद्या प्रचारिणी सभा ने एक हिन्दी पाठशाला खोली जो चौथी श्रेणी तक शिक्षा देती है। अब समाज की अवस्था शिथिल

है । कोई साप्ताहिक अधिवेशन भी नहीं होता । नाम मात्र की समाज है । समाज के लिये चिरकाल से भूमि ली पड़ी है परन्तु समाज शिथिल होने से कोई कार्य नहीं करता ।

(१०) हिन्दू यङ्गमैन्स ऐसोसियेशन—१९०५ ई० में भाई परमानन्द जी ने यहां बनाई । उस सभा ने २ हजार पौंड का एक उत्तम मकान यहां पर बनाया है । उसमें ऊपर पुस्तकालय है और नीचे तामिल पाठशाला है । रविवार को उनके अधिवेशन होते हैं ।

(११) इनहोज़र—में १९२९ ई० में आर्य समाज की स्थापना हुई थी । समाज के आधीन एक रात्रि पाठशाला है । लगभग २० सभासद हैं । अपना मंदिर आदि नहीं है ।

(१२) स्टैंगर—डरबन से ५० मील दूर है । यहां वेद० धर्म सभा स्थापित है । डाक्टर भगतराम ने २३ जून १९२९ ई० को आर्य समाज बनाई । वेद धर्म सभा के भवन में साप्ताहिक अधिवेशन होने लगे । परंतु अब तो अत्यन्त शिथिल अवस्था में है ।

(१३) आर्य समाज रायइस्टन—यह स्थान ७९ मील डरबन से दूर है । १४ जुलाई सन १९२९ ई० को यहां आर्यसमाज की स्थापना हुई । प्रधान महाशय गंगाराम, मंत्री मंगलसैन नियत हुये गंगाराम के मकान पर अधिवेशन होते रहे । ईश्वरसिंह आर्य समाज के प्रेमी और भक्त हैं । परंतु अब समाज शिथिल अवस्था में है । साप्ताहिक कार्यवाही नहीं होती ।

(१४) आर्य समाज लेडी स्मिथ—इस समाज का छोटा सा मंदिर है मगर जमीन खाली बहुत है। समाज का मंदिर किराये पर दिया हुआ है। और साप्ताहिक अधिवेशन महाशय रघुनाथसिंह की दुकान के कमरे पर लगता है। उपस्थिति बहुत कम होती है।

नैटाल की आर्य संस्थाओं का वर्णन मैंने ऊपर दे दिया है। उनमें से अधिकतया नाम मात्र की ही है। उनका कोई साप्ताहिक सत्संग भी नहीं होता। न उनके पास ऐसा करने के लिये कोई स्थान है। अपना मंदिर तो केवल कैटोमाईनर आर्य समाज का है। डरबन आर्य समाज तो अत्यन्त शिथिल अवस्था में है। न कोई उसकी कार्यवाही ही होती है। नैटाल में कुल आर्यों की संख्या ४८९ है। आर्य प्रतिनिधि सभा में केवल आर्यसमाज ही सम्मिलित नहीं हैं बल्कि आर्य यंगमैन्स और वैदिक ऐसोसियेशन भी सम्मिलित हैं।

कई भाई यहाँ पुरुषार्थ से काम करने वाले हैं जैसे पं० देवदत्त प्रधान आर्य समाज कैटोमाइनर आर० बी० महाराज, महाशय सत्यपाल, पीटर मैरिटजबर्ग वाले म० परमेश्वर, म० मेघराज जी, म० मनुराम जी, म० तिलकधारी, म० एम० एल० सिंह, म० बी० एम० पटेल, म० भिखारी जी, म० रामदत्त जी, महाशय ईश्वरसिंह जी, म० रघुनाथसिंह जी, म० शिवनारायण पांडे, पं० मोहकमचन्द जी, सोहराब जी रुस्तम जा, म० गयासिंह जी, बद्री महाराज, जगमोहनसिंह जी, मि० जोशी, म० रूपानन्द आदि सज्जनों ने यथाशक्ति समय २ पर उत्तम रीति से भाग लिया। यहां से भारत में निम्नलिखित व्यक्ति शिक्षा पाने को भेजे गये—

स्वामी भवानी दयाल के पुत्र रामदत्त व ब्रह्मचारी कृष्णदत्त गुरुकुल वृन्दावन में शिक्षा पाते रहे जो दस वर्ष शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त यहां वापिस आये।

महाशय कप्तान का पुत्र हरिश्चन्द्र और दोनों बहिनें, गुरुकुल कांगड़ी व कन्या महाविद्यालय जालंधर में शिक्षा ग्रहण करने गये। कन्यायें अब वापिस आ गई है। रामहोरी के दोनों पुत्र रूपनारायण और विद्यासागर देहली में ४ वर्ष शिक्षा प्राप्त करके लौट आये और उनकी बहिन धर्मवती गुरुकुल देहरादून में पढ़कर लौट आई। स्ढनम निवासी खुशहाल का पुत्र राम सेवक देहली व लाहौर में और पुत्री देहरादून में शिक्षा पाकर लौट आये। हरि-शंकर महाशय गजाधर क्लीयर स्ट्रीट निवासी के पुत्र गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षा पा रहे हैं। म० मेघराज के पुत्र बलीराज देहली में ४ वर्ष शिक्षा प्राप्त करके लौट आये हैं। म० हीरा वर्मा का पुत्र तिलकसिंह ३ वर्ष देहली में शिक्षा पाकर वापिस आ गया है। स्ढ-नम निवासी म० जहरी का पुत्र रामदेव भी ४ वर्ष देहली में शिक्षा पाकर लौट आया है। इस प्रकार १४ विद्यार्थियों ने यहां से प्रस्थान करके भारत में आकर शिक्षा ग्रहण की है।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने दयानन्द जन्म शताब्दि और दयानंद निर्वाण अर्द्ध शताब्दि को बड़े समारोह से मनाया और इन अवसरों पर हिन्दू महा सभा को भी पुनर्जीवित किया।

चौथा अध्याय

दक्षिण अफ्रीका में मेरा प्रचार

मैं ऊपर लिख चुका हूं कि हम १४ मार्च को दक्षिण अफ्रीका के बन्दरगाह डरबन पर उतरे। यहाँ की जनता ने विशेषकर हिन्दू महा सभा ने बड़े प्रेम से हमारा स्वागत किया। महाशय मोहकमचन्द वर्मा के पुरुषार्थ और हिन्दु महा सभा के प्रेम व सहायता से हमारा यहाँ आना हुआ। स्वामी भवानी ने सभा में बलपूर्वक कहा कि उपदेशकों के आने से हमारे ऊपर बहुत बोझ होता है। हमारी आर्थिक दशा अच्छी नहीं है इसलिये महता जी को निमंत्रण करना उचित नहीं। सभा में १८ सदस्य उपस्थित थे। इनमें से ९ सदस्यों ने सम्मति दी कि महता जी को निमंत्रित न किया जावे। शेष ९ सदस्यों में से ८ ने कहा कि महता जी को अवश्य बुलाया जावे। नवां नम्बर स्वामी भवानी दयाल का था जोकि प्रधान थे। आपने सोचा कि महता जी के समर्थन में यदि सम्मति देता हूं तो मेरे डबल वोट से उनका आना स्वीकृत होजायगा और मेरा भाषण निष्फल होजायगा, विरुद्ध सम्मति देने से लाभ नहीं, एक सम्मति पहिले से ही अधिक है। इसलिये आपने कह दिया मेरी सम्मति कोई नहीं। उनकी इस कुटिल नीति से मेरा निमंत्रण अस्वीकृत हुआ। परन्तु महाशय मोहकमचन्द वर्मा को जब पता लगा तो उसने हिन्दू महासभा को हमारे निमंत्रण देने के लिये तैयार किया और स्वयं बहुत धन व्यय करके ऐमीग्रेशन आफीसर को भी जा मिला। आप बहुत पुरुषार्थ करने के पश्चात् हमको आज्ञा-पत्र दिलाने में सफल हुये। इसी प्रकार जितने भी उपदेशक यहां आये उनके बुलाने और उनकी सहायता करने में भाई परमानंद के समय से लेकर अब तक यही एक पुरुषार्थी हैं जो अपना रुपया

व्यय करके भी कोशिश करते रहे हैं। स्वामी भवानी दयाल ने भी आर्य पत्रिका २८ सितम्बर १९१२ ई० में आपके पवित्र पुरुषार्थ और योग्यता की अत्यन्त प्रशंसा की है।

यहां पर हमें आर्य अनाथ आश्रम में उतारा गया। परन्तु शीघ्र ही शहर में कुंवर महाराज सिंह वाले मकान में हमारे ठहरने का प्रबंध किया गया। स्वामी जी उस समय केप टाउन में एक विवाह कराने चले गये थे। हमारे स्वागत और व्याख्यान का प्रबंध हिन्दू महा सभा ने १८ मार्च रविवार से कर रक्खा था। समाचार पत्रों में विज्ञापन भी कर दिया था। अलग भी विज्ञापन छपवा रक्खे थे। इसलिये चार दिन हमें आराम करना पड़ा। अखबार एडवरटाइज़र ने मेरा फ़ोटो और संक्षिप्त समाचार भी अपने पत्र में मुद्रित किया और १६ मार्च के अङ्क में समाचार पत्र इण्डियन ओपीनियन ने निम्नलिखित लेख मुद्रित किया।

Indian Openian 16. 3. 1934.

A Distinguished Visitor.

The last boat from India has brought to the Union a distinguished visitor in the person of. Pundit Mehta Jaimini, B. A., LL. B., M. R. A. S, Ph. D. There was a representative gathering at the Point on Wednesday morning to receive him. The Panditji, we understand, is the honoured guest of the S. A. Hindu Mahasabha, a body

which is supposed to have been recently resuscitated after having been lying dormant for over twenty years, and the Pundit has been housed by the Sabha at the Aryan Benevolent Home. Such distinguished and learned personages as the Punditji are rare in this country and indeed no particular body can claim them to be their own guests. Punditji is therefore really the guest of the community and we sincerely trust that he will not merely act as a Hindu missionary but that his stay in this country will result in elevating the Indian community as a whole to a higher moral level and we wish too that we will use all his influence in bringing about the much needed harmony in the community. We heartily welcome the Punditji to our shores.

अर्थात्–महता जैमिनी एक प्रसिद्ध प्रचारक भारत से केनिया जहाज में दक्षिण अफ्रीका में आया है। उसके स्वागत के लिये समुद्र के तट पर बहुत मनुष्य एकत्रित थे। पंडित जी अब हिन्दू महा सभा के मेहमान हैं। यह सभा २० वर्ष तक शिथिल रहने के पश्चात् अब पुनर्जीवित हुई। सभा ने पंडित जी को आर्य परोपकारी सज्जन में ठहराया है। ऐसे प्रसिद्ध और विद्वान् मनुष्य इस देश में बहुत कम आते हैं। और कोई सम्प्रदाय उन्हें विशेषकर अपना मेहमान नहीं कह सकता, वह देश भर के मेहमान समझे जाते हैं। इसलिये हम आशा करते हैं कि पंडित जी केवल हिन्दू

मिशनरी का कार्य ही नहीं करेंगे किन्तु आपका यहां भ्रमण और प्रचार प्रवासी भारतीयों को उन्नत करने में लाभदायक होगा। हम आशा करते हैं कि वह अपना तमाम प्रभाव इस देश में समानता और एकता के उत्पन्न करने में लगायेंगे। हम पण्डित जी के यहाँ शुभ आगमन के लिये हृदय से बधाई देते हैं।

१८ मार्च को रायल पिक्चर में २॥ बजे बृहद् अधिवेशन हुआ। हिन्दू सभा ने ४ पौंड किराया देकर दो घंटे के लिये यह विशाल भवन लिया। तमाम भारतीय जातियों के लोग और स्त्रियां और कुछ अंग्रेज अच्छे पदाधिकारी और थियोसोफिकल सोसाइटी के सदस्य भी सम्मिलित थे। श्रोतागण से यह विशाल भवन खचाखच भर रहा था। कई सभाओं के प्रतिनिधियों ने भाषण किये। महाशय पटेल प्रधान हिन्दू महा सभा ने निम्न लिखित स्वागत-पत्र पढ़कर सुनाया। मुझे पुष्प मालाओं से शोभित कर दिया गया। मैंने पहिले दस मिनट में धन्यवाद किया तत्पश्चात् वैदिक धर्म के आदर्श पर डेढ़ घंटे तक व्याख्यान दिया।

इस व्याख्यान में मैंने दर्शाया कि किस प्रकार से विदेशों ने भारत के सम्बन्ध में मिथ्या विचार बनाये हैं वास्तव में भारत का धर्म और विचार कैसे ऊंचे हैं। इस पर पश्चिमी विद्वानों के उद्धरण इतने उपस्थित किये कि गौरे लोग आश्चर्य करने लगे। चुनान्चे इस पर हिन्दुओं का कट्टर विरोधी अखबार मरकरी ने भी एक लेख १९ मार्च के अङ्क में प्रकाशित किया है जो यहां दिया जा रहा है।

Presidential Welcome speech.

Punditji, Ladies and Gentlemen,

As President of the South African Hindu Maha Sabha, an institution represnting the Hindu Community of South Africa, it gives me unlimited pleasure to extend the learned pundit a very sincere welcome to South Africa. It is in the fitness of things, that the arrival of so distinguished a visitor should synchronise with the resuscitation of the Maha Sabha after a long period of inactivity.

This institution was established by His Holiness Shri Swami Shankranandji in 1912 in order to work for the uplift of the South African Hindus, educationally, morally, physically and religiously, as well as to make a material contribution to the general progress and welfare.

It would be improper for me to wish you a happy time during your sojourn here in as much as the term happiness has different meanings to us and to you.

You have to a considerable extent renounced the pleasures of the world and your enjoy-

ment of happiness consists in the dissemination of truth and knowledge to the people in general.

We hope that by our full attendances at the several meetings at which you will discourse upon sublime subjects and by our acquisition of knowledge thereby, we will be able to afford you some measure of satisfaction.

We, the South African Hindus have been particularly fortunate in the past in that we have had in our midst several emminent visitors like your noble self, who conveyed to the people of this country the lofty ideals and beauties of the first and foremost Vedic Dharma. Of these visitors we desire to mention particularly two who have left lasting impressions in this land and evidences of their teachings are apparent in the existence of several institutions carrying on useful work. The two are His Holiness Shri Swami Saukranandji and Professor Bhai Parma Nandji.

Respected Punditji, we are indeed proud to have you amidst us today. Your fame has preceded you to this country. We have heard of your noble and self sacrificing work in the

cause of beloved Motherland. We have heard of how you had given up a lucrative legal practice in order to save humanity and to spread a spirit of peace and brotherhood.

We have followed with real and genuine pleasure your triumphal tour abroad from Mauritius to Strait Settlements, from Fiji to New Zealand, from North to South America, from China to Japan and from Europe to East Africa.

On this occasion, we desire to place on record our appreciation of the efforts of Mr. M. C. Varman whose endeavours induced you to visit this country.

In South Africa we are a united community Hindus, Mohammedans, Parsis and Christians living in amity and peace, and we hope that during your sojourn that every section would benefit by your discourses upon the civilisation and culture of Ancient India.

One eminent gentleman in America designated you "The Light of Asia" and as such we are proud and happy to see you here today.

In conclusion we hope that the South

African Hindu Maha Sabha and the South African Hindu Conference which is to be held at Durban on 31st of May will receive your wise guidance and able advice and thus achieve the spiritual development necessary in this country.

May Paramatma confer His choicest blessings upon you and may you live long to carry on your great humanitarian work and noble mission.

Durban
18th March 1934.

(Sd.) B. M. PATEL
President
Hindu Maha Sabha.

अनुवाद—

श्रीमान् पंडित जी, भद्रपुरुषों और देवियों !

मैं अफ्रीका हिन्दू महा सभा के प्रधान की हैसियत से विद्वान् पंडित जी के अफ्रीका में शुभागमन के लिये उन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ। यह सभा चिरकाल की शिथिलता के पश्चात् ऐसे शुभ अवसर पर जागृत अवस्था को प्राप्त हुई है। यह सभा स्वामी शंकरानन्द ने दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुओं की शिक्षा, सदाचार, शारीरिक और आत्मिक अवस्था के सुधारने के लिये स्थापित की थी। आपने सांसारिक आनन्द को त्याग कर साधारण जनता को ज्ञान और सत्य का प्रचार करने के लिये जीवन अर्पण कर दिया है।

हम आशा करते हैं कि हम आपके उत्तम विचार और

व्याख्यानों को सुनकर ज्ञान प्राप्त करेंगे और लाभ उठायेंगे जिससे आपको भी संतोष प्राप्त होगा। हम दक्षिण अफ्रीका के भारतीय बड़े सौभाग्य शाली हैं कि आप जैसे कई धुरन्धर विद्वानों ने इस देश में आगमन करके सबसे प्राचीन वैदिक धर्म के आदर्शों और महानता पर हमें प्रभावित किया है। इन यात्रियों और प्रचारकों में से हम यहाँ दो महानुभावों के नाम प्रगट करते हैं जिन्होंने यहां की जनता पर स्थाई रूप से अपना प्रभाव अंकित किया है और उनके उपदेशों की साक्षी उन संस्थाओं से प्रगट होती है जोकि लाभदायक कार्य कर रही हैं। अर्थात् स्वामी शंकरानंद जी महाराज और भाई परमानन्द जी।

मान्यवर पंडित जी;

हमें आज आपका अपने मध्य में उपस्थित देखने का बड़ा अभिमान है। आपका यश, आपके यहाँ आगमन होने से पहिले ख्याति पा चुका था। हमने आपके पवित्र और त्याग भरे महान् कार्य को, जो आपने मातृभूमि के उज्ज्वल करने के लिये किया है, सुन रक्खा था। हमें ज्ञात था कि किस प्रकार आपने बड़ी आय वाले वकालत के पेशे को त्याग कर मनुष्य मात्र की सेवा करने के लिये और भ्रातृ भाव और शान्ति का प्रचार करने के लिये कटिबद्ध होकर यह कार्य किया है और कर रहे हैं।

हमने बड़े उत्साह आनंद से आपके सफलतापूर्वक भ्रमण को जो आपने मारीशस से मलाया तक, फीजी से न्यूजीलैण्ड तक, उत्तर से दक्षिण अमेरिका तक, चीन से जापान तक और युरोप से पूर्वी अफ्रीका तक प्रचारार्थ किया है, जान लिया।

इस अवसर पर हम महाशय हुकमचंद वर्मा के पुरुषार्थ को भी लेखबद्ध करने से नहीं रुक सकते जिनके पुरुषार्थ ने ही आपको इस देश में प्रवेश करने के लिये प्रेरित किया।

दक्षिण अफ्रीका में हम संघटित जाति हैं। हिन्दू, मुसलमान, पारसी और इसाई प्रेम और शान्ति के साथ परस्पर निवास करते हैं और हम आशा करते हैं कि आपके भ्रमण काल में हरेक सम्प्रदाय आपके व्याख्यानों से जो प्राचीन भारत की सभ्यता और संस्कृति पर होंगे लाभ उठावेंगे।

अमेरिका में एक प्रसिद्ध विद्वान् ने आपको एशिया की ज्योति के शब्दों से सम्बोधित किया और इसलिये हम आज अपने बीच में आपको देखकर प्रफुल्लित और गौरवान्वित हो रहे हैं।

अन्त में हम आशा करते हैं कि दक्षिण अफ्रीका की हिन्दू महा सभा और अफ्रीका की हिन्दू कांफ्रेन्स जोकि ३१ मई को होने वाली है आपके शिक्षा दायक उपदेशों और पथ प्रदर्शक अवस्था से लाभ उठावेगी। और इस प्रकार से वह आत्मिक विकास प्राप्त करेगी जो इस देश की जनता के लिये आवश्यक है।

परमात्मा आप पर अपनी उत्तम बरकतें दे और आपको चिर-काल तक आनन्दित और स्वस्थ, सुरक्षित रक्खे जिससे आप मनुष्य मात्र के उपकार का कार्य और अपने पवित्र कार्य को उत्तमता से समाप्त कर सकें।

डरबन
१८ मार्च १९३४

हस्ताक्षर वी० एम० पटेल
प्रेसीडेण्ट
हिन्दू महा सभा

Extract from Murcury 19. 3. 1934.

Welcome Pandit Mehta Jaimini

Large Gathering of Indian in Durban.

The Indian community crowded the Royal Picture Palace, Victoria Street, Durban, yesterday afternoon, when a public reception was given to the distinguished visitor Pandit Mehta Jaimini B. A. L. L B., M. R. A. S., Ph. D. under the auspices of South African Hindu Mahasabha.

Mr. B M. Patel President of the Mahasabha was in the chair, supported by Messrs S. R. Pather and T. M. Naicher, joint hon. secretaries.

Among those present were Messrs Sorabjee Rustomjee, M. M. Gandhi, Advocate Albert Christopher, M. I. Sultan H. L. Paul, D. P. Desai, V. Lawrence A. M. Padayachee, H. A. Thaker Messrs V. R. R. Moodley Messrs P. R. Pather, D. Satydew H. S. Done. Dr. Freni Manchershaw and G, B. Chetty.

There was also a fair number of Europeans among whom were the representatives of the

local brauch of the Theosophical Society and the Natal Crention Society.

The learned Guru. who was attired in the picturesque yellow robe of the Yogi. was received with solemn acclamation upon arrival. After a welcome had been exteded to him by the chairman the Swami was garlanded, according to oriental custom.

The Pandit after expressing his appreciation for the reception accorded to him, delivered an impessive and interesting lecture upon the ideals of the Vedic religion.

मरकरी समाचार पत्र १९ मार्च १९३४

पंडित जैमिनी का शुभागमन

अर्थात्—कल भारतीय जनता दोपहर के पश्चात् विक्टोरिया स्ट्रीट डरबन के रायल पिक्चर पैलेस में अधिक संख्या में एकत्रित हुई जबकि दक्षिण अफ्रीका हिन्दू महा सभा की अध्यक्षता में प्रसिद्ध विद्वान् यात्री का जनता की ओर से स्वागत किया गया। महाशय बी० एम० पटेल इस वृहद् अधिवेशन का प्रधान था और महाशय एस० आर० पाथर तथा टी० एम० नेकर मंत्री सभा उसके साथ थे।

जनता में सोहराब रुस्तम जी, मनीलाल गांधी, अलबर्ट

कस्टोफर, मिस्टर पाल, डी० पी० देसाई, मिस्टर लारैन्स, मिस्टर थैकर, मिस्टर माडले, डाक्टर सत्यदेव आदि थे। इनके अतिरिक्त कुछ युरोपियन लोग भी थे जिनमें अधिकतया थियोसोफिकल सोसाइटी के सदस्य और श्मशान भूमि सभा के सदस्य थे। विद्वान पंडित का जो चित्ताकर्षक पीले भेष में सुशोभित था—पहुँचने पर तालियों की गूंज से सत्कार किया गया। जब प्रधान सभा स्वागत भाषण समाप्त कर चुका तो पूर्वी रिवाज के अनुसार आपको फूलों के हार पहनाये गये।

पंडित जी ने इस सन्मान और स्वागत का धन्यवाद देने के पश्चात एक मनोरंजक और प्रभावशाली व्याख्यान वैदिक धर्म के आदर्शों पर दिया।

इसी प्रकार अखबार इण्डियन ओपीनियन ने अपने २३ मार्च के अङ्क में निम्नलिखित लेख मुद्रित करके प्रकाशित किया है।

Indian Openion 23. 3. 1934.

Welcome to Pundit Mehta Jaimini

Large Gathering in Durban.

A welcome reception was given in honour of Pandit Mehta Jaimini, B. A. L L. B., M. R. A. S. Ph. D., last Sunday at the Royal Picture Palace, Victoria Street, Durban, under the auspices of the South African Hindu Maha Sabha.

Mr. B. M. Patel. President of the Maha Sadha, was in the chair, supported by Messrs. S. R. Pather and T. M. Naicker, joint hon. secretaries.

The hall was fully packed to hear the distinguished visitor. There was a fair number of ladies present and a fair number of Europeans was also present.

The chairman cordially welcomed the Panditji and garlanded him. After several speeches were made suitable to the occasion the Punditji rose to reply and was greeted with applause.

Punditji said he was glad to see that Indians though they had come to this country very many years ago, when India had hardly any facilities for higher education, had still retained their ancient traditons. After expressing his thanks for the cordial welcome he had recived the Punditji lectured both in English and Hindustani on the Ideals of Hinduism.

The Punditji delivered another lecture on Monday night at the Parsee Rustomjee Hall and his lecture on Tuesday was cancelled owing to his indisposition.

अनुवाद इंडियन ओपीनियन २३ मार्च १९३४

पंडित जैमिनी महता का सत्कार

डरबन में भारी समूह

चूंकि यह लेख भी समाचार पत्र के अनुसार है इसलिये इस के अनुवाद को प्रकाशित करने की हम आवश्यक्ता नहीं समझते। पाठक इसे भी उसके ही अनुसार समझें।

१९ मार्च को रुस्तम जी हाल में भारत की संस्कृति पर व्याख्यान दिया जिसे जनता ने बहुत पसंद किया और वह अत्यन्त प्रभावित हुई। २० मार्च को मलेरिया हो जाने के कारण २४ मार्च तक कार्य न कर सका। इसलिये २५ मार्च को तामिल इंस्टीट्यूट में नवयुवक सभा की ओर से सत्कार हुआ और मैंने 'संसार का आगामी धर्म क्या होगा' इस विषय पर व्याख्यान दिया जिस में सिद्ध किया कि वैदिक धर्म ही संसार को शान्ति देगा और संसार में फलेगा।

२७ मार्च को दक्षिण अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा ने मेरा स्वागत किया और तामिल इंस्टीट्यूट में मेरा व्याख्यान वैदिक धर्म के महत्व पर हुआ। इस व्याख्यान को सुनकर जनता बहुत प्रभावित हुई। स्वामी भवानी दयाल ने जनता से मुझे परिचिय कराया और स्वागत किया।

२८ मार्च को रुस्तम जी हाल में भारत की संस्कृति की विशेषता पर व्याख्यान हुआ जिसमें मैंने संतोष, सबसे प्रेम, सेवा भाव,

श्री० तिलकधारी

आप दक्षिण अफ्रीका के सुयोग्य कार्यकर्त्ता हैं। आपने वैदिक धर्म प्रचार में बड़ी सहायता पहुंचाई।

क्षमा भाव और आत्मिक महानता पर बलपूर्वक कहा। जनता इस व्याख्यान से बड़ी प्रसन्न हुई।

३१ मार्च को मेरा व्याख्यान भारत की संस्कृति का यूनान पर क्या प्रभाव पड़ा हुआ। लोग इससे भी बड़े प्रभावित हुये।

इस प्रकार मैंने मार्च के १५ दिन में कुल आठ व्याख्यान डरबन में दिये। चार दिन तक बीमार रहा और चार दिन व्याख्यानों का प्रबंध न हो सका। हिन्दू महा सभा ने पहिले दिन टाउनहाल का किराया और विज्ञापन छपाई और फूलों के हार जो चांदी के तारों से सुशोभित थे, सब पर १३५ रुपया व्यय किया। जो सभा सत्कार के लिये फूलों के हार तैयार करती है उसका व्यय २० रुपये से कम नहीं होता। विज्ञापन छापने का व्यय इससे पृथक है।

अप्रेल मास में प्रचार

पहली अप्रेल को आर्य यङ्गमैन्ज सोसाइटी (नवयुवक आर्य सभा) की ओर से तामिल इंस्टीटयूट में मैंने एक वेद मन्त्र की व्याख्या की और बताया कि अग्नि शब्द का अर्थ वेद में पुरुषार्थ, प्रकाश, पवित्रता और परोपकार के हैं। इस व्याख्या को जनता ने बहुत पसंद किया।

३ अप्रेल को सूरत ऐसोसियेशन हाल में हिन्दू ऐसोसियेशन ने सत्कार किया और मेरा व्याख्यान हिन्दू जाति की उन्नति के उपायों पर हुआ।

४ अप्रेल को गांधी हाल में 'भारत की संस्कृति का प्रभाव, मिश्र और अफ्रीका पर क्या पड़ा' विषय पर मेरा व्याख्यान हुआ जिसमें मिस्टर मूरस बैब प्रधान लाइब्रेरी (Liberaries) सोसाइटी प्रधान बनाये गये। आपने भी प्रशंसात्मक शब्दों में भाषण किया।

५ अप्रेल को तामिल इंस्टीटयूट में नवयुवकों के कर्तव्य पर व्याख्यान हुआ। ७ अप्रेल को एक व्याख्यान 'अमेरिका में भारत की संस्कृति का प्रभाव' विषय में गांधी हाल में ३ बजे से ४॥ बजे तक दूसरा सूरत ऐसोसियेशन हाल में कृष्ण की बाँसरी पर हुआ। जनता ने इन दोनों व्याख्यानों को बहुत पसन्द किया। समाचार पत्र एडवरटाइज़र ने जो लेख उस पर लिखा था वह आगे दिया जा रहा है।

८ अप्रेल को तीन व्याख्यान हुये पहिला व्याख्यान मारवल में सोशल सोसाइटी में हुआ। मिस्टर गार्लिंटन महोदय प्रधान सभा थे। आपने मेरा व्याख्यान बहुत पसंद किया। तत्पश्चात् ३ बजे से ४ बजे तक काऊमेज़ समाज में आर्य समाज के सिद्धान्तों पर व्याख्यान हुआ। उसमें स्वामी भवानी दयाल भी सम्मिलित हुये। रात्रि को तामिल इंस्टीटयूट में 'नवयुवक और देश भक्ति' विषय पर व्याख्यान हुआ। एक ही दिन में तीन स्थानों पर व्याख्यान हुये।

९ अप्रेल को सूरत ऐसोसियेशन हाल में 'हिन्दू जाति की अवनति के कारण' विषय पर हुआ। १० अप्रेल को इन कारणों के उपाय क्या हैं इस विषय पर हुआ। ११ अप्रेल को रुस्तम जी हाल में 'भारतीय संस्कृति का प्रभाव जर्मनी पर' इस विषय पर

व्याख्यान हुआ। मिस्टर ग्रैम एम० ए० प्रोफेसर ने प्रधान पद को स्वीकार किया। १२ अप्रेल को सूरत ऐसोसियेशन हाल में 'जावा में रामायण' विषय पर व्याख्यान हुआ जिसे लोगों ने बहुत पसंद किया। १४ अप्रेल को 'भारत की संस्कृति का प्रभाव इङ्गलैण्ड पर' इस विषय पर हुआ और उसके बाद तामिल इंस्टीटयूट में जाकर व्याख्यान दिया।

१५ अप्रैल को तीन व्याख्यान हुये। पहिला क्लैरोड में वैदिक धर्म के महत्व पर, दूसरा ओरियण्टल क्लब में २ बजे से ३॥ बजे तक हिन्दू मुसलिम एक्यता पर हुआ। मुसलमान इस व्याख्यान से अत्यन्त प्रभावित हुये। तीसरा व्याख्यान रात को तामिल इंस्टीटयूट में वैदिक धर्म और बुद्ध धर्म पर हुआ। यह तीनों व्याख्यान बहुत पसंद किये गये और जनता अत्यन्त प्रभावित हुई।

१६ अप्रेल को सूरत ऐसोसियेशन हाल में ओ३म् और गायत्री मंत्र की व्याख्या पर व्याख्यान हुआ। १७ अप्रेल को कृष्ण भगवान की बांसुरी पर पहिले व्याख्यान का शेष भाग हुआ। १८ अप्रेल को 'भारत की संस्कृति का प्रभाव फ्रांस और इटली' पर हुआ। मिस्टर शमोई एम० ए० बैरिस्टर ने प्रधान पद को स्वीकार किया और भी बहुत से अंग्रेज लोग आये। यह महाशय फ्रांस निवासी बड़े विद्वान् सज्जन हैं। आप मेरे व्याख्यान से बड़े प्रसन्न हुये।

१९ अप्रेल को 'इंडोनेशिया में भारतीय संस्कृति का प्रभाव' विषय में सूरत ऐसोसियेशन हाल में व्याख्यान हुआ जिसे जनता ने

बहुत पसंद किया । २० अप्रेल को दो व्याख्यान हुये । पहिला स्त्री समाज में स्त्रियों के आदर्श पर ३ से ४ बजे तक हुआ । दूसरा व्याख्यान स्ठनम की क्लब में नवयुवकों के कर्तव्य पर हुआ । २१ अप्रेल को दोपहर के समय स्ठनम के स्कूल में भारतीय नवयुवकों के कर्तव्य और देश भक्ति पर हुआ । रात्रि को रुस्तम जी हाल में भारत की राग विद्या पर व्याख्यान हुआ ।

२२ अप्रेल को १० बजे से ११ बजे तक सी काऊ लेक में वैदिक धर्म के आदर्श पर व्याख्यान हुआ । इसके बाद दो बजे हम यहां से रवाना होकर सामघहड़ गये । वहां आठ दिन ठहरे और २८ अप्रेल तक १० व्याख्यान और तीन स्कूलों में पांच व्याख्यान कुल १५ व्याख्यान दिये । वैदिक धर्म सभा ने मुझे दो बार अभिनन्दन पत्र और सम्मान पत्र दिये जो अंग्रेजी में थे । उन को भी यहां दर्ज करता हूं । मार्ग में एक व्याख्यान कोलघाट में दूसरा वरलहम में दिया । लोग वहुत प्रसन्न हुये । उनमें अंग्रेज भी सम्मिलित होते रहे ।

२९ अप्रेल को डरबन पहुँच गये । प्रातः १० बजे से ११ बजे तक सी काऊ लेक (See Cow Lake) स्कूल में गृहस्थ आश्रम के महत्व पर हुआ । दोपहर को ३बजे से पाँच बजे तक काऊभास में जो डरबन से ५४ मील दूर है, स्कूल में स्त्रियों के आदर्श पर हुआ उसमें बहुत से अंग्रेज और लेडीज सम्मिलित हुईं । यह व्याख्यान बहुत पसंद किया गया ।

रात्रि को मेरा व्याख्यान तामिल इंस्टीटयूट में आर्य नवयुवक

सभा की ओर से 'रामायण से हमें क्या शिक्षायें मिलती हैं' विषय पर हुआ ।

३० अप्रेल को दो बजे यहां से चलकर ५ बजे मोटर द्वारा पीटरमार्टिज़बर्ग में पहुंच गये । वहां रात को टाउन हाल में जो जनता से खचाखच भरपूर था, जिसमें बहुत से अंग्रेज़ भी सम्मिलित थे—मुझे पहिले अभिनन्दन पत्र दिया गया । फिर मैंने धन्यवाद देकर वैदिक धर्म की महत्ता पर व्याख्यान दिया । लोगों ने बहुत पसंद किया ।

इस प्रकार इस मास में मैंने कुल ४१ व्याख्यान दिये । ३० दिन में ४१ व्याख्यान आज तक किसी उपदेशक ने यहां आकर नहीं दिये । इन व्याख्यानों का जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा ।

Natal Advertiser 5-4-34

Age-old Influence Of India

Fascinating Lecture By Pundit

India as the first coloniser of Africa and the founder of Egypt was the subject of a lecture given by Pundit Mehta Jaimini, B. A. L. L. B. M. R. A. S., Ph. D., Vedic missionary, at the Parsee Rustomjee Hall last night. The lecture was given under the auspices of the M. K. Gandhi Library Hall Committee, and Mr. Maurice Webb presided over crowded attendance.

The Pundit took his hearers back to the time when the face of the world was changed, referring to Gregory's Geography, page 183, where it is stated "that the equatorial plateau of Africa was once connected with India by a land which occuqied the northern part of the Indian Ocean, being called Lemuria and extending from South America as far as Australia.

He also quoted from Wilford's Asiatic researches to the effect that the Hindu ancient Puran asserted that the descendants of Prince Kush son of Rama, migrated to Africa and gave to certain settlements the names of their ancestors —Nubia, Ethopia and Abyssinia Not only the land of Egypt and countries bordering on the Nile but even the whole of Eastern and Northern Africa had formerly the appellation of Aryia from the numerous settlements of Aryans established there.

In the Middle Ages the historical evidence said the lecturer, showed that Indians had commercial relations with Africa some 1, 400 years B. C. He quoted extracts proving this contention, and also showed that many words in Bantu and Swahili dialects were derived from

Sanskrit words, while names of ancient rivers and mountains were also corrupt forms of Sanskrit names.

The effect of Indian culture on Egypt was revealed in their architecture, religion and arts, for the old civilisation of Egypt was the direct outcome of the still older one of India. Even the word Egypt comes form "Ajapat," an Indian Prince in the solar dynasty and the word Nile came from another name in the Indus Nilab (the blue water).

On the religious aspect there were in Egypt three gods-Osiris, Hor and Asthor, whose functions were similar to the triads of the Hindus. Even their traditions of deluge and creation of the world resembled the story given in Shatpatha Brahman.

नैटाल एडवर टाइज़र ५ अप्रेल १९३४

मनोरञ्जक व्याख्यान

भारत का अत्यन्त प्राचीन प्रभाव

महता जैमिनी वैदिक मिश्नरी ने कल रात को रुस्तम जी हाल में इस पर व्याख्यान दिया कि भारत ने ही पहले अफ्रीका को बसाया और मिश्र की नोव स्थापित की। मिस्टर मारस वैब ने

प्रधान पद को स्वीकार किया। श्रोतागण से विशाल भवन भरपूर था। आपने ग्रैगोरी के भूगोल पृष्ठ १३५ का प्रमाण उद्धृत करते हुये वर्णन किया कि अत्यन्त प्राचीन काल में अर्थात् हिम काल में पूर्व अफ्रीका का प्रान्त जो समान रेखा पर है, भारत के साथ मिला हुआ था। भारत सागर का तमाम उत्तरी भाग थल था। यह समस्त भूमि दक्षिण अमेरिका से लेकर आस्ट्रेलिया तक एक महा खण्ड कहलाता था। जिसका नाम लैमोरिया था।

आपने विलफोर्ड साहब की एशियाटिक रिसर्चिस नाम की पुस्तक से भी प्रमाण दिये जिसने पुराणों के आधार पर वर्णन किया है कि राम के पुत्र महाराजा कुश की संतान ने भारत से प्रस्थान किया और नोबिया, अथोपिया और ऐबीसोनिया में अपने उपनिवेश बनाये और अपने पूर्वज के नाम पर उन सब का नाम मिलाकर कुश द्वीप रक्खा। न केवल मिश्र किन्तु नील नदी के तट पर तमाम प्रान्त पूर्वी और समस्त उत्तरी अफ्रीका का नाम मिला कर आर्य रक्खा गया क्योंकि आर्य लोगों ने ही वहां बहुत से उपनिवेश आबाद किये थे।

ऐतिहासिक घटनाओं से पता चलता है कि मध्य काल में ईसा से १४८० वर्ष पूर्व भारतीय लोग अफ्रीका के साथ व्यापार का सम्बन्ध रखते थे। आपने इस विषय पर कई उदाहरण दिये और यह भी सिद्ध किया कि सुहेली और बन्तो भाषाओं में कई शब्द संस्कृत भाषा के निकले हुये पाये जाते हैं और नदियों और पर्वतों के प्राचीन नाम संस्कृत भाषा के अपभ्रंश हैं। मिश्र पर भारत का प्रभाव, वहाँ की शिल्पकारी, हुनर और धर्म ग्रन्थ में

पाया जाता है क्योंकि मिश्र की प्राचीन सभ्यता भारत की उससे भी प्राचीन सभ्यता से निकली हुई और प्रभावित हुई प्रतीत होती है। शब्द इजिप्ट संस्कृत के अजापत का अपभ्रंश है जो एक सूर्य-वंशी राजा था। नील भारत की सिंध नदी, जिसका नाम नीलाब है अर्थात् काला पानी उससे निकला हुआ है।

धर्म के विषय में मिश्र के लोग तीन देवताओं को मानते हैं। अर्थात् ओसीरिस (ईश्वर का अपभ्रंश है) होर और अशथौर यह तीनों संस्कृत शब्दों और हिन्दू देवताओं के अपभ्रंश हैं और उनके कर्तव्य वही हैं जो हिन्दू देवताओं के हैं अर्थात् उत्पत्ति, पालन और नाश करना। मिश्र निवासियों की प्रलय और सृष्टि उत्पत्ति की गाथायें शतपथ ब्राह्मण की गाथाओं से मिलती जुलती हैं।

Advertiser 7. 4. 1934

In America before Columbus

Pundit Jaimini on Hindu Culture.

Pundit Jaimini delivered a most interesting lecture on "Indian Culture in America" this afternoon, in the Rustomjee Hall.

The Archeological Department, he claims, has proved that America was known to Indians long before its discovery made by Columbus in 1492. Recently Alexander Mill, while unearthing the ruins of Paris, Ohio, in 1925, found a coin

from 10 feet depth and on deciphering it, the name of Utanpad, an Indian prince of the lunar dynasty, was discovered It is said to be 5, 000 years old.

Mr. Pocock, in his "Indian in Greece" says: "The Peruvians and their ancestors apear to be Indians as regards their names and ethnologia-cally and their archiltecture resembles the Hindu style." The Theosophical Journal, March, 1886 says: "The Peruvians, whose Incas boasted of solar descent styled their greatest festival Rama Sitva", (corruption of "Sita, his wife") whence we may conclude that South America was colonised by the same race who imported into the farthest part of Asia the rites and fabulous history of Rama.

The ancient temples in Mexico resemble in architecture and construction those of Java. indo-China and Southern India. Even the sculptures of Budha have been discovered in Mexico.

In "Asiatic Researches." Vol I, ii is stated that Mexicans worshipped the figure made of the trunk of man with the head of the elephant.

The Hindus still worship this deity under the name of Ganesh. Thus it is proved from numerous authorities that tho effects of Indian curture in America were prevalent in ancient times.

Recently, Perry Bernard a citizen of Nayak near the River Hudson, has donated one million dollars to establish a college in New York, under the designation the International Vedic Research College Thus Indian culture is also affecting modern America.

एडवरटाइज़र ७ अप्रेल १९३४

कोलम्बस से पहिले अमेरिका

पंडित जैमिनी का व्याख्यान हिन्दू संस्कृति पर

पंडित जी ने एक अत्यन्त मनोरञ्जक व्याख्यान रुस्तम जी हाल में भारतीय संस्कृति पर दिया। पुरातन विद्या वालों ने सिद्ध कर दिया है कि कोलम्बस के अमेरिका दरयाफ्त करने से बहुत पहिले हिन्दुओं को अमेरिका का बोध था। अलग्ज़ाण्डर मिल जब पारस शहर के खण्डरात की खुदाई कर रहा था तो दस फ़ीट की गहराई पर एक सिक्का मिला जिसको पढ़ने से उत्तानपाद नाम मालूम हुआ। जो भारत में एक चंद्रवंशी राजा का नाम था। यह पांच हज़ार वर्ष की पुरानी बात है।

मिस्टर पोकाक ने "युनान में भारत" पुस्तक में लिखा है कि पीरू के निवासी और उनके पूर्वज हिन्दुस्तानी प्रतीत होते हैं। उन के नाम, उनकी नस्ल और शिलपकारी सब भारतीय प्रतीत होते हैं। चुनाचे 'थियोसोफीकल जनरल' मार्च १८८६ ई० में लिखा है कि पीरू के लोग जिनका ऐनका (Incas) समुदाय अपने आपको सूर्यवंशी कहता है एक त्यौहार मनाते हैं जो राम सीता के नाम से विख्यात है। इससे पाया जाता है कि दक्षिण अमेरिका को इसी नस्ल ने आबाद किया जो राम के भक्त थे और एशिया में निवास करते थे।

मैक्सीको के पुराने मंदिर बनावट और शिलपकारी में जावा और स्याम के मंदिरों से मिलते जुलते हैं जोकि दक्षिणी भारत के मंदिरों के नमूने के हैं। साथ ही बुद्ध भगवान की मूर्तियां भी मैक्सीको से प्राप्त हुई हैं।

एशियाटिक रिसर्च में लिखा है कि मैक्सीको के लोग ऐसे देवता की पूजा करते थे जिसका सिर हाथी का और धड़ मनुष्य का था। हिन्दू इस देवता को गणेश के नाम से पुकारते हैं। इस प्रकार इन प्रमाणों से सिद्ध होता है कि भारतीय संस्कृति का प्रभाव अमेरिका में प्राचीन काल से स्थापित था। वर्तमान समय में पैरी बरनार्ड ने जो नायक (जो हडसन नदी किनारे) का रहने वाला है ३० लाख रुपया अमेरिका में एक कालिज बनाने के लिये दान किया है जिसमें वेद पढ़ाने का प्रबन्ध किया गया है। अतः भारतीय संस्कृति अब भी अपना प्रभाव अमेरिका में डाल रही है।

Indian Opinion April 13th, 1934.

Duties Of The Indian Youth

Pandit Jaimini Speaks To Arya Yuvuk Mandal.

An interesting and instructive lecture on the duties of the Indian youth was delivered by Pandit Mehta Jaimini, the Vedic missionary, who has recently arrived from India, in the Hindu Tamil Institute under the auspices of the Arya Yuvuk Mandal.

Quoting Reverend Marduck, a well-known missionary in Madras, from his work "The three great necessities of India", the learned Pandit remarked that if you want to elevate a nation infuse your ideas in its youth. 'The children of to-day are the nation of to-morrow' is a well-known saying. The dutities of the Indian youth, said Panditji, are threefold, viz: (1) duty towards God, (2) duty towards their society and country, (3) duty towards their parents and elders. But what a pity it is that in our own schools there are no facilities for inculcating the fundamental principles of these duties; the consequent result being that the Indian youth are embracing a foreign civilisation and losing hold of their oriental one. Therefore the first thing we require is a change in the system of our education.

Describing the system of education in different contries the learned Pandit said, our youth are taught three R's i. e. Reading, Writing and Reckoning. After finishing his study the Indian youth cannot stand upon his own legs, he wants some service or job to earn his livelihood. His mentality leads him to slavery and thus he cannot enjoy a life of independence—hence the question of unemployment is vehemently raging in India as well as abroad among the educated youth.

The progress of Japan, the Pandit said, was solely due to the Japanese youth and their system of education which comprises three H's (Head, Heart and Hand) education that Japan has elevated itself to the highest position in the industrial and political sphere. Unlike India more stress is laid there on the development of the mental faculties of the youth, infusing in them the idea of patriotism and serving their country and the last but not the least important, to enable them to earn their living independently by imparting to them the industrial education.

Germany's education, observed Pandiji, according to Mr. Eukin, a great educationalist,

lies in three N's i.e. National, Natural & Neutral education. The boys are taught how to serve their country and nation (2) how to enjoy nature, study it and derive benefit from it. In Germany the boys read in the open air in the natural method which is known as Kindergarten system and not cramming, (3) to be neutral i. e. free from bigotry, imperialism and sectarianism.

In America we find the three M's education, that is Mechanical, Mineral and Mercantile education.

While all the countries are imparting education to their youth in their own right way, the Panditji regretted that Indian leaders are lying dormant with no care of their future generation. He emphasised on the necessity of right education of their youth, which is described by Swami Ram Tirath in his lecture in America. He said that the object of education is and should be to utilise the resources of our Motherland, to purify the character to serve the nation, and to develop our senses and faculties and lastly to elevate the Soul by worshipping God.

Panditji in conclusion appealed to the Indian young men to do their duty. India, he said, is

fettered with the chains of mental, economical and political slavery. It is the duty of the Indian youth whether in India or overseas to shatter the chains into pieces. "Mother India expects her children abroad to love their Motherland. Hence my dear young boys be faithful to your Motherland. You are inheritors of a culture which is not only ancient but fountain-head of all modern cultures. Your legacy is such a sublime philosophy as the modern philosophical schools vie. with it and are the offshoots of that high philosophy, hence be loyal to your Motherland and your civilisation and Mother India will bless your efforts and energetic spirits. Your ideals in Ramayan and Mahabharat are so high that abiding by these precepts you can attract the whole world and brighten the name of India in the eyes of other nations."

इंडियन ओपीनियन १३ अप्रैल १९३४

भारतीय नवयुवकों के कर्तव्य

पंडित जैमिनी का व्याख्यान आर्य युवक मण्डल में

पंडित जैमिनी वैदिक मिशनरी ने जो अभी भारत से आये हैं, आर्य युवक मंडल की ओर से हिन्दु तामिल इंस्टीयूट में एक मनोरञ्जक व्याख्यान दिया। पादरी मारडक का प्रमाण देते हुये कहा

कि भारत में तीन आवश्यक्तायें हैं। भारत के लोगों के तीन कर्तव्य हैं। ईश्वर की ओर, जाति और देश की ओर तथा अपने माता पिता की ओर। परन्तु शोक है कि हमारे स्कूलों में ऐसे कर्तव्य पालन करने की शिक्षा का कोई प्रबंध नहीं है। इसलिये भारतीय नवयुवक पश्चिमी सभ्यता की ओर बहे चले जा रहे हैं। इसलिये पहिली आवश्यक्ता यह है कि पाठ विधि में परिवर्तन किया जाय। फिर पंडित जी ने भिन्न भिन्न देशों की शिक्षा प्रणाली का वर्णन करके कहा कि हमारे देश में केवल लिखना, पढ़ना और हिसाब करना सिखाया जाता है जिसका परिणाम सिवाय नौकरी करने के और कुछ नहीं है। इसी कारण हमारे अन्दर दासत्व के विचार ही उत्पन्न होते हैं। जापान में मस्तिष्क, हृदय (जाति भाव) और शिल्पकारी की शिक्षा दी जाती है। इसलिये उनके अन्दर स्वतंत्रता के भाव होते हैं और वह दासत्व से परे रहते हैं जर्मन में देश भक्ति जाति भक्ति और स्वतंत्रता की शिक्षा दी जाती है। अमेरिका में धातु, कृषि और व्यौपार आदि वस्तुओं की शिक्षा दी जाती है।

आपने कहा कि भारतीय नेताओं को उचित है कि आगामी संतान की उन्नति के लिये ध्यान दें।

आपने स्वामी रामतीर्थ के व्याख्यान का जिक्र किया जो कि आपने अमेरिका में देते हुये कहा था कि शिक्षा का आदर्श यह है कि जीवन को पवित्र बनाया जावे और देश की वस्तुओं से लाभ उठाया जावे।

आपने बताया कि आपकी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और

ज्ञान अति उत्तम है आप उससे पूर्ण लाभ उठावें, उसे अवलोकन करें और अपने देश का नाम उज्ज्वल करें।

INDIAN VIEW 13. 4. 1934.

Pandit Jaimini delivered a very interesting lecture on the "Effects of Indian Culture in America" on the 7th April at 2. 30 p m. in the Rustomjee Hall.

At the outset he said that the Archaeological Department now has proved that America was known to Indians long before its discovery made by Columbus in 1492. Recently Alexander Mill while unearthing the ruins of Paris in Ohio State (U. S. A.) in 1925, found a coin from 10 feet depth and on deciphering it, the name of Utaupad an Indian prince of lunar dynasty was discovered. It is said to be 5000 years back.

Mr. Pocock in his book "India in Greece" p. 174 says: "The Peruvians and their ancestors appear to be Indians as regards their manners and ethnologically and so their architecture resembles the Hindu style of architecture.

The Theosophical Journal of March 1886 says: "The Peruvians whose Incas boasted of

Solar descent styled their greatest festival Ram Sitva (corrup of Sita his wife) whence we may conclude that America was colonised by the same race who imported into the farthest part of Asia the rites and fabulous history of Rama.

(3) The ancient temples in Mexico resemble in architect and construction with those of Java, Indo China and Southern India. Even the sculpture of Budha have been discovered in a part of Mexico.

The ancient Hindus knew both routes i.e. sea route from Ceylon and Bay of Bengal to Java, Borneo and China Sea and thence to Mexico, Central America or Peru; by land passing China and Russia via Isthmus Bering to Alaska and down to Mexico. In those days Bering was not a Strait.

(4) Mr. Taylor in early history of mankind says, "The striking analogy of tortoise myth of North America and India is by no means a matter of new observation. The earth is supported on the back of floating tortoise, the tortoise sinks under and causes a deluge and the tortoise is conceived as being itself the earth floating upon

the face of the deep so the serpent worship was common to both America and India. Their philosophy was also derived from India Their belief in the doctrine of transmigration of soul stamp their philosoph y also as being of Hindu origin. Apart from mythologys, the manners, customs and habits of the Maya people of ancient Western America have very close resmblance to those of the Hindus. Their dress, costume and sandals prove them to be of Indian origin. In Mahabharat and Puran the name of this continent comes Pataldesh (i e. under-feet, antipodes region) and there is mention of going of Vyas and Arjun to that continent in the very old time.

"Asiatic Researches Vol. I" says that Mexicans worshipped the figure made of the trunk of man with the head of the elephant. The Hindus still worship this Deity under the name of Ganesh.

Thus it is proved from the various authorities that the effect of Indian culture in America was prevalent in the ancient time.

Even now Perry Bernard, a citizen of Nayak near River Hudson has donated one million dollars to establish a college in New York under

the designation of International Vedic Research College. A Board of Trust has been organised to conduct the college; the members of that Trust are Mr. Rockwell, ex-Professor of Sanskrit in Havard University, Dr. Bloomfield, Dr. Keith, Dr. Morgan and Jagdeschand Chatterjee, all these persons are distinguished Sanskrit scholars in various universities in U. S. A.

The objects of this college are:—

1. To promote better understanding and appreciation of Vedic Culture.
2. Development of wider interest in literature and language of Vedic origin as an aid to general culture especially to human studies.
3. Systematic study in Aryan, Semetic and other Asiatic allied subjects in the latest archaeological discoveries.
4. To send some students to Benares, and Kashmere (centres of Sanskrit study in India) to learn the Vedas directly from the Indian scholars and spread their translation in America.

Thus Indian culture is effecting America in the modern days also.

INDIAN WIEW 27. 4. 1934.

Indian Culture in Germany.

Pandit Jaimini dilivered his sixth lecture on Indian Culture and its effects on Germany in Rustomjee Hall at 5. 30 p. m. on Wednesday 11th April 1934. The hall was as usual crowded.

The learned Pandit at the outset quoting Max Muller's Rigveda said that Germany was colonised by the Brahmans of India. In Sanskrit letter J is changed with 'Sh" so really German was "Sharman" which is an ephithet applied to Brahmans thus the country was a colony of Sharman people. In support of Max Muller's view he quoted Col. Todd's Annual of Rajisthan 63 wherein it is written that the first habit of Germans on rising was ablution which shows their Eastern origin and not of the cold climate of Germany, as also the loose flowing robe, the long and braided hair tied in a knot at the top of the head, symbol of the Brahmans.

Then the speaker quoted some letters of Dr. Wiese a German scholar who had communication with Swami Dayanand founder of Arya Samaj in 1889 A. D. wherein he writes that we

Germans have material sympathy with India where the cradle of our ancestors stood. In fact the German are the descendants of Aryan blood in direct lineage and have kept much pure in blood and even our language resebles the Aryan still in many ways. Then he quoted Max Muller, Goethe, Schlegal and lastly Schophenhauer the father of German Philosophy who after studying the Upnishads gives his opinian in the preface to his translation of Upnishads. "In the whole world there is no study so elevating and beneficial as that of the Upnishad. It has been the solace of my life and it shall be my solace on my death." Then the speaker quoted many other German Sanskrit professors and research scholars who have studied Sanskrit and published their views on the appreciation and sublimity of Indian culture. He also quoted Von Glassemp. Professor of Sanskrit in Berlin. He wrote a letter to Dr. Tagore wherein he says "I long to visit India once in my life, because there I shall drink off the spiritual wisdom from the original fountainhead (i e. the Vedas).

Lastly the speaker said that Herr Hitler the present Dictator of German Empire has issued a manifesto to the effect that Sanskrit language

should be introduced in all schools and colleges as compulsory subject.

What a great and marvellous achievment of Indian culture in Germany. He also stated that in every German University there are two Sanskrit Professors one has to teach Sanskrit to the pupils; the other being a Research Scholar", whose business is to translate Sanskrit books into German language. In the end the lecturer appealed to the young Indians to study their own culture and propagate it amongst other nations in order that they may appreciate the Indian culture and respect Indians who are inheritors of such a sublime culture.

अखबार इंडियन विक्ज २७ अप्रेल १९३४

जर्मनी में भारतीय संस्कृति

पंडित जैमिनी ने ११ अप्रेल को रुस्तम जी हाल में 'भारत की संस्कृति का जर्मनी पर प्रभाव" छटा मनोरञ्जक व्याख्यान दिया। जनता से भवन भरपूर था। आपने मैक्समूलर के ऋग्वेद की भूमिका से उद्धरण देकर बताया कि जर्मनी का नाम शिरोमणी था। संस्कृत में ज और श परस्पर परिवर्तन हो जाते हैं। यह उपनिवेश ब्राह्मणों ने बसाया था। फिर आपने कर्नल टाड की पुस्तक राजस्थान के इतिहास से बताया कि जर्मनी के लोग प्रातःकाल उठ

कर स्नान करते थे। यह स्वभाव भारत निवासियों का है न कि जर्मन जैसे शीत देश का। वे ढीले वस्त्र पहिना करते थे और सिर पर चोटी रखते थे। ये सब ब्राह्मणों के चिन्ह हैं। फिर आपने जर्मनी के डाक्टर वैज़ के पत्र पढ़कर सुनाये जो स्वामी दयानन्द को १८८० ई० में आपने लिखे थे जिनमें वर्णन किया है कि हम आर्य नस्ल से हैं और हमारा भारत से प्राचीन सम्बन्ध है। हमारे पूर्वज वहाँ से ही आकर यहां आबाद हुये। फिर आपने गैटे, शैलींगज और दर्शन शास्त्र वेत्ता शौपनहार के प्रमाण दिये जिसने भारत के उपनिषदों का अवलोकन करके अपनी सम्मति प्रगट की है कि संसार भर में आत्मा को प्रबोधन देने वाली और लाभदायक पुस्तक उपनिषदों के तुल्य कोई नहीं है। इन्हीं ग्रन्थों ने मेरी आत्मा को शान्ति दी है और मरने के पश्चात भी मुझे इनसे ही शान्ति मिलेगी।

फिर आपने कई जर्मन के संस्कृत विद्वानों का वर्णन किया जिन्होंने संस्कृत पढ़कर भारत की संस्कृति और ज्ञान पर प्रशंसात्मक और अति उत्तम विचार प्रगट किये हैं। अन्त में आपने कहा कि हिटलर जर्मनी के वर्तमान अध्यक्ष ने घोषणा कर दी है कि जर्मन के सब स्कूलों और कालिजों में संस्कृत भाषा का पढ़ाया जाना अनिवार्य कर दिया जावे। साथ ही यह भी बताया कि जर्मन की सब यूनीवर्सिटियों में संस्कृत के दो दो प्रोफेसर हैं। एक का काम शिक्षा देना और दूसरे का संस्कृत ग्रन्थों का आन्दोलन करना है जिससे वह संस्कृत के ग्रन्थों के अनुवाद करके उनसे लाभ उठावें।

———

Natal Witness 30th April 1934.

Philosophy of the East

Dr. Mehta Jaimini to Lecture in City.

Wide travels, high intellectual attainments, and varried activities in the fields of education, religion and philosophy characterise the life of Dr. Mehta Jaimini, in whose honour a reception is to be held in the City Hall, Maritzburg, this evening.

Born in the Punjab in 1861, he was educated in Multan and graduated in 1896, and after passing his L.L. B. in 1899, he commenced legal practice in 1900 and carried on this profession for 20 years. As an ardent worker in the cause of Arya Samaj— a cult founded by that great Hindu religious leader, Dayanand Saraswati— he interested himself in and actively co-operated with movements to widen the sphere of female education in India. He has a virile pen, and his contributions to papers on varied subjects of the day never failed to create public interest. He held the post of president of the Congress Committee of Muradabad for some years.

In 1922, after joining the Hindu College at

Bindravan, he took a decisive step in devoting the rest of his life to the cause of Hindu religion and philosophy. The call of his brethren abroad made a strong appeal to him, and he decided to travel and preach the gospel of Vadantic religion, and give lectures on the philosophy of the East. He first visited Burma in 1923, where he delivered 182 lectures. Mauritius was his next place of mission. In 1926 he toured Siam, Singapore, Malaya, Java and Sumatra, and thereafter he visited Fiji and New Zealand. In 1929 he undertook a tour in the New world, visiting North, Central and South America, besides Trinidad and the adjacent islands. He was well received in America, even high officials praised his work in interpreting India, with her ancient glory, culture and religion in a new light, in a new setting. He also toured China, Japan and Europe and lectured in several places in these countries. Last year he was on a visit to East Africa, and from there he continued his journey to South Africa.

His reputation as a lucid speaker and an exponent of Vedic teachings and of the different systems of Hindu philosophy is fully justified, for very few Hindu missionaries ventured to travel

outside India and endure the hardships of life, and visit every corner of the world where their brethren were found settled, as did Dr. Jaimini, purely as a lobour of love.

Dr. Jaimini, like the great Swami Viveka-Nanda, is a preacher of the ideals of brotherhood of man, and his lectures and sayings have been welcomed by all creeds and nationalities, for in his religious life, religious or racial prejudice finds no room. He is a believer in the ideal of universality of religion, and as a torch bearer of Vedic religion he believes that every soul can find solace and peace in the depths of wisdom taught by the ancient Rishis (Seers) of an anciet India.

A series of lectures is being arranged during the doctors's stay in Maritzburg. Admission will be free to all lectures and a cordial invitation is extended to all to attend.

To-morrow (Tuesday) night at 7. 30 Dr. Mehta Jaimini will deliver a lecture in the H. y. M. A. Hall on "Indian Culture." Mr. F. D. Hugo, the Superintendent of Education, has consented to preside.—R. B. M.

नेटाल विटनैस ३० अप्रैल १९३४ ई०

पूर्व की फ़िलासफ़ी

डाक्टर महता जैमिनी का व्याख्यान शहर में

डाक्टर जैमिनीका जीवन जिसने संसार भर में भ्रमण किया है जो धर्म, फिलासफी और ज्ञान में प्रसिद्ध है और जिसका व्याख्यान शहर के भवन में होने वाला है। आप १८६१ ई० में पंजाब में पैदा हुये। मुलतान में शिक्षा प्राप्त की। १८९६ में बी० ए० पास किया और १९०० में वकील बने। २० वर्ष तक आपने वकालत का कार्य किया। आपकी लेखन शक्ति बड़ी उत्तम है। आपने आर्य समाज के लिये बहुत कार्य किये हैं। आप मुरादाबाद कांग्रेस कमेटी के प्रधान पद पर भी रह चुके हैं। आपने १९२२ से विदेश में भारत के ज्ञान और धर्म फैलाने का कार्य अपने हाथ में लिया है। पहिले आपने ब्रह्मा में एक वर्ष प्रचार किया और १८२ व्याख्यान वहां दिये। फिर आप मारीशस गये जहां आपने २८५ व्याख्यान दिये। १९२६ ई० में आपने स्याम, मलाया, सुमात्रा, सिंगापुर में जाकर प्रचार किया। फिर फ़ीजी, न्यूज़ीलैण्ड, पानामा और अमेरिका के तीनों भागों में जाकर प्रचार किया।

अमेरिका में आपका बहुत सत्कार हुआ। वहां के बड़े बड़े राज्याधिकारियों और कर्मचारियों ने आपके काम की अत्यन्त प्रशंसा की फिर आपने चीन, जापान, जावा, बाली की यात्रा की और वैदिक धर्म का नाद वहां भी बजाया। आपने फिर युरोप और पूर्वी अफ्रीका में जाकर प्रचार किया। आपकी व्याख्यान शैली

बहुत सराहनीय है। भारत के तत्व ज्ञान और धर्म्म पर, विदेशों में एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाकर प्रचार करने वाले बहुत कम उपदेशक होंगे। आप स्वामी विवेकानन्द के समान भ्रातृ-प्रेम और मैत्री-भाव के प्रचारक हैं। आपके व्याख्यान तमाम सम्प्रदाय और सब धर्म अवलम्बी बड़ी प्रशंसा और श्रद्धा से सुनते हैं क्योंकि आपके अन्दर कोई पक्षपात या किसी अन्य धर्म से विरोध नहीं है। आप वैदिक धर्म की महानता को संसार पर प्रगट करते हैं और प्रचार करते हैं कि प्रत्येक मनुष्य पवित्रता और ईश्वर ज्ञान से मोक्ष और शान्ति प्राप्त कर सकता है। आपके मारटिज़बर्ग के ठहरने के समय में व्याख्यानों का लगातार सिलसिला हिन्दू यङ्ग मैन्ज़ एसोसियेशन के भवन में प्रबन्ध किया गया है। कल आप का व्याख्यान हिन्दू संस्कृति पर रात के ७॥ बजे होगा और मिस्टर हैगो डाइरैक्टर शिक्षा विभाग प्रधान पद को स्वीकार करेंगे।

Lower Tugela District Hindu Veda Dharma Sabha.

P. O. Box 71
Stanger, Natal
22nd April, 1934.

To Pandit Mehta Jaimini

B. A., L L. B., M. R. A. S., Ph. D.

Sir,

On behalf of the officials and members of the Lower Tugela District Hindu Veda Dharma

Sabha, I have the pleasure to extend to you a most cordial and hearty welcome to this historic town of Stanger.

We are fully aware of the great sacrifice you have made and are still making, in order to spread your message of Love and Unity, and in expounding the tenets of the Vedic Religion to your Countrymen in various parts of the world. We are conscious of the fact that you have not cofined your labours within the circle of your Countrymen only but have spread no pains in enlightening foreigners and dispelling doubts from the minds of the western world.

We feel deeply indebted to you for the honour you have done us in accepting our invitation to deliver a series of Lectures in our town. We trust you will, by your masterly exposition teach us the sublimities of that great fountain head of religions—the Vedas—and revive in us a genuine interest in Indian culture, Philosophy and Religion.

We hope and pray that your stay with us will be a most enjoyable one and that your mission in South Africa will meet with unqualified

success. May the Lord grant you the strength and power to continue the noble work you have undertaken for many years to come.

I beg to remain
Sir,
Yours very sincerely
"N. BODASING"
President.

लोअर टुगला ज़िला हिन्दू वेद धर्म सभा का शुभागमन पत्र

श्रीमान् जी !

लोअर टुगला ज़िला की हिन्दू वैदिक धर्म सभा के सदस्यों और अधिकारियों की ओर से मैं आपका अत्यन्त हार्दिक शुभागमन इस ऐतिहासिक नगर स्टाँगर (Stanger) में आने के लिये करता हूँ । हम आपके इस त्याग से भले प्रकार परिचित हैं जो आप प्रेम और एकयता के संदेश को फैलाने और वैदिक धर्म के सिद्धान्तों को दुनियां के भिन्न भिन्न स्थानों में पहुंचाने के लिये कर रहे हैं । हम इस बात से भी परिचित हैं कि आपने कार्य को केवल अपने विदेशी भाइयों के सुधार तक सीमाबद्ध नहीं किया किन्तु अन्य जातियों को भी वैदिक धर्म का प्रकाश देने और पश्चिमी जातियों की मनोवृत्ति परिवर्तित करने और उनकी शंका निवारण करने में अति उत्तम कार्य किया है । हम आपका अत्यंत

धन्यवाद करते हैं कि आप हमारे निमंत्रण को स्वीकार करके यहां कई व्याख्यान देने को उद्यत हुये हैं। हमें निश्चय है कि आप धर्म, वैदिक सभा, वैदिक संस्कृति और वैदिक फिलासफी के उत्तम विचारों और विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानों से हमारी आत्माओं को तृप्त करके जायेंगे।

हम जानते हैं कि दक्षिण अफ्रीका में आपका पवित्र कार्य सफलता को प्राप्त होगा। परमात्मा आपको आरोग्यता और दीर्घायु प्रदान करें जिससे हम अपनी शुभ कामना को पूर्ण कर सकें।

आपका शुभचिन्तकः—
नरायणसिंह बोधसिंह
प्रधान वैदिक धर्म सभा स्टांगर

२२ अप्रेल १९३४

Lower Tugela District Hindu Veda Dharma sabha.

MAGAN LAL PATEL,
Hon. Secretary,
P. O Box 71,
STANGER.

To Pundit Mehta Jaimini,
B. A., L L. B., M. R. A. S., Ph. D.

DEAR SIR,

On behalf of the Member and Officials of the Lower Tugela District Hindu Veda Dharma

Sabha we, the undersigned do hereby wish to express to you, our deep and profound gratitude for having honoured us with your presence in our midst, and also for having delivered to us a series of the most interesting and useful lectures we have ever heard.

You have acquainted us with the knowledge of our ancient Religion, Literature and Culture, and have created in us a genuine love for our Mother Country, Mother Tongue, and Religion. You have also made us realise that the wonders of the teachings of the Vedas can only be fully understood and appreciated by a thorough knowledge of our language.

We highly appreciate the sound and constructive advice you have offered us, and we feel sure that your visit to our District will do much to encourage our Indian Brethren to live up to the ideals of our ancient Religion and Culture.

It is with real regret that we have to say farewell to you, for we would have liked to have had you with us always as our teacher and spiritual adviser, but we know that your mission will not allow you to remain here always, and

we therefore pray, that the Almighty may spare you for many years in order that you may carry out the noble work you have undertaken.

In the name of our Sabha, we, humbly beg you to accept the accompanying as a humble token of our love and reverence for you.

In conclusion, we hope and pray that your labours may be crowned with real success.

We beg to remain, Sir,
Yours very sincerly

Stanger
28th April, 1934.

N. BODASING
President.

MAGAN LAL PATEL
Hon. Secretary.

मई मास में मेरा प्रचार

पहली मई को मैंने यंगमैन्स ऐसोसियेशन हाल में भारतीय सभ्यता पर व्याख्यान दिया। हीगो महोदय डाइरेक्टर शिक्षा विभाग ने प्रधान पद को स्वीकार किया। इस सभा में बहुत से अंग्रेज तथा भारतीय लोग एकत्रित थे। मैंने एक घंटा पंद्रह मिनट में इस विषय को अंग्रेजी में और १५ मिनट में हिन्दुस्तानी में कह कर समाप्त किया। मि० हीगो ने बहुत प्रशंसा के शब्दों में धन्य-वाद दिया और भारतीय संस्कृति पर प्रशंसनीय टिप्पणी करते हुये कुछ शब्द कहे।

२ मई को नवयुवकों के कर्तव्य पर और ३ मई को संसार का आगामी धर्म क्या होगा इस विषय पर व्याख्यान हुये। महाशय नयडो बैरिस्टर ने प्रधान पद को स्वीकार किया। ४ मई को डरबन में इण्डो युरोपियन सभा ने मेरे व्याख्यान का प्रबन्ध कर रक्खा था। यह सभा आनरेबिल शास्त्री ने १९२७ ई० में स्थापित की थी जिसके द्वारा भारतीय और गोरे लोगों के बीच परस्पर प्रेम उत्पन्न हो और वह एक दूसरे के संसर्ग में आने से एक दूसरे के विरुद्ध मिथ्या विचारों में न पड़ें। मेरे व्याख्यान का विषय "संसार में भारत की संस्कृति का भाग" था। महोदय रेयम साहब एम० ए० प्रोफेसर कालिज ने प्रधान पद को स्वीकार किया। इस सभा में गोरे लोग अधिक थे। डरबन के सब बड़े २ अधिकारी और अन्य गोरे उपस्थित थे।

मैंने अनेकों प्रमाणों से भारत की संस्कृति जो अन्य देशों में फैली हुई है, प्रगट की। प्रधान सभा ने व्याख्यान की बड़ी प्रशंसा की और बहुत प्रेम और सत्कार से सभा से विसर्जित हुआ।

५ मई को दोपहर के बाद स्त्रियों की सभा में व्याख्यान हुआ। यह व्याख्यान भी अंग्रेजी में था। यहां भारतीय स्त्रियां अंग्रेजी भाषा को भली प्रकार समझती हैं। रात को मिस्टर डेविड की प्रधानता में एक व्याख्यान हुआ जिसका विषय था कि शव को जलाना चाहिये या गाढ़ना। मैंने ऐतिहासिक, धार्मिक और वैज्ञानिक तथा वैद्यक रसायन शास्त्र के अधार पर इसकी व्याख्या की और बताया कि मृतक को जलाने में ही लाभ है। इस व्याख्यान की मि० डेविड साहब ने बहुत प्रशंसा की।

६ मई को मैंने तीन व्याख्यान दिये। पहिला व्याख्यान रिचमस शाह के टाउन हाल में प्रेजीडेण्ट टाउन कांउसिल के प्रधानत्व में हुआ। इसमें बहुत से अंग्रेज सम्मिलित थे। व्याख्यान का विषय वैदिक धर्म था। दो अंग्रेजों ने कुछ प्रश्न भी किये। उन्हें संतोष-जनक उत्तर दिये गये। इसके बाद ३ बजे से साढ़े चार बजे तक सदरलैण्ड में आकर व्याख्यान दिया। यह व्याख्यान भी वैदिक विशेषताओं पर था। यहां पर पहिले समाज स्थापित था परन्तु अब शिथिल हो गया है तो भी सामाजिक लोगों ने बचन दिया कि हम उसे पुनर्जीवित करेंगे।

वहां से लौटकर रात को साढ़े सात बजे से साढ़े आठ बजे तक फिर वैदिक धर्म ऐसोसिएशन के हाल में आकर व्याख्यान दिया जिसका विषय "हिन्दू जाति के जीवन का आदर्श" था। लोग अत्यन्त प्रसन्न हुये। शनिवार को दो और रविवार को तीन व्याख्यान हुये।

८ मई को फिर 'हिन्दू जाति की उन्नति के उपाय' विषय पर व्याख्यान हुआ लोग बहुत प्रभावित हुये। ९ मई को पार्लियामेंटरी डिबेटिङ्ग सोसाइटी (Parliamentary Debating Society) में कृष्टी हाल में मुझे निमंत्रित किया गया। मैंने इस विषय पर प्रस्ताव उपस्थित किया कि भारतीय लोगों और अफ़रीकन गोरों के बीच परस्पर प्रेम और उत्तम सम्बन्ध होना चाहिये। राजमंत्री ने मेरा परिचय कराया और पार्लियामेंट के सदस्यों और जनता ने तालियों की गूंज से मेरा सत्कार किया। मैंने आध घंटे में अपना व्याख्यान समाप्त किया और बताया कि भारतीयों ने इस उपनिवेश

को आबाद और सरसब्ज़ करने में महान कार्य किया है। भारतीयों के पुरुषार्थ, सत्य व्यौपार और व्यवहार के लिये मैंने बड़े २ प्रसिद्ध अंग्रेजों के प्रमाण दिये। भारत ने महान युद्ध में और बोअर वार (युद्ध) में जो सेवा बृटिश राज्य की है, उसका भी वर्णन किया। भारत और अफ्रीका के व्यापार से जो सरकार को लाभ पहुँचा है, उसको भी प्रगट किया लार्ड लैन्सवरी, मंत्री उपनिवेष बिभाग ने जो भाषण सन् १८७४ ई० में भारतीयों की पुष्टि में विलायत में किया था वह पढ़कर सुनाया। पार्लियामेंट के सदस्य सुनकर बड़े प्रसन्न हुये।

मेरे उत्तर में दो तीन अंग्रेज़ों ने शंकायें कीं। १० मिनट में उनको संतोष जनक उत्तर दिये गये और वह प्रस्ताव अधिक संख्या की सम्मति से पास हो गया। राजमंत्री ने उत्तम व्याख्यान की अत्यन्त प्रशंसा की और धन्यवाद किया। इस व्याख्यान से गोरे लोगों पर मेरा प्रभाव अङ्कित हो गया।

१० मई को "संसार का आगामी धर्म क्या होगा" विषय पर जो व्याख्यान शेष रह गया वह पूरा किया चूंकि उसे सुनने के लिये जनता बड़ी इच्छुक थी।

११ मई को भगवान कृष्ण के जीवन और गीता की शिक्षाओं पर व्याख्यान दिया। जनता अत्यन्त प्रभावित हुई। १२ मई को दूसरे भवन में पुनर्जन्म के सिद्धान्त पर व्याख्यान हुआ। गोरे लोग भी सम्मिलित हुये जोकि मेरे व्याख्यान से बड़े प्रभावित हुये। १३ मई को दो व्याख्यान हुये। पहिला व्याख्यान गिरे टाउन में

आकर दिया जो मारटिजबर्ग से ४७ मील की दूरी पर है । वहाँ के मेयर (Mayor) महोदय ग्रीनहम् साहब ने प्रधान पद को स्वीकार किया । इसमें गोरे और स्त्रियाँ अधिक संख्या में सम्मिलित हुये । वैदिक धर्म के गौरव पर व्याख्यान हुआ । व्याख्यान की समाप्ति पर गोरों ने कुछ प्रश्न भी किये जिनके संतोष जनक उत्तर दिये गये ।

तत्पश्चात् सब गोरे लोगों को विष्णु मंदिर में चाय पिलाई गई । वहां फिर आध घण्टा तक मुझसे गोरे लोग और उनकी स्त्रियां प्रश्न करते रहे । मैं उन सबके उत्तर संतोषजनक देता रहा। यहां सिवाय स्वामी शंकरानन्द जी के और कोई उपदेशक नहीं आया था । लोग प्रचार के लिये बहुत उत्सुक हैं । गोरे लोगों ने मुझे अपने मध्य में बिठाकर फ़ोटो खिंचवाया । वे मेरे व्याख्यान से बड़े प्रभावित हुये और इच्छा प्रगट की कि एक बार फिर उनके मध्य में आकर प्रचार करूं । शाम को हम लौट आये और रात्रि को यङ्गमैंस ऐसोसियेशन हाल में आर्य समाज के उद्देश्यों पर व्याख्यान दिया । जनता ने बहुत प्रेम और श्रद्धा से सुना ।

१४ मई को मेरा अन्तिम व्याख्यान वेद मंत्र की व्याख्या पर हुआ । व्याख्या तो पूरी न हो सकी परन्तु व्याख्यान का जनता पर बहुत उत्तम प्रभाव पड़ा । प्रधान महोदय ने मेरे ऐसे विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानों के लिये धन्यवाद किया और फिर फूलों के हार से सत्कार किया । इस प्रकार पीटरमारटिजबर्ग और उसके आसपास १५ दिनमें १८ व्याख्यान दिये इनका जनता पर बहुत उत्तम प्रभाव पड़ा । समाचार पत्रों ने जो लेख और टिप्पणियां उन व्याख्यानों

पर दी हैं उनको यहाँ सम्मिलित करता हूं । २० अप्रैल नैटाल विटनैस का लेख पहिले आ चुका है । उसी पत्र का पहली मई का लेख इस प्रकार है:—

Natal Witness 1st. may 1934.

Christ Would Not be Eligible ?

Dr. Jaimini's Lecture on the Vedas

Dr, Mehte Jaimini, B. A., the eminent Indian sage and world missionary, lectured to a large assembly of Indians last night at the City Hall, Meritzburg. There was a fair sprinkling of Europeans and natives.

Dr. Jaimini talked, in a simple and effective manner, on "Beauties of the Vedas" in which he groped back into the earliest days of antiquity and marshalling one European Sanskrit scholar after another claimed that the Vedas were the foundations of all religions. languages, science and culture. Early European Sanskrit writers had not correctly translated the Vedas. The more they studied the Vedas the more they were convinced of their remote antiquity. The Vedas were the oldest books in the world and revealed India as the cradle of the human race.

The lecturer went on to claim that as God provided sustenance for the infant. He had also provided spiritual knowledge for human beings through the Vedas. It had to be admitted that a human being possessed a soul as well as a body. Science, though it could prove that an object was twenty million years old, could not create the leg of a fly.

The knowledge with which men could make their life perfect was given by God in the Vedas. A study of the Vedas would dispel the error that they represented the worship of idols, trees, stones and so forth.

In the Vedas there was only One God, omnipotent, omniscient, infinite and eternal. The Vedas gave the knowledge to make life perfect.

Five Duties.

He emphasised the five duties demanded by the Vedas:—

Firstly, there was spiritual development; prayer in the morning and a few minutes' reading of the Vedas. This, together with contemplation and meditation, led to spiritual development.

The second duty was maintaining cleanliness in the home. The air should be made fragrant

and pure. This was sanitary or physical development.

The third duty was to support scholars and education and propagate religion.

The fourth duty was to support and serve the poor and deserving,

The fifth duty was to protect the domestic animals and birds which God created.

Speaking of various experiences, he startled the audience when he said that in addressing a meeting of the Universal Brotherhood in Amerca he told the conference that it was not a Universal Brotherhood, but was a sham. If they stood for Universal Brotherhood, why was the Asiatic debarred from being a citizen of America? Christ was born in Jerusalem. If He appeared at the present time He would be subject to the same laws as a visiting Asiatic, and would have to land with at least £100. At the end of His visit He would be told to push off, as His turn was finished. That was not universal brotherhood.

Dr. Jaimini was amusing in contrasts. American millionaires, like Ford, had to live guarded

by police against menacem from Anarchists Nihilists Bolsheviks, and so on. In India the workman prayed for the longevity of his employer and for an increase in his sons, which meant a distribution of money, food and charity. The Vedas gave spiritual knowledge, perfection and a tranquil mind.

Mr. R. B. Maharaj and other prominent Indians exteneded a cordial welcome to the lecturer, who was garlanded.

नैटाल विटनैस का लेख १ मई १९३४

ईसा भी अमेरिका में प्रवेश नहीं कर सकता

वेदों पर डाक्टर जैमिनी का व्याख्यान

डाक्टर महता जैमिनी बी० ए० जोकि एक धुरन्धर भारतीय सत्ता और संसार का मिश्नरी है उसने कल मेयरटिजबर्ग के टाउन हाल में हिन्दुस्तानियों के भारी समुदाय के सन्मुख व्याख्यान दिया। कुछ युरोपियन और कुछ मूल निवासी भी उपस्थित थे।

आपने वेदों की महत्ता पर सरल परन्तु प्रभावशाली ढंग से व्याख्यान दिया जिसमें वह प्राचीन समय की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करता रहा और एकके पश्चात् दूसरे पश्चिमी संस्कृत विद्वानों के उदाहरण देते हुये आपने वर्णन किया कि वेद सर्व धर्मों, भाषाओं, साइंस और संस्कृति के आधार और श्रोत हैं।

पश्चिमी संस्कृत विद्वानों ने सत्य सत्य अर्थ नहीं किया है। जितना अधिक उन्होंने वेदों का स्वाध्याय किया उतना ही उनकी अत्यन्त प्राचीनता के मानने वाले बन गये। वेद ही संसार में अत्यन्त प्राचीन ग्रंथ हैं। और भारत मनुष्य मात्र की जन्मभूमि है। व्याख्यानदाता ने फिर यह दावा किया कि जैसे परमात्मा बच्चे के लिये पहिले भोजन का प्रबंध कर देता है वह वेदों के द्वारा मनुष्य मात्र की आत्मा का भोजन (ज्ञान) भी प्राप्त कर देता है । यह मानना पड़ता है कि हर एक मनुष्य के भीतर शरीर के साथ आत्मा भी है। साइंस यदि यह सिद्ध कर सकती है कि कोई वस्तु दो करोड़ वर्ष की पुरानी है परन्तु एक मक्खी की टाँग भी नहीं बना सकती।

वह ज्ञान जिसके द्वारा मनुष्य अपने जीवन को सम्पूर्ण बना सकता है। परमात्मा ने वेद के द्वारा दिया है। वेदों के स्वाध्याय से मिथ्या विचार दूर हो जावेगा कि उनमें पाषाण मूर्ति या वृक्षों आदि की पूजा नहीं पाई जाती है। वेदों में केवल एक परमात्मा सर्वज्ञ, सर्व शक्तिमान, अनन्त और अनादि का वर्णन ही है। वेद सम्पूर्ण जीवन बनाने का ही ज्ञान देते हैं।

फिर आपने वर्णन किया कि वेद मनुष्य को प्रतिदिन पाँच नित्य कर्म की आज्ञा देते हैं। पहिला ईश्वर का भजन और स्वाध्यांय है। इससे आत्मिक उन्नति होती है। दूसरा घर की वायु को शुद्ध रखना, हवन यज्ञ द्वारा है। इससे हमारी आरोग्यता और शारीरिक वृद्धि होती है। तीसरा विद्वान्, श्रेष्ठ और वृद्ध पुरुषों की सेवा और पालना करना है। इसे पितृ यज्ञ कहते हैं । चौथा अतिथि और अनाथों की पालना और रक्षा करना है। इसे बलि

वैश्व यज्ञ कहते हैं।

कई अनुभव वर्णन करते हुये आपने श्रोतागण को चकित कर दिया। यह वर्णन करके कि अमेरिका की एक सार्वजनिक भ्रातृ-भाव की सभा में आपने स्पष्ट कह दिया कि आपकी सभा मिथ्या है। यदि आपकी सार्वजनिक प्रेम सभा होती तो आप एशियाटिक निर्वासित क़ानून बनाकर क्यों एशिया के लोगों को अपने देश में प्रवेश करने से रोक देते। ईसा मसीह भी तो दारु-सलाम (एशिया) में पैदा हुआ था। यदि अब वह भी अमेरिका में आना चाहे तो पासपोर्ट लेकर और १५०० रुपया जमानत के लिये लावे और फिर छः मास के पश्चात् उसे भी निकाल देंगे। इसलिये यह सार्वजनिक भ्रातृ-सभा नहीं है।

अमेरिका के धनाढ्य पुरुष अराजकी और नाशवादी लोगों के भय से अकेले भ्रमण नहीं कर सकते। उनको अपनी रक्षा के लिये पुलिस साथ रखनी पड़ती है। भारत के मजदूर सम्पति वालों की दीर्घ आयु के लिये प्रार्थना करते हैं और उनकी संतान की बृद्धि चाहते हैं जिससे उन्हें दान-अनाज और धन का प्राप्त हो। वेद ही हमें आत्मिक ज्ञान, शान्त मन और सम्पूर्णता प्राप्त कराते हैं।

आर० बी० महाराज और अन्य प्रसिद्ध हिन्दुस्तानियों ने आपका शुभ आगमन करके फूलों के हार पहिनाये।

Indian Openion 1. 5. 1934.

Pundit Jaimini Vedic Missionary

In South Africa.

On the invitation of the South African Hindu Maha Sabha Pundit Jaimini, Vedic Missionary, landed at Durban, on 14th March 1934. He was given a very cordial reception by the South African Indians in the Royal Picture Palace on 18th March in an over-crowded meeting consisting of Indians of all Communities as well as some Europeans. Ever since his arrival, he has commenced his preaching work. His discourses on Indian Culture, Sublimity of the Vedas, Sublime Philosophy of Hindu Scriptures, Krishna's Flute etc. etc. have megnetised his audiences. He has become the topic of the day, Hindus,Mohamedans,and Europeans have become his admirers and the spacious halls are always packed up. He has attracted the people to such an extent that he is compelled to deliver his speeches on Saturdays in two places and on Sundays in three places. On other week-days he delivers one lecture every evening on various topics. He has finished his series of lectures on Indian Culture and its effect on America,Greece.

Egypt, Africa, Germany, Britain, France and Italy in eight lectures. These lectures were arranged in M. K. Gandhi Library Hall under the auspices of M.K. Gandhi Library Committee. These meetinge were presided over by aminent European Soholare and Professors of German, French, American and British Nationalities, who made highly appreciative remarks on the wast learning, wonderful memory and store of information of the learned speaker. Punditji by his gigantic intellect, miraculous memory, all round comprehensive knowledge, comparative study of religion and philosophy has won the hearts of all the Communities. His speeches are free from attack on any religion or community He is cosmopolitian, tolerant in spirit, simple in habits, always busy at table. The old age has not affected his activities. Up to the end of April, he has delivered during 49 days 47 lectures on various topics replete with new quotations references & authorities of scholars-Europeans, Americians and Orientalists, full of up to date solid information, profound scholarship and eminence in every branch of science and philosophy. The President of the South African Indian Congress in his last speech epithetised him

"Living Encylopedia." He has electrified the Indian Youths of South Africa. The Indian Youngmen, who were disgusted with Indian Culture and were westernised in habits, culture and civilisation, have now awakened from their lethargy and callousness. Now they realise their Sublime Culture and Philosophy, the Legacy of their forefathers and now feel proud of their Sublime Culture and Philosophy. He has changed their mentality, elevated their ideas, infused the spirit of patriotism and nationalism in the Indian Youths. Punditji's wonderful, charmful and electrifying speeches have affected Europeans and raised the Status of India in the eyes of foreigners. He has instilled true religious spirit and original culture and genius in the minds of Indians born here. Hindus and Moslems both admire his acility and pre-eminence. He will preach during May in Natal outside Durban till 24th May, and then he will return to Durban to participate in the Hindu Maha Sabha Conference of South Africa to be celebrated from 26th to 28th May as its President. His future programme will be prepared by the Hindu Maha Sabha later on.

Durban
30th April 34. I am etc. **B. N. PATEL**
President S. A. Hindu Maha Sabha.

इंडियन ओपीनियन   १ मई १९३४

पंडित जैमिनी मेहता वैदिक मिश्नरी दक्षिण अफ्रीका में

दक्षिण अफ्रीका की हिन्दू महा सभा के निमंत्रण पर पंडित जैमिनी वैदिक मिश्नरी १६ मार्च को डरबन के बन्दरगाह पर उतरे। १८ मार्च को रायल पिक्चर पैलेस में दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों की ओर से आपका बड़े समारोह से स्वागत किया गया। उस सभा में हज़ारों नर नारी और युरोप के लोग भी सम्मिलित थे। आपने आते ही प्रचार का कार्य आरम्भ किया है। आपके भाषण जो भारतीय संस्कृति, भारत की उच्च फ़िलासफ़ी, वेदों के महत्व, कृष्ण की बांसरी, आदि पर हुये, उन्होंने जनता को मुग्ध कर लिया है। जहां कहीं देखो आपकी ही चर्चा हो रही है। हिन्दू, मुसलमान, युरोपियन सब आपकी प्रशंसा करते हैं। विशाल भवन श्रोतागण से भरपूर हो जाते हैं।

उसने जनता को ऐसा आकर्षित कर लिया है कि उसे शनिवार को दो स्थानों पर और रवीवार को तीन तीन स्थानों पर व्याख्यान देने पड़ते हैं। बाक़ी दिनों में उसे भिन्न भिन्न विषयों पर एक २ व्याख्यान प्रतिदिन देना पड़ता है। अब आपने अपने व्याख्यानों का सिलसिला समाप्त किया है जो भारत की संस्कृति का प्रभाव अमेरिका, यूनान मिश्र, पूर्वी अफ्रीका, जर्मन, इङ्गलैण्ड, फ्राँस और इटली पर थे। यह व्याख्यान हिन्दू महा सभा की अध्यक्षता में गांधी लाइब्रेरी हाल में कराये गये थे। उन व्याख्यानों के प्रधान, फ्रेञ्च, अंग्रेज, अमरीकन प्रोफेसर, बैरिस्टर धुरन्धर विद्वान नियत होते थे।

उन्होंने अपने भाषणों में महता जी की योग्यता और विद्वत्ता की अत्यन्त प्रशंसा की और आपकी स्मरण शक्ति, विशाल ज्ञान, गवेषणा पर आश्चर्य प्रगट किया।

पंडित जी ने अपनी भीष्म बुद्धिमता, जादू से भरपूर स्मरण शक्ति, हर प्रकार का विशाल ज्ञान, धर्मों के तुलनात्मक ज्ञान और भारतीय दर्शन शास्त्र की व्याख्या से श्रोतागण के हृदयों को जीत लिया है। इसके भाषण प्रत्येक मत या जाति के खंडन से पृथक होते हैं। आप सबसे प्रेम करने वाले, क्षमा भाव रखने वाले, सरल स्वभाव और हर समय काम में लगे रहते हैं। वृद्ध अवस्था ने आपके पुरुषार्थ पर अपना प्रभाव नहीं डाला है। अप्रेल के अन्त तक आपने ४७ दिन में ४९ व्याख्यान भिन्न २ विषयों पर दिये जो विद्वानों के उद्धरण, प्रमाण और युरोप, अमेरिका और भारत के विद्वानों के लेखों और हवालों से भरपूर थे। उनमें वर्तमान समय तक की गवेषणा और साइंस व फिलसफे की हर शाखा का विद्वत्तापूर्ण ज्ञान उपस्थित था।

इण्डियनकांग्रेस दक्षिण अफ्रीका के प्रधान उस्मान जौहरी ने अपने अन्तिम भाषण में आपको विश्वकोषकी उपाधि प्रदान की। आपने दक्षिण अफ्रीका के भारतीय नवयुवकों के भीतर बिजली की लहर उत्पन्न कर दी है। प्रवासी भारतीय नवयुवक जो भारतीय संस्कृति से विमुख थे और घृणा करते थे और पश्चिमी सभ्यता के अनुयाई बन चुके थे अब उनकी आंखें खुल गई हैं। अब यह अपनी महत्त्वपूर्ण सभ्यता और संस्कृति को अनुभव करने लगे हैं और उसका अभिमान करने लगे हैं। आपने उनकी मनो-

वृत्ति को परिवर्तन कर दिया है। उनके आदर्शों को ऊंचा कर दिया है। देश भक्ति और जाति भक्ति के विचारों को उनके भीतर फूंक दिया है। पंडित जी के अद्भुत, जादु भरे, बिजली उत्पन्न करने वाले भाषणों ने युरोपियन जनता को प्रभावित कर दिया है। और भारतीयों का सम्मान उनकी दृष्टि में ऊंचा कर दिया है। आपने यहां के पैदा हुये भारतीयों के हृदयों में धार्मिक भाव, मूल संस्कृति और भारतीय मस्तिष्क को अङ्कित कर दिया है।

हिन्दु मुसलमान दोनों आपकी योग्यता की प्रशंसा करते हैं। आप २४ मई तक नैटाल में डरबन से बाहर प्रचार करेंगे। फिर आप, हिन्दु महा सभा ने जो हिन्दु कॉन्फ्रेन्स बुलाई है, उसमें प्रधान पद पर आकर कार्य करेंगे। आपका आगामी समय विभाग हिन्दू महा सभा फिर नियत करेगी।

Natal Witness 2. 5. 1934.

Another Lecture By Dr. Jaimini
Contentment Imparted by Indian Culture.

Dr. Jaimini, the Indian Missionary, lectured last night to a large audience at the H. Y. M. A. Hall, Maritzburg, on "Indian Culture."

India, said the lecturer, had 32 languages and 42? dialects. It had been misrepresented largely by Oriental scholars and certain

missionaries, who, to show their superiority, depicted the darker side of India only.

He quoted Von Schroeder, who said that the Aryans of a remote period possessed a civilisation which might be called the mother of the culture of the world. It was the purest, simplest and best civilisation. It not only included in its culture literatures of science, but also ethical, metaphysical and spiritual.

Although Western civilisation had advanced scientifically and materially it did not enjoy contentment imparted by Indian culture. If Indian culture were followed peace and tranquility would prevail.

Compassion.

The Western mind had never been able to appreciate the essential value of religion.

Culture lay in spiritualism and compassion for one human being to another. Indian practised spiritual oneness, which, if understood, would do away with warfare. New methods of warfare were being invented in the West, but Indian culture prohibited the wanton destroying of life.

Dr. Jaimini went on to say that the League of Nations was unable to bring peace to the nations of the earth. The desire of the nations at present to exploit and extend territories was liable to cause the grave dangers of war. The Vedas said: "Man, who has been created a superior being, should by his own activity enjoy the rights of life, not trample the rights of others."

Toleration was also enjoined. Religous followers persecuted in their own countries were given protection and enjoyed the rights of worshipping. Simplicity in life, habit, and thoughts was also practised.

Mr. F. D. Hugo, Superintendent of Education presided over the meeting.

Mr. R. Naidoo also spoke.

नैटाल विटनैस २ मई १९३४

डाक्टर जैमिनी का दूसरा व्याख्यान

भारतीय संस्कृति संतोष की शिक्षा देती है ।

अर्थात्–डाक्टर जैमिनी भारतीय मिश्नरी ने कल रात को बड़ी भारी उपस्थिति में मारटिज़बर्ग में हिन्दू ऐसोसियेशन में भारत की संस्कृति पर व्याख्यान दिया । आपने कहा कि भारत में ३२ भाषायें

और ४२२ उप भाषायें हैं। भारत के सम्बन्ध में कुछ पादरियों और कुछ पूर्वी लेखकों ने अन्धकारमय पक्ष उपस्थित किया है। आपने वान शरोडर का प्रमाण दिया जिसमें लिखा है कि भारतीय लोग अत्यन्त प्राचीनकाल में ऐसी सभ्यता रखते थे जो संसार की समस्त संस्कृति को माता थी। वह अत्यन्त शुद्ध पवित्र और उत्तम संस्कृति थी। उसमें न केवल साहित्य, फ़िलासफ़ी और साइन्स सम्मिलित थी किन्तु सदाचार अध्यात्मिक और आत्मिक ज्ञान भी सम्मिलित था।

चाहे पश्चिमी सभ्यता ने वैज्ञानिक और प्राकृतिक उन्नति बहुत करली है परन्तु जो सन्तोष भारतीय संस्कृति से प्राप्त होता है वह इस से कदापि नहीं हो सकता। यदि भारतीय संस्कृति का अनुकरण किया जावे तो संसार में शान्ति और आनन्द प्राप्त हो जायगा। पश्चिमी लोगों की बुद्धि धर्म की आवश्यकता और महत्व को अभी तक समझने की योग्य नहीं है। संस्कृति का आधार आत्मिक बल और दया भाव पर है जो प्रत्येक मनुष्य को परस्पर प्रगट करनी चाहिये।

भारत आत्मिक एक्यता का पालन करता रहा है। यदि उसे पूरा अनुभव कर लिया जावे तो संसार से युद्ध आदि दूर हो जावेंगे। पश्चिम में युद्ध करने के लिये नये आविष्कार और साधन उत्पन्न किये जा रहे हैं परन्तु भारतीय संस्कृति हिंसा करना घोर पाप समझती है।

आपने कहा कि 'लीग आफ़ नेशन' संसार में शान्ति स्थापित नहीं कर सकती क्योंकि जातियाँ एक दूसरे को लूटने और अपना

राज्य फैलाने की धुन में लगी हुई हैं। वेद की शिक्षा है कि मनुष्य को चाहिये कि दूसरों के अधिकारों पर आक्षेप न करता हुआ आनन्द से अपना जीवन भोगने का यत्न करे। क्षमा भाव और उदार चित्त भी होना चाहिये।

आपने यह भी बताता कि जिन लोगों को पक्षपाती धर्मावलम्बियों ने दुख देकर अपने देश से निर्वासित कर दिया, भारत ने उनको गले लगाया और आनन्द से रहने दिया। अपने जीवन, आचार, व्यवहार में सरलता को कर्तव्य पालन करना समझा है।

मिस्टर एफ़० डी० ह्यूगो सभा का प्रधान था। नयडो साहब ने भी कुछ भाषण किया।

Indian Openion 11. 5. 1934.

Pandit Jaimini On Cremation.

Dr. Mehta Jaimini delivered a lecture on "Ideals of Womanhood", to women only, at the H. Y. M. A. hall Maritzburg, on Saturday afternoon.

On Saturday evening Dr. Jaimini delivered a very interesting lecture on "Cremation versus Burial."

In defence of cremation, he quoted the Yajur Veda, which read : "When a soul leaves' the body, then the body is only fit for burning.'

On the economical aspect alone, he said that it was by far cheaper to cremate than to bury.

He went on to contend that the practice of burial was not only not economical but against the interests of the living, for the world's total population consisted of 1,900,000,000 souls, and the surface area covered 620,000,000 acres, and if a single corpse occupied four yards, then by 1,500 years not a yard of land would be left. All would be one vast graveyard.

On the sanitary and medical aspects he quoted the reports of Dr. Parker (England), Dr. Hay, Professor of the Pastueur Institute, and other eminent medical men, who encouraged the idea of cremation as the best scientific method of disposing of the dead.

The lecturer said that fire and heat were germicidal. In England a Cremation Act had been passed in 1902, and now thousands were cremated, and so it was in Japan, America, France, Italy, Germany and elsewhere.

इण्डियन ओपीनियन

मृतक जलाने पर

डाक्टर महता जैमिनी ने ५ मई को दोपहर बाद स्त्रियों के आदर्श पर केवल स्त्रियों में हिन्दू यङ्ग मैन्स ऐसोसियेशन के हाल में व्याख्यान दिया। रात को डाक्टर महता जैमिनी ने अति मनोरञ्जक व्याख्यान मुर्दा जलाने या गाढ़ने पर दिया। आपने जलाने के समर्थन में यजुर्वेद का एक मंत्र पेश किया जिसमें यह वर्णन था कि जब आत्मा शरीर को त्यागता है तो शरीर जलाने के योग्य रह जाता है। आर्थिक दृष्टि से आपने कहा कि दबाने की अपेक्षा जलाने में बहुत कम व्यय होता है। आपने यह भी बताया कि दबाने से बहुत सी रुक जाती है। यदि संसार के सब आदमी दबाये जावें जो दो अरब के लगभग हैं तो १५०० वर्ष के बाद रहने और कृषि करने के लिये इञ्च भर भी भूमि न रह जावे। समस्त भूमंडल क़बिरस्तान बन जावे।

आरोग्यता और चिकित्सा की दृष्टि से डाक्टर पारकर और डाक्टर हे प्रोफेसर पास्चर इंस्टीटयूट के प्रमाण उपस्थित किये और अन्य कई विद्वान डाक्टरों की सम्मतियाँ प्रगट कीं जो शव को दबाने की अपेक्षा जलाना उत्तम और उचित समझते हैं।

व्याख्यान दाता ने बताया कि गर्मी और अग्नि जन्तुहनक हैं। इङ्गलिस्तान में क्रोमेशन एक्ट (जलाने का क़ानून) सन् १९०२ में पास हो चुका है। अब सहस्रों व्यक्ति जलाये जाते हैं। ऐसा ही आपने जापान, अमेरिका, फ्राँस, इटली और जर्मनी की श्मशान भूमियों का वर्णन किया।

Natal Witness 10. 5. 1934.

India and South Africa.

A Parliamentary Debate at Meritzburg.

At last night's meeting of the Natal Debating Parliamentry society at Christies' Assembly room Dr. Jaimini moved, "That it is desirable that spirit of goodwill should be fastered between India and South Africa." Dr. Jaimini said India had been misunderstood and misrepresented because of the indentured labourers who had come to the Dominion they represented one per cent of the population of India. It was unfair that a country should be judged by so small a proportion of population.

Wherever Indians had gone in the colonies, they had played their partwell and had served the British Empire. The speaker quoted copious extracts from various books to show the part played by Indian troops in the Great War. In the Boer War the Indians had done yeoman's service to the British Empire. The Indians and British had both spring from the same Common Aryan stock said Dr. Jaimini.

The speaker dealt at length with the cultural attainments of Various Indians India was no less cultured than any other country since the gentleman's agreement the mentality of Europeans of South Africa towards Indians had undergone a very benificial change.

The speaker went on with to deal with the immence trade done by India with the British Dominions and particularly South Africa. It would be of greatest advantage to South Africa if Europeans and Indians would co-operate in a spirit of goodwill. Mr. J. Linforth seconded the motion.

Mr. Johnston advocated a form of segregation and said that one day Indians would be given Parliamentry representation in the union. Revd. Frank Oldreive said there was need of more good will than there had been and so the motion was excellent one. Both Indians and Europeans should attain that stage at which they should be prepared to acknowledge their faults. After Dr. Jaimini replied to the Debate summing up his case excellently, the motion was carried with overwhelming majority.

नैटाल विटनैस १० मई १९३४

भारत और दक्षिण अफ्रीका

कल रात मारटिजबर्ग की पार्लियामेंटरी सभा में कृष्टी हाल में महता जैमिनी ने प्रस्ताव उपस्थित किया कि भारत और दक्षिण अफ्रीका के गोरों में परस्पर प्रेम और विश्वास उत्पन्न करने का यत्न किया जावे। आपने बताया कि भारत को लोगों ने यथार्थ नहीं समझा। यहां शर्त बन्द मजदूर आये जो मूर्ख और बुद्धिहीन थे। कुल उपनिवेशों में २८ लाख भारतीय गये जो प्रतिशत एक के बराबर हैं। उनसे भारतीयों के आचार व्यवहार की जांच करना अनुचित है। जहां कहीं भारतीय उपनिवेशों में गये हैं उन्होंने अपना कर्तव्य पालन किया है और बृटिश सम्राट की पर्याप्त सहायता और सेवा की है।

फिर आपने कई पुस्तकों से प्रमाण उद्धृत किये, यह सिद्ध करने के लिये कि महायुद्ध और बोअर युद्ध में भारतियों ने सराहनीय काम किया है। सरकार की भारी सहायता की है। फिर आप ने बताया कि युरोपियन और भारतीय एक ही आर्य वंश से हैं। इसलिये भी परस्पर संबन्ध उत्तम होना चाहिये। फिर आपने कई भारतीयों की योग्यता का वर्णन करते हुये सिद्ध किया कि भारतीय किसी अन्य जाति से बुद्धिमत्ता और मस्तिष्क में कम नहीं हैं। आपने कहा कि जब से यूनीयन संधी हुई है तब से युरोपियन लोगों की मनोवृति भारतीयों के सम्बन्ध में बहुत परिवर्तित हो गई है। अब वह भारतीयों को प्रेम और सन्मान की दृष्टि से देखने लगे हैं।

फिर आपने बताया कि भारत के व्यापार का सम्बन्ध तमाम बृटिश के उपनिवेषों से है और विशेषकर दक्षिण अफ्रीका से बहुत गूढ़ सम्बन्ध है। इन हालतों में भारतियों से गोरे लोगों का संबंध उत्तम होना उचित है।

महाशय लिन फ़ोर्थ ने प्रस्ताव का समर्थन किया। मिस्टर जानस्टन ने कहा कि वह समय आने वाला है जब भारतीय पार्लियामेंट में हमारे साथ मिलकर बैठेंगे और सम्मति देने का अधिकार रक्खेंगे। कई सज्जनों ने महता जी के प्रस्ताव पर शंकायें कीं। अन्त में महता जी ने १० मिनिट में सब शंकाओं का संतोष-जनक उत्तर दिया और बहु सम्मति से यह प्रस्ताव पास हो गया। राजमंत्री ने महता जी का धन्यवाद किया।

इसी प्रकार इण्डियन ओपीनियन समाचार पत्र ने भी अपने १३ मई के अङ्क में इस व्याख्यान को मुद्रित किया और लिखा कि भाषण मनोरञ्जक था। परन्तु शोक है कि म० सत्यदेव आर्यमित्र ११ अक्तूबर के अङ्क में इसी भाषण के सम्बन्ध में लिखते हैं कि गोरे लोगों की आशा पर पानी फिर गया। अहा! कैसा असत्य है। अपने को आर्य प्रतिनिधि सभा का मंत्री कहने वाला ऐसा मिथ्या लेख लिखकर जनता की आंखों में धूल डाले। जब कि गोरे लोगों का समाचार पत्र तो उसे अति उत्तम और महात्मा गांधी जी का पुत्र मणिलाल सम्पादक इण्डियन ओपीनियन मनोरञ्जक लिख रहा है। पार्लियामेंटरी सभा के मंत्री शिक्षादायक और युक्तिपूर्वक कह रहे हैं, वहां की आर्य समाज का प्रधान आर० बी० महाराज जो मेरे मंत्री का काम कर रहा है, अपने अन्तिम भाषण में मेरे इन व्याख्यानों के संबन्ध में अत्यन्त प्रशंसा

कर रहा हो, म० सत्यदेव वहां से ६० मील की दूरी पर बैठे हुये असत्य के गोले चला रहा है । परन्तु उसका खंडन वहां की समाजें स्वयं कर रहा हैं । चुनाचे आर्य समाज डरबन सेंट्रल ने और आर्य समाज कैटोमाईनर ने निम्नलिखित लख मुझे डरबन से भेजे ।

EXTRACT OF LETTER OF ARYA SAMAJ
DURBAN, CENTRAL

Dated, 29. 12. 34.

We have learnt a lot by your various lectures delievered in Durban and its suburb. I don't find a suitable word to express our gratitude.

The accusations in the Arya Mitra which are published by Mr. Satyadeva are all false He published that article on his own accord. The sabha has nothing to do with it.

L. Ramdutta
Secratray
ARYA SAMAJ

ARYA SAMAJ CATO MANOR
Established 1922.

President R. Devduth.
Secretary M. Bookari.
Treasurer S. Gokool.

107, Bellair Road, Mayvilhe
Grester Durban, Natal
29th January 1935.

Dear Editor,

The Arya Samaj Cato Manor, Durban. Natal hereby drsws the attention of as much Editors

and readers of English, Gujrati and Hindi papers and magazines, both at home and overseas to the recent allegations and libellous reports against Pundit Metha Jaimini and his Vedic Mission while he was in South Africa, in which the name of the Cato Manor Arya Samaj was also involved, and which appeared in the various newspapers and magazines throughout India is entirely false and misleading.

The first report which was sent by Mr. Satya-Dev and was published in the "Arya Mitra" of the 11th OCTOBER, 1934, had been duly replied by the above Samaj, and should have been in print in the columns of Arya Mitra, but its Editor has failed to do so, and therefore, we are at a loss to know as to how the truth could be brought to light, if the editor of such an official newspaper as Arya Mitra, behaves in such a manner.

Mr. Satyadev who knows very little of Hindi Grammer and composition was guided by a master mind of yellow colour. A fact which is easily ascertained by the report itself. Mr. Ramsundar Patak too alike Mr. Satyadev could not claim himself to be an Arya in the fullest sense of the term. Mr. Ramsundar lives about

three hundred miles distant from the Cato Manor Arya Samaj and its members and have never witnessed the exact nature of the disturbance in this samaj which was created by the followers of the yellow man.

In his false report in the Bishal Bharath, Mr. Ramsundar says, "In a fight which took place in the Arya Samaj some broke their legs some their arms and etc.," Nonesense; As he or any of his fellow chellas as well as their guru under whose guidance such misleading reports were written, could never prove the above statement to be true, we take the opportunity of calling them biggest liars And judging from their dirty deeds, they could neither be termed "Aryas". nor "Unaryas". It is a wonder that Mr. Benarsi das Chaturvedi being an Editor failed to recogni se the absurdity of the report which he took pains to give publication in "The Bishal Bharat". It will be Interesting to know the real motive of publishing such a libellous report.

Mr. Satyarth, (is it a nom de plume ?) as well as Mr. Magan Lal whose reports appeared in Sreebankteshwar Samachar of Bombay, are also mostly false, and was originated from the same school of thought, as Mr. Maganlal knows

nothing at all of Hindi Grammer and composition and could never have written without the guidance of the yellow man of a black heart and a master mind.

Besides these, libellous reports against Pundit Mehta Jaimini has also appeared from oversea individuals for publication in the Indian newspapers. Some of them are Sarubdeshik, Sarswathi etc. All these reports have been written by the man in yellow, and posted to his correspondents by air mail, who in return after making the desired alterations and signatures, posted them to India for publication.

The amazing part of these libellous reports is that they were not published in the local papers simply because the local editors knew them to be false. It is simply foolish to say Metha Jamini's lectures created any illeffect. His lectures were not his individual opinions, but in reality the extracts of Historical facts and ancient manuscripts.

These were translated for the benifit of his thousands of hearers who used to be present in hundreds to hear his lectures which were highly entertaining educational and interesting. All the local newspapers scholars, politicians, religious leaders and the general public still speaks highly of him.

We the members of the Cato Manor Arya Samaj strongly protest against all those allegations which have been so far appeared against Pundit Mehta Jaimini in the following papers:-

Saraswati, Sarabdeshik, Arya Mitra, Sreebankteshwar Samachar and other papers that may or have already published reports of such nature while this note is on its way to the press.

(Sd.) M. Bookari Secretary,

Natal Witness 14. 5. 1334.

Dr. Jaimini delivered a lecture on "**Reincarnation**" at the M. F. B. S. hall. Boshoff street, Maritzburg, on Saturday, when Mr. R. B. Maharaj presided.

Dr. Jaimini gave five different changes which, he said, the soul assumed; firstly, reincarnation; secondly, metamorphosis; thirdly, metapsycosis, fourthly, transmigration; and, lastly resurrection. There were eight different beliefs of the soul as held by various religions. First was the belief in the creation of the soul out of nothing; secondly, the outcome of chemical combinations; thirdly, the infusion of breath; fourthly it emanated from God; fifthly it was God's reflection; sixthly it was an illusion; next the soul evolved by gradual processes from monad to man and, lastly, that the soul was eternal and pre-existed. The attributes of the soul as given in the Vedas were six in number—attraction, repulsion, happiness, sorrow, motion and consciousness. Through these the soul was recognised.

Transmigration. There was a time when the whole world belived in transmigration. Several verses from the Bible, he said, went to prove that there was reincarnation. Eminent men such as Huxley, Schopenhauer, Sir Oliver Lodge and others believed in reincarnation.

Dr. Jaimini said there were three inequalities, opportunities, circumstances, and physical and mental development. If God were just he would have made all men equal. The question then arose, why did this happen ? Christianity said it was the will of God. Scientists said it was hereditary influence.

He contended that if it was the will of God, then God was unjust. If it was hereditary influence, then, he asked, how was it that often the child of a dull parent was intelligent, the child of a thief, virtuous ?

The Vedas answered these questions by telling that our present condition was the result of our past actions. "As we sow, we reap."

It was often asked why could one not recall the actions of one's previous birth ? If they were unable to remember the events of their childhood, how could they recall events of a past life ? Even if, for the sake of argument, they did, then, he said, the memories would be the cause of untold misery and sorrow.

Infant Genius.

Infant genius, said the lecturer, was the

result of the accumulated knowledge of past lives. He gave several instances of children claimed to have been able to recall events of previous birth which, upon the facts being verified, were found accurate.

In conclusion, he quoted an eminent Western scientist who said : "We cannot but regret that the adoption of the theory of reincarnation has been delayed—it brings with it the consoling thought that all souls will eventually be saved."

Dr. Jaimini will lecture on the "Exposition of the Vedic Mantras", at the H. Y. M. A. hall, Church street, this evening at 7-30. To-morrow he leaves for Durban to preside at a Hindu conference on May 26. Among the speakers will be Swami Adyanandjee and Shriman Vidyarthie.

नैटाल विटनैस १४ मई १९३४

डोक्टर जैमिनी का व्याख्यान पुनर्जन्म पर

डाक्टर जैमिनी एक व्याख्यान बोशक स्ट्रीट मारटिज़बर्ग में १२ मई को पुनर्जन्म पर दिया आर० बी० महाराज ने प्रधान पद को स्वीकार किया। आपने बताया कि जीवात्मा पाँच प्रकार का शरीर मृत्यु के पश्चात ग्रहण करता है। मनुष्य जन्म में आता है या पशु या बनस्पति या किसी और धातु में या प्रलय के समय

फिर जन्म धारण करता है। आत्मा की उत्पत्ति के विषय में आपने आठ प्रकार के विचार भिन्न २ धर्मावलम्बियों के प्रगट किये।

पहिला विचार यह है कि जीवात्मा शून्य से वर्तमान अवस्था में आया। दूसरा कोमयाई (वानस्पतिक) अणुओं के मिलाने से आत्मा का प्रगट होना है। तीसरा परमात्मा ने उसके अन्दर साँस फूंक दी। चौथा परमात्मा का एक अंग है। पांचवां परमात्मा का प्रतिबिम्ब है। छटा एक मिथ्या भ्रम जाल है। सातवां जीवात्मा शनैः शनैः उन्नति करता हुआ प्रकृति से इस अवस्था को पहुँचा है। आठवां जीवात्मा अनादि है। सृष्टि रचना के पूर्व से ही वर्तमान था। जीवात्मा के लक्षण शास्त्रानुसार छः हैं अर्थात् इच्छा, द्वेष, सुख, दुख प्रयत्न और ज्ञान।

एक समय था जबकि तमाम संसार पुनर्जन्म को मानता था। बाइबिल की कई आयतों से पुनर्जन्म सिद्ध होता है। हैक्स्ले, शौपनहार और सर ओलीवर लाज जैसे अनेक धुरन्धर विद्वान अब इस सिद्धान्त को मानने लग गये हैं। फिर आपने बताया कि मनुष्य में उत्पत्ति के समय तीन बातों में भेद होता है अर्थात् शारीरिक और मानसिक भेद, धनी या निर्धन के घर उत्पन्न होना. काम करने के अवसर अधिक और कम प्राप्त होना। यदि परमात्मा न्यायकारी है तो वह सब मनुष्यों को समान बनाता। दूसरे प्रत्येक मत वाले कहते हैं कि ईश्वर सर्व शक्तिमान है। यह उसकी इच्छा है, जैसा चाहे करे। विज्ञान वेत्ता कहते हैं कि यह पैतृक संस्कारों का तथा संगति का फल है।

महता जी ने कहा कि यदि यह ईश्वर की इच्छा से है तो वह इच्छा न्याय और युक्ति के आधार पर होनी चाहिये। यदि पैतृक संस्कारों का फल है तो फिर क्यों मूर्ख और बुद्धिहीन पिता की संतान बुद्धिमान उत्पन्न हों और जब जोड़े बच्चे (एक साथ दो) एक ही पिता के उत्पन्न होते हैं तो वह क्यों एक ही समान क्यों न हों?

वेद इस प्रश्न का इस प्रकार उत्तर देते हैं कि हमारी वर्तमान अवस्था हमारे पूर्व कर्मों और संस्कारों का फल है। जैसा हम बोते हैं वैसा ही फल उठाते हैं। अधिकतया प्रश्न यह होता है कि हमें अपने पूर्व जन्म की घटनायें याद क्यों नहीं रहती हैं? उसका उत्तर यह है कि जब हमें बाल्यावस्था की घटनायें याद नहीं रहती हैं तो यह कैसे सम्भव हो सकता है कि पिछले जन्म की घटनायें स्मरण रह सकें। परन्तु यदि याद रह जातीं तो उन घटनाओं को याद करने से अधिक अशान्ति और अन्य लोगों से बैर विरोध उत्पन्न होता। जो बच्चे अधिक बुद्धिमान उत्पन्न होते हैं और अधिक मचत्कार दिखाते हैं वह अपने पिछले संस्कार संचित करके साथ लाते हैं।

आपने ऐसे कई बच्चों के दृष्टान्त भी दिये जिन्होंने अपने पिछले जन्म की बातें बताई हैं और उनकी तहकीकात करने पर वह ठीक सिद्ध हुई हैं। अन्त में आपने पश्चिम के एक योग्य विद्वान का उदाहरण उपस्थित किया जिसने लिखा है कि हम शोक प्रगट करने के सिवाय कुछ नहीं कह सकते कि पुनर्जन्म का सिद्धान्त

क्यों अब तक हमारे देश में प्रचलित नहीं हुआ। इससे हमारे भीतर संतोष उत्पन्न होता है कि तमाम जीवात्मा कभी न कभी मोक्ष को प्राप्त होंगे।

महता जी कल एक वेद मंत्र की व्याख्या करेंगे और फिर हिन्दू कांफ्रेन्स के प्रधान पद का कार्य करने के लिये डरबन में चले जावेंगे।

Welcome Address at Maritzburg.

Revered Sir, Ladies and Gentlemen,

On behalf of the Hindu Community of Maritzburg and the neighbouring Districts, I take this opportunity of heartily welcoming you, Sir, to the City. We assure you that it is our proud privilege to receive you in our midst and and to benefit by your teachings and lectures.

You have devoted the best part of your life in bringing the truths and teaching of the Hindu religion to those that profess the Faith into a fuller realisation. We have had the privilege before of receiving religious missionaries from India, whose visit to South Africa was of immense spiritual benefit to our people. Only to mention a few of these missionaries, we refer with gratification to the names of Professor

Parmanand, who today is the President of the Hindu Maha Sabha in India, Swami Shankeranad, Swami Manglanand, Pandit Ishwar Dutt, Pandit Pravin Singh and others, who have all in no small measure contributed to the spiritual gain and to a religious awakening of our people in this sub-continent,

But you stand almost unique among your brotheren of the sacred mission as a man who has carried his missionary work into every corner of the world. Since the time you have dedicated the rest of your life to preach the truths of our Dharma and of our philosophy to thousands of our men and women settled in every corner of the world outside India, you have made it your especial duty to travel round the world, and to personally come into contact with your co-religionists. You have visited Burma, Siam, Malaya, Singapore, Java, Sumatra, Mauritius, Fiji, New Zealand, North, Central and South America, Italy, London, Japan, China, East Africa and other places and established vernacular schools, and founded religious institutions, like the Arya Samaj, in most of these countries. We are aware that the object of these visits, undertaken as a labour of love and inresponse to religious call,

was to supply the spiritual needs of your people and to awaken them to a realisation of the high morals and teachings, and make known to the world the high place in spiritual life the Vedas once held, and the effect of Aryan influence upon culture and civilisation. These visits cannat but fail to have spiritual values. They also have the value in proclaiming to the world the basic theachings of our Rishis of yore–that of bringing message of peace to all mankind. Their moral value to us also cannot be over-estimated.

Endowed with cultural attainments and as an accomplished scholar in Urdu, Persian and Arabic languages, you have translated many of our religious works into these languages.

Coming to consider our own poisition in this country, we cannot shut our eyes, notwithstanding the beneficient results that flow from these visits, to disturbing forces, which offer difficulties, not insurmountable,for the attainment of complete Hindu unity in South Africa. Religiously we are in a state of backwardness. There is a lack of co-ordination in our religious work. The youth of the day, as in other races, influenced by modern age, and the glamour of the

present day materialism, fails to appreciate the true value of spiritual life, as expounded in the teachings of our Faith. Faithless and aimless, life's journey is undertaken, with no peace of mind and no peace of soul. The treasure house of our Faith, one need hardly say, contains much, as evidenced by the works of Western savants on Hinduism, that will bring the aid and lesson of life into a bold relief. However, there is a silver lining to every dark cloud and it is happy to note that notable preachers, like yourself, never fail to impress our people with the spiritual values of the teachings of our Dharma.

We are gratified to note that, realising its sense of responsibility to its people, the South African Hindu Maha Sabha, founded by Swami Shankeranand ji, has recently been revived and set on proper footing. Hinduism, although not aggressive, owes a duty to the people within its fold. Much as we deplore our own inactivity in other directions, it will be folly to allow irreligion to grow and take root in our midst. We must aim at Hindu unity and at the same time we must lop off the useless branches of superstition and ignorance which have been grafted on to the tree of Knowledge and Religion.

There are other works of equal importanco which have to be undertaken. It would be a pretension on my part to frame a programme of work, but I would urge that along with religious work, the education of our girls, and an increased measure of co-operation by our woman in our social work must figure in the forefront of our future work of uplift in this country.

These are tasks which have to be faced and accomplished and it behoves every follower of our Faith to give his support to the work that lies ahead of us.

Again while assuring you, Sir, of the warmth of our welcome, I sincerely hope and trust that success will attend your mission in this country, and that your visit will bear fruitful results.

30th April 1934
Peter Maritzburg

R. B. MAHARAJ
President
Vedic Sabha & Arya Samaj.

अभिनन्दन पत्र का अनुवाद

वैदिक सभा पीटर मारटिज़बर्ग

३० अप्रैल १९३४ ई०

मैं पीटर मारटिज़बर्ग और आसपास के जिले के लोगों की ओर से आपको शुभागमन करने के लिये उपस्थित हुआ हूं। यह हमारे अहोभाग्य हैं कि हमें आपके व्याख्यान और उपदेश सुनने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ है और हमारे धन्य भाग हैं कि आप हमारे मध्य में आज बिराजमान हैं। आपने अपने जीवन का उत्तम भाग, हिन्दु धर्म की सच्चाइयाँ और उपदेश उन लोगों तक पहुँचाने में व्यतीत किया है जो धर्म को ईश्वर प्राप्ति का साधन समझते हैं। इससे पहिले भी हमें भारत से कई आये हुये उपदेशकों के उपदेश सुनने का अवसर मिल चुका है और हमारे हिन्दुस्तानी भाइयों को उनके उपदेश से धार्मिक आनन्द प्राप्त हुआ है।

हम इस सम्बन्ध में प्रोफेसर परमानन्द वर्तमान प्रधान अ० भारत वर्षीय हिन्दू महा सभा और स्वामी शंकरानन्द, स्वामी मंगलानन्द, पं० ईश्वर दत्त, पं० प्रवीण सिंह और कई अन्य व्यक्तियों की ओर कृतज्ञता प्रगट करते हैं जिन्होंने हमारे अन्दर धार्मिक जीवन को पुनर्जीवित और उत्तेजित किया परन्तु आप उन सबसे अद्वितीय हैं क्योंकि आपने संसार भर के प्रत्येक कोने में वैदिक धर्म का नाद बजाया है जिससे आपने भारत के ज्ञान और फ़िलसफे को भारत से बाहर संसार के सहस्रों नर नारियों को सुनाया और वैदिक धर्म का संदेश पहुंचाने के लिये अपना जीवन

समर्पण कर दिया है। आपने संसार भर में भ्रमण करना अपना कर्तव्य बना लिया है और अपने धार्मिक भाइयों के संसर्ग में आकर उन्हें प्रोत्साहित कर दिया है।

आपने ब्रह्मा, स्याम, सिंगापुर, मलाया, जावा, सुमात्रा, मौरीशस फीजी, न्यूज़ीलैण्ड उत्तरी, मध्य तथा दक्षिणी अमेरिका, इटली, लंदन, चीन, जापान, पूर्वी अफ्रीका और कई अन्य स्थानों में उपदेश किया है और वहाँ हिन्दी पाठशालायें और धार्मिक संस्थायें स्थापित की हैं।

हम भली प्रकार से जानते हैं कि आपका उद्देश्य धार्मिक प्रचार को प्रगट करना और अपने स्वदेश भाइयों को अध्यात्मिक और आत्मिक ज्ञान से उत्तेजित करना और उन्हें वैदिक धर्म के उच्च पवित्र उपदेश और सत्यता को प्रगट करना है तथा विदेशों की संस्कृति और सभ्यता पर वैदिक धर्म का गौरव और महत्व प्रगट करना है।

आपने उर्दू, हिन्दी, फारसी में वैदिक धर्म सम्बन्धी कई पुस्तकों का अनुवाद करके जनता को आभारी बना दिया है। हम इस देश में अपनी अवस्था पर दृष्टि डालते हुये अपनी आंखें मूंद नहीं सकते, उस लाभ से जो आप लोगों के आगमन और उपदेश से हमें पहुँच रहा है। अर्थात् हिन्दू जाति के अन्दर एक्यता और संगठन का भाव उत्पन्न हो रहा है। धार्मिक कार्य में अभी समानता की आवश्यक्ता है।

यहां के नवयुवक पश्चिमी सभ्यता के चमत्कार से मोहित होकर अपने धर्म से अनभिज्ञ होते हुये आत्मिक जीवन के गौरव

को अनुभव नहीं कर सकते जो हमारे धर्म उपदेशों में वर्णन हैं। धर्म से शून्य होते हुये वह अपना जीवन अशान्त अवस्था में व्यतीत कर रहे हैं हमारे धर्म का ज्ञान-कोष इतना विशाल है कि पश्चिमी विद्वानों ने भी उसकी अत्यन्त प्रशंसा की है और उस पर अनुकरण करने से ही जीवन का आनन्द और उद्देश्य सम्पूर्ण हो सकता है। फिर भी आशा की झलक प्रगट हो रही है और आप जैसे वृद्ध विद्वान हम लोगों को अपने धर्म के आत्मिक और धार्मिक तत्व समझाकर लाभ पहुँचायेंगे।

हम इस बात को प्रगट करने से प्रफुल्लित हो रहे हैं कि अपनी ज़िम्मेदारी को अनुभव करके दक्षिण अफ्रीका की हिन्दू महासभा ने, जिसे स्वामी शङ्करानन्द ने स्थापित किया था फिर काम आरम्भ कर दिया है। हिन्दू धर्म चाहे अन्य जातियों में काम नहीं करता परन्तु फिर भी अपनी जाति के लोगों को शान्ति और आनन्द दे सकता है और लोगों को अधर्मी होने और पाप कर्म से बचा सकता है। हम हिन्दुओं में एकक्यता उत्पन्न करने का यत्न करता है और हिन्दुओं में जो मिथ्या विचार और भ्रम जाल फैल गया है उसे नष्ट करना हमारा कर्तव्य होना चाहिये। अविद्या और अन्धकार को हमें दूर करना है जो हमारे धार्मिक मार्ग में प्रचलित हो रहा है। ऐसे ही और भी कई उत्तम कार्य हैं जिन्हें हमें आरम्भ करना है।

धार्मिक कार्य के साथ साथ लड़कियों की शिक्षा का कार्य भी है जिससे स्त्री जाति भी सामाजिक सुधार में हमारे साथ मि

कर कार्य कर सके जिससे इस देश के प्रवासी भाइयों को उन्नत करने में, हमारे भविष्य कार्य में, स्त्रियां भी हमारी साक्षी और समभागी बन सकें। ऐसे और भी कई कार्य हैं जिन्हें हमें सम्पूर्ण करना है।

इसलिये हमारे प्रत्येक धार्मिक भाई का कर्तव्य है कि इन कार्यों के सम्पूर्ण करने में हमारे साथ सहानुभूति प्रगट करें और हमें सहायता दें।

मैं फिर आपको विश्वास दिलाता हूं कि हम आप से हार्दिक प्रेम और आपका शुभागमन करते हुये आशा और निश्चय करते हैं कि इस देश में आपके मिशन (महान कार्य) को सफलता प्राप्त होगी और आपका दर्शन देना अति उत्तम फल प्राप्त करेगा।

आर० बी० महाराज
प्रधान आर्य समाज, वैदिक मिशन
पीटर मारटिजबर्ग

यहाँ डरबन पहुँचने से पहिले हिन्दू महा सभा ने मेरे पांच अंग्रेजी व्याख्यानों का प्रबन्ध रुस्तम जी हाल में कर रक्खा था। चुनाचे पहिला व्याख्यान कर्मों का फल अवश्य मिलता है इस विषय पर हुआ। १६ मई को विकासवाद और ईश्वरी ज्ञान पर, १७ मई को पुनर्जन्म के सिद्धान्त पर, १८ मई को साइंस और धर्म में भेद भाव नहीं है, पर व्याख्यान हुये। जनता ने इन व्याख्यानों को प्रसन्नता और चाव से सुनकर पूर्ण लाभ उठाया। इन-

में मैंने बड़ा गवेषणापूर्ण वर्णन करते हुये अनेकों प्रमाण उपस्थित किये ।

२० मई को आर्य समाज डरबन की स्थापना की और वहाँ मैंने एक व्याख्यान दिया । ८ के लगभग समाज के सभासद बने और अधिकारियों का निर्वाचन भी किया गया । रात के समय नवयुवक सभा बाइबिल और वेद की लना पर व्याख्यान दिया । चूंकि वहाँ पादरियों ने बहुत प्रभाव डाल रक्खा था इस लिये नवयुवकों को उनके प्रभाव से बचाने की आवश्यक्ता थी । २१ मई को सूरत ऐसोसियेशन हाल में व्याख्यान दिया । वहां एक वेद मंत्र की व्याख्या की जिसे जनता ने बहुत पसंद किया । २२ मई को ओ३म् और गायत्री मन्त्र की व्याख्या की । २३ मई को अंग्रेजी में मेरा व्याख्यान जावा में रामायण का प्रचार विषय पर रुस्तम जी हाल में हुवा । २४ मई को पुनर्जन्म पर हिन्दी भाषा में सूरत ऐसोसियेशन हाल में व्याख्यान दिया ।

२६ मई को हिन्दू कान्फ्रेन्स का अधिवेशन हुआ । टाउनहाल में उसका आरम्भिक भाषण स्वामी अध्यानन्द महाराज ने किया जो ट्रान्सवाल से यहाँ आये थे । टाउन हाल में बहुत जनता थी । अंग्रेज लोग भी थे । डिप्टी मेयर (Deputy Mayor) ने जनता का स्वागत किया । फिर प्रधान स्वागत कारिणी सभा का भाषण हुआ । तत्पश्चात् मुझे प्रधान हिन्दू कांफ्रेन्स नियत किया गया । और मैंने अपना भाषण पढ़कर सुनाया । मेरे भाषण का संक्षिप्त भाग समाचार पत्र मरकरी और ओपीनियन ने मुद्रित किया और मेरा फ़ोटो भी साथ में छापा । वह सारा भाषण हिन्दू महा सभा ने अपने विवरण में मुद्रित किया है ।

२७ मई को मेरे दो भाषण हुये। एक टाउन हाल में जबकि रुस्तम जी सोहराब जी ने प्रतिनिधियों को भोजन से सत्कार किया। मैंने सिद्ध किया कि पारसी भी वास्तव में आर्य हैं और उनके रस्म रिवाज और सिद्धान्त और नगरों के नाम आर्य संस्कृति स मिलते जुलते हैं। अन्त में हिन्दू कांफ्रेन्स की समाप्ति पर मेरा फिर भाषण हुआ और एक आश्रम के लिये मैंने अपील की। हिन्दू कांफ्रेन्स अत्यन्त सफलता के साथ समाप्त हुई।

२९ मई को कई नवयुवकों ने मेरे व्याख्यानों से प्रेरित होकर एक भारतीय संस्कृति सभा की स्थापना की। उसमें मेरा व्याख्यान कराया और मुझे इस सभा का संरक्षक भी बनाया।

३१ मई को पोर्ट के इण्डियन स्कूल में मेरा व्याख्यान भारतीय स्त्रियों के आदर्श पर हुआ। जिसे जनता ने बहुत पसंद किया। इस प्रकार मई मास में मेरे कुल ३५ व्याख्यान हुये।

जून मास में प्रचार

२ जून को महाभारत की शिक्षा पर म्यौल के स्कूल में व्याख्यान दिया जिसे जनता ने बहुत पसंद किया। ३ जून को तीन व्याख्यान थे। पहिला व्याख्यान प्रातः १० बजे से ११ बजे तक आर्य समाज डरबन में हुआ। यहां वेद मंत्र की व्याख्या की। इस के बाद ओरियण्टल क्लब में २ बजे से ३ बजे तक व्याख्यान हुआ जो हिन्दू मुस्लिम एक्यता पर था। तीसरा व्याख्यान ४ बजे से ५ बजे तक क्यू माईनर में वेद और विज्ञान पर हुआ। ४ जून

को फिर क्यू माइनर में वैदिक धर्म विधि पर हुआ। ५ जून को फिर वहां स्त्री शिक्षा पर व्याख्यान हुआ। सामाजिक भाई इन व्याख्यानों से अत्यन्त प्रभावित हुये। ६, ७, ८ जून को सूरत ऐशोसियेशन हाल में रामायण, गीता और महाभारत की शिक्षा पर हिन्दी में व्याख्यान हुये। जनता बड़ी प्रभावित हुई।

९ जून को आर्य सभा का उत्सव पर इसलिये भारत के राग पर दूसरा व्याख्यान रुस्तम जी हाल में हुआ। १० से १५ जून तक फिर रुस्तम जी हाल में ५ व्याख्यान हुये। अर्थात (१) प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली (२) बेकारी के कारण और उसके निवारण करने के उपाय (३) वैदिक धर्म का पुनर्जीवित होना (४) भारत का वर्ण आश्रम (५) भारत की संस्कृति ईरान और अरब में; विषयों पर हुये। १४ जून को शास्त्री कालिज में भिन्न २ देशों में शिक्षा प्रणाली पर व्याख्यान हुआ। १५ जून के व्याख्यान में सेठ उसमान जौहरी प्रेजीडेण्ट इण्डियन नेशनल कांग्रेस ने प्रधान पद को स्वीकार कर लिया। नैटाल में यह अन्तिम व्याख्यान था इस लिये इस दिन सेठ रुस्तम जी सोहराब जी, उसमान खाँ, मि० पटेल आदि कई सज्जनों ने भाषण किये। मेरी विदायगी का समाचार सुनकर कई लोग आंखों से अश्रु बहाने लगे। परन्तु मैंने उन्हें शान्त किया कि मैं फिर ट्रांसवाल से लौटकर यहां प्रचार करने आऊंगा। इसलिये लोगों को संतोष हुआ।

१३ जून को मुसलमान भाइयों ने अपनी मस्जिद में इस्लाम के तत्व पर व्याख्यान का प्रबन्ध किया था परन्तु कई स्वार्थी, पक्षपाती मुसलमानों के विघ्न डालने से व्याख्यान न हो सका।

इस पर इंण्डियन विऊ अखबार १५ जून में एक मुसलमान भाई ने एक लेख मुद्रित कराया जिससे उसका पक्षपात प्रगट होता था ।

नैटाल में ३ मास ठहर कर मैंने ९९ व्याख्यान दिये जिनका व्यौरा इस प्रकार है:-

(१)	डरबन शहर गांधी हाल	२७
(२)	आर्य समाज क्यू माइनर	४
(३)	ओरिएटल क्लब	२
(४)	सूरत ऐसोसियेशन हाल डरबन	१७
(५)	तामिल इंस्टीटयूट डरबन	१३
(६)	साघटर	१२
(७)	पीटर मारटिज़बर्ग	१८
(८)	क्रे रोड	३
(९)	सराजका	३

१६ जून को वहां से प्रस्थान करके १७ जून को हम जोहन्स-बर्ग पहुँच गये। स्टेशन पर साठ सत्तर हिन्दुस्तानी भाई थे जिन्होंने पुष्प मालायें पहिना कर मेरा स्वागत किया। ढाई बजे पत्तीदार हाल में स्वागत किया गया। ९ या १० सभाओं के प्रतिनिधियों ने मेरे स्वागत पर भाषण किये। मिस्टर पटेल प्रधान हिन्दू सेवा समाज ने शुभागमन का भाषण पढ़ा। मैंने भी उत्तर में धन्यवाद करने के अतिरिक्त हिन्दू धर्म के आदर्श पर व्याख्यान दिया। समाचारपत्र स्टार ने निम्न लिखित लेख मुद्रित किया।

Noted Indins Visit Johannesburg.

On Sunday morning Pandit Mehta Jaimini a distinguished Indian Scholar and research worker who has been all over the world on a lecturing tour will arrive here. He has been in the Union since March delivering a series of lectures in Natal on Indian history culture, civilisation, art and philosophy. The lectures included a series of eight lectures on India's cultural influence on America, Greece, Egypt, Africa, Germany, England, France and Italy. Dr. Jaimini will be the guest of Hindu Sewa Samaj during his stay in Johnnesburg. A reception meeting will be held at Patidar Hall on Sunday afternoon.

जोन्हसबर्ग में भारत प्रसिद्ध विद्वान का आगमन

रविवार पंडित महता जैमिनी एक प्रसिद्ध विद्वान भारत का जिसने भूगोल का भ्रमण किया है लेक्चर देने यहाँ आ रहा है। वह तीन मास से यूनीयन (दक्षिण अफ्रीका) में विराजमान है। और आपने भारत के इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, फ़िलासफ़ी आदि पर नैटाल में कई व्याख्यान दिये हैं। इन व्याख्यानों में आपने भारत की संस्कृति का प्रभाव अमेरिका, जर्मनी, यूनान, मिश्र, इङ्गलिस्तान, फ्राँस, इटली और अफ्रीका पर मनोरञ्जक ढङ्ग से वर्णन किया है। आप हिन्दू सेवा समाज के पास ठहरेंगे और ढाई बजे पत्तीदार हाल में आपका स्वागत किया जायगा।

१७ जून से २० जून तक मैंने १३ व्याख्यान जोन्हसबर्ग में भिन्न २ विषयों पर पत्तीदार हाल में दिये और एक व्याख्यान कई कर्दगरडाप शहर में जाकर दिया । इस प्रकार जोन्हसबर्ग में १५ व्याख्यान जून के मास में हुये । जुलाई मास में ७ जुलाई तक जोन्हसबर्ग में ही प्रचार किया । लोग बड़ी श्रद्धा और प्रेम से सुनते रहे और बड़े प्रभावित हुये ।

Opinion 15. 6. 1934.

The Study Of Indian Culture.

It will be remembered that during the sojourn of the lecturers from India, who took up their appointments at the Sastri College, an Indian Study Circle was formed. What has been its fate in the interim, needs no effort to relate. It is indeed a pity that the Study of the Indian classics in this Country is so boldly and indifferently neglected. To promote, therefore, the study of the classes and foster an interest in matters pertaining to Indian Culture a new group has been inaugurated in Durban The president is a keen and interesting student of Indian literature and philosophy, Mr. B. D. Lalla; its Secretary, another member of the teaching profession, Mr. S. Panday. The inaugural meeting of the above club was held in the Parsee

Rustomjee Hall on Tuesday evening, 29th May, Pundit Mehta Jaimini delivered a lecture on Indian Culture. He pointed out the four W's which constituted the basis of so called western Culture and termed them to be inshort, Wine, Wealth, Women, and War. He then showed how Indian Culture ensured a safer and more consolidated moral background in that it rested on the pillars of four S's viz Simplicity, Self-control, Selfsacrifice, and Service. Mr. B. D. Lalla President, then delivered his inaugural speech in which he outlined the aims and objects of the society.

जौन्हसबर्ग का विशेष वर्णन

ट्रान्सवाल देश में जौन्हसबर्ग शहर बड़ा सुन्दर और विशाल है। समस्त अफ्रीका महाद्वीप में जौन्हसबर्ग सबसे बड़ा शहर है। इसकी बनावट और सजावट लंदन शहर के समान प्रतीत होती है। दिन रात ट्रामकार और मोटरें चलती रहती हैं। बाजार बहुत सुन्दर और विशाल हैं। यह नगर बहुत दूर तक फैला हुआ है। सन् १८८५ ई० में इस नगर की मनुष्य संख्या केवल ८५ मनुष्यों की थी परन्तु पचास वर्ष में इसकी मनुष्य संख्या चार लाख के लगभग हो गई है। उसका कारण यह है कि जब गोरे लोगों को पता लगा कि इस भूमि के नीचे स्वर्ण की खान हैं तो उन्होंने यहां आना और यहाँ पर आबाद होना आरम्भ कर दिया। कम्पनियों ने

यहां आकर खानों से स्वर्ण निकालना आरम्भ किया और इस प्रकार यहां की जन संख्या प्रतिदिन बढ़ती ही गई ।

पहिले ट्रान्सवाल प्रान्त डच लोगों के आधीन था परन्तु बोअर युद्ध में अंग्रेजों ने इस पर अपना अधिकार कर लिया । इस देश में भारतीयों की संख्या बीस हजार के लगभग है । जौन्हसबर्ग में दस हजार के लगभग भारतीय रहते हैं । गोरे लोगों ने भारतियों को यहां से निकालने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु महात्मा गांधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन के कारण भारतीय यहां से न निकाले जा सके । अब भी यहां गोरे लोग भारतीय लोगों से घृणा करते हैं ।

इस प्रांत में एक यूनीवर्सिटी भी है और कई कालिज हैं । यहाँ एक सौ के लगभग स्कूल हैं परन्तु भारतियों के लिये छः कक्षाओं तक का ही स्कूल है । मैट्रिक और कालिज में भारतीय युवक प्रवेश नहीं कर सकते ।

भारतीय लोग अधिकतया गुजराती हैं जो और फल बेचने का काम करते हैं । हिन्दू जाति ने एक सभा बनाई हुई है जिसका नाम हिन्दू सेवा समाज रक्खा हुआ है । इसके लिये उन्होंने मकान खरीद लिया है । इसके अतिरिक्त एक हजार पौंड व्यय करके, भारतीय रोगियों के रहने और औषधि कराने के लिये एक अस्पताल का भी प्रबन्ध कर लिया है । हिन्दू लोगों ने अपना मरघट भी बहुत अच्छा बनवाया हुआ है जिसमें वाटिका, स्नान गृह तथा बैठने का स्थान भी है । इन लोगों ने एक पुस्तकालय भी स्थापित किया है

जिसमें स्वामी दयानन्द महाराज का वेद भाष्य तथा स्वामी दर्शनानन्द जी के दर्शन शास्त्र भी हैं। इसमें स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गाँधी, महात्मा तिलक आदि नेताओं के फ़ोटो भी लटकाये हुये हैं।

पत्तीदार सभा ने भी अपना विशाल भवन बनवाया हुआ है और उसमें पुस्तकालय भी खोल दिया है। उसका उद्घाटन मैंने ही किया है। हिन्दू सेवा समाज ने भी पुस्तकालय बनवाया है और एक विशाल भवन बनवाने के लिये परिश्रम कर रहे हैं। यहां भी पुस्तकालय में स्वामी जी का वेद भाष्य मंगाया हुआ है।

जिन भारतीय वीरों ने बोअर युद्ध में बृटिश सरकार की सहायता करते हुये अपने जीवन को अर्पण कर दिया था उनका स्मारक भी यहां बना हुआ है। यहां चिड़ियाघर भी बड़ा सुन्दर बना है। कई सरोवर बड़े उत्तम बने हुये हैं।

यहां के रहने वाले गुजराती भाइयों में बड़ी श्रद्धा और प्रेम पाया जाता है। यदि यहां प्रचार का प्रबन्ध किया जावे तो अच्छी सफलता प्राप्त होने की आशा है।

यहां सरकार ने एक बड़ा भारी दीर्घदर्शी यन्त्र भी रक्खा है। इसके द्वारा खगोल के समस्त तारे दृष्टिगोचर होते हैं।

ट्रांसवाल की राजधानी प्रटोरिया है परन्तु उससे अधिक रमणीकता और चहल पहल जौहन्सबर्ग में ही पाई जाती है। यहां पर हिन्दुस्तानी शहर में या उससे बाहर भूमि नहीं खरीद सकते।

रेल गाड़ियों के उम्दा डिब्बों में तथा ट्रामकारों में भारतीय लोग नहीं बैठ सकते। डाकखाने में जहां से गोरे लोग टिकट लेते हैं वहां पर से हिन्दुस्तानी टिकट भी नहीं खरीद सकते। इस प्रकार यह समझना चाहिये कि यहां इन लोगों ने हिन्दुस्तानियों को अछूत बनाया हुआ है। यहांपर हिन्दुस्तानी कोई भी अधिकार प्राप्त नहीं कर सकते।

Copy of the Presidential speech of Hindu Sewa Samaj at the occasion of visit of Pandit Jaimini.

Brothers and Sisters,

We have gathered here today to accord a very hearty welcome to our distinguished Pundit Dr. Pandit Mehta Jaimini. He is a noble scholar and a great religious thinker, follower of famous Swami Dayanand Saraswati, founder of Arya Samaj. The yeomen of service of the Arya Samaj in India to put Hinduism in pure and perfect Vedic form and in the cause of education and social reform are well-known. The great institutions of Arya Samaj such as Gurukul and Kanya Maha Vidyalay founded by Swami Shardhanand and others are spendid contributions towards the progress of the Hindu religion. Pandit ji has travelled all over the world on a lecturing tour and was in Natal for

the last four months. His lectures on Hindu Philosophy, culture and history were very much appreciated by Europeans and Indians, and his tour has been a great success everywhere. He has made a record in delivering no less than 47 lectures in a month during his stay in Durban. Pandit ji presided over the third South African Hindu Conference held recently at Durban and for his great ability in conducting the proceedings of that conference in that capacity, he has created a profound impression on the delegates. We trust that Pandit ji's stay among us will be happy one and will bring about a spiritual awakening among the Hindu community in Transval. We also trust that Pandit ji's presence among us will inspire us to work with zeal towards the goal our samaj is striving for.

17-7-34. **R. V. PAKHAR**
Secretary.

प्रधान स्वागत कारिणी सभा का भाषण जो १७ जून को जौहन्सबर्ग में महता जी को पत्तीदार हाल में मेयर (Mayor) जौहन्सबर्ग के प्रधानत्व में पढ़ा गया

भाइयो और बहिनों !

आज हम अपने प्रसिद्ध पंडित महता जैमिनी बी० ए० को

हार्दिक धन्यवाद उनके शुभागमन पर देने के लिये यहाँ उपस्थित और एकत्रित हुये हैं। वह एक प्रसिद्ध, धुरन्धर विद्वान् और धार्मिक विचार वाला और स्वामी दयानंद सरस्वती, आर्य समाज के नेता का अनुयाई है। आर्य समाज ने भारतवर्ष में हिन्दू धर्म को पवित्र और सम्पूर्ण वेदानुकूल बनाने में भारी सेवा और उत्तम कार्य किया है। सामाजिक संशोधन और शिक्षा फैलाने में आर्य समाज का महान् कार्य प्रसिद्ध है।

आर्य समाज की बड़ी २ संस्थायें जैसे गुरुकुल और कन्या महा विद्यालय आदि जिन्हें स्वामी श्रद्धानन्द और कई महानुभावों ने स्थापित किया, उन्होंने हिन्दू धर्म की उन्नति में अद्भुत भाग लिया और लाभदायक कार्य किया है। पंडित जी ने तमाम संसार में भ्रमण करके उपदेश और प्रचार कार्य किया है और चार मास नैटाल में प्रचार कर रहे हैं। आपके व्याख्यान हिन्दू फ़िलासफ़ी हिन्दू संस्कृति और भारत के इतिहास पर युरोपियन और भारतियों ने बहुत पसंद किये हैं। और उन्होंने अत्यन्त प्रशंसा की है। हर स्थान पर आपके भ्रमण और प्रचार से सफलता प्राप्त हुई है। आपने डरबन में ठहरते हुये एक मास में ४७ व्याख्यान दिये। आज तक इतना महान् कार्य किसी उपदेशक ने यहां आकर नहीं किया।

पंडित जी ने दक्षिण अफ्रीका हिन्दू कांफ्रेन्स में प्रधान पद को स्वीकार किया जो कि डरबन में २६, २७ मई को अत्यन्त सफलता से हुई और आपने बड़ी योग्यता के साथ उसे पूर्ण किया। सारे प्रतिनिधियों पर बड़ा उत्तम प्रभाव पड़ा। हम विश्वास रखते हैं कि पंडित जी का हमारे मध्य में उपस्थित होना आनन्ददायक

होगा। और हिन्दू जाति में धार्मिक जागृति उत्पन्न करेगा। हम भी यह भी आशा करते हैं कि पंडित जी की उपस्थिति हमको उस आदेश की पूर्ति में हितकारी और लाभदायक होगी जिसके लिये हम पुरुषार्थ और परिश्रम कर रहे हैं।

मंत्री हिन्दू सेवा समाज
१७ जून १९३४

Natal Witness 13. 7. 1934.

Vedic Missionary at Glencoe.

Pandit Jaimini.

A public welcome was accorded on July 10 to Pandit Dr. Mehta Jaiminiji, B. A., L. L. B., M. R. A. S., Ph. D. the Vedic Missionary, at the Indian School Hall. In the unavoidable absence of the Mayor and Deputy Mayor, Councillor H. J. Wind presided over a large gathering of members of the Indian community.

Councillor Wind, in welcoming the Pandit referred to the great task that the distinguished visitor had set himself and hoped that by his lectures the Indian population of the Union would benefit greatly.

The President of the Reception Committee Mr. S. Bagwandeen welcomed Dr. Jaimini ji on behalf of the Indian Community and in his speech dealt briefly with the Pandit's travels. Since leaving India in 1923, he had visited every country of the world where Indians had settled theselves, and lectured in many towns in Europe, Asia and America.

Dr. Jaiminiji thanked the Chairman for the official welcome, and said he appreciated greatly the cordial reception given him. He then went on to explain briefly the thoughts and ideals which promoted him to travel abroad and endeavour to impart the principles of Vedism to those far removed from their homeland. After speaking in English he gave a short address in Hindi.

अनुवाद—काउंसलर विएड ने पंडित जी का शुभागमन करते हुये उस महान् कार्य का वर्णन किया जो प्रसिद्ध पंडित ने विदेशों में किया है और आशा प्रगट की कि आपके व्याख्यानों से यहां की जनता अत्यन्त लाभ उठावेगी। स्वागत कारिणी सभा के प्रधान भगवान दीन ने भारतीय जनता की ओर से महता जी का शुभागमन किया। और आपने भाषण में महता जी की विदेश सेवाओं का वर्णन किया। महता जी ने प्रधान सभा का धन्यवाद किया और

संक्षेप से उन विचारों और उद्देश्यों को प्रगट किया जिनके कारण उन्होंने संसार भर की यात्रा की। उन्होंने बताया कि प्रवासी भारतियों को जो भारत से हज़ारों मील दूर पड़े हैं वैदिक धर्म का संदेश देना, वह अपना कर्तव्य करते रहे हैं।

अंग्रेजी भाषण समाप्त करके उन्होंने थोड़े समय तक हिन्दी में भी भाषण किया।

Natal Witness 15. 7. 1934.

Dannhauser.

Dr. Jaimini's visit.

A reception was given by the Young Aryans Committee of Dannhauser to Dr. Mehta Jaimini, B. B., L L. B., Ph. D., in the Masonic Hall on Friday. There was a large attendance of Indians and Europeans. Mr. C. Scorgie, ex Chairman of the Local Board, was in the Chair.

Dr. M. Jaimini spoke for over an hour in English, dealing with the universal brotherhood of man.

A vote of thanks was proposed by Mr. D. Lazarus. The arrangements for the meeting were made by Mr. B. Goordeen.

अनुवाद—डनहासर की नवयुवक आर्य सभा ने डाक्टर जैमिनी का शुक्रवार को मसौनिक भवन में स्वागत किया। भारतीय और युरोपियन अधिक संख्या में उपस्थित थे। महाशय शिकोरजी भूतपूर्व प्रधान लोकल बोर्ड ने प्रधान पद स्वीकार किया डाक्टर जैमिनी ने अंग्रेजी में भ्रातृ-भाव पर एक घण्टे से अधिक देर भाषण किया। डा० लाजरस ने धन्यवाद का प्रस्ताव किया। महाशय गौरदीन ने यह सारा प्रबन्ध किया था।

Natal Witness 12. 7. 1934.

Dr. Mehta Jaimini's Visit.

A farewell reception was given by Dr. Mehta Jaimini's Reception Committee, at the Indian School Hall, Glencoe, on Sunday, at 2 p. m. when there was a large attendance. The Chairman was Mr. S. Bagwandeen.

A Havan ceremony was performed by Jaimini, and a large number of pupils from the Hindi School joined. It will not be long before an Arya Samaj will be established here.

Among the speakers were Mr. S. Bagwandin, R. Bunwaie and Mrs. Bunwarie. There was a large gathering at the station on Monday morning to bid the visitor good-bye.

नैटाल विटनैस १२ जुलाई १९३४

अनुवाद—महता जैमिनी को रविवार ३ बजे ग्लैनको के इण्डियन स्कूल में विदा-पत्र दिया गया। भगवान दीन प्रधान पद पर था और जनता अधिक संख्या में उपस्थित थी। पहिले महता जी ने हवन कराया। आशा है कि यहां शीघ्र आर्य समाज की स्थापना हो जायगी। भाषण करने वालों में महाशय भगवानदीन, महाशय बनवारी और उनकी धर्मपत्नी थीं। सोमवार को आपको अन्तिम नमस्ते करने के लिये स्टेशन पर अधिक संख्या में मनुष्य उपस्थित थे।

Natal Witness 12. 7. 1934.

Notable Indian Lecturer.

Dr. Mehta Jaimini in North Natal.

A public reception was accorded to Dr. Dr. Mehta Jaimini in the Indian School Hall., Glencoe, on Tuesday evening. As the Mayor, Mr. J. L. Botha, was absent, his place was taken by Mr. Wind (his Deputy). The Mayor's absence was caused by the death of his brother, Mr. J. C. Botha. The house stood up in silence as a mark of respect to the late Mr. J. C. Botha.

The Reception Committee has arranged a series of meetings in Glencoe, Dannhauser and

Ladysmith, at which lectures will be delivered by Dr. Jaimini.

There was a large attendance, including many Europeans.

Dr. Jaimini will lecture in Dannhauser on Friday, July 13 at 7.30 p. m. at the Masonic Hall, under the auspices of the Young Aryans' Athletic Club, and will also perform a Havan ceremony at Glencoe on Sunday, July 15, at 11 a. m. and will leave for Ladysmith on Monday, July 16.

नैटाल विटनैस १२ जुलाई १९३४

सज्जन भारतीय व्याख्यान दाता

डाक्टर जैमिनी नैटाल के उपरी भाग में

महता जैमिनी का ग्लैनको शहर के इण्डियन स्कूल के हाल में जनता की ओर से स्वागत किया गया। मंगलवार रात को, चूंकि मेस्टर बूथ अपने भाई की मृत्यु के कारण उपस्थित न हो सके इस लिये उनके स्थान में महोदय विण्ड साहब कौन्सलर ने प्रधान पद ग्रहण किया। स्वागत कारिणी सभा ने आपके व्याख्यानों का प्रबंध ग्लैनको, डनहासर और लेडी स्मिथ में किया है। इस स्वागत सम्मेलन में बहुत उपस्थिति थी जिसमें अंग्रेज भी सम्मिलित थे।

डाक्टर जैमिनी १३ जुलाई को डनहासर में व्याख्यान मैसोनिक हाल में देगा और १५ जुलाई को ११ बजे ग्लैनको में एक बड़ा हवन करेगा। १५ जुलाई को उसके बाद लेडी स्मिथ रवाना होगा।

जुलाई मास में प्रचार

८ जुलाई तक मैंने २१ व्याख्यान जोहन्सबर्ग में दिये। अन्तिम दिन ११ नवयुवकों का यज्ञोपवीत संस्कार कराया और संस्कार के महत्व पर व्याख्यान दिया। यहां की हिन्दू सेवा समाज ने अन्त में मेरा धन्यवाद किया। रात्रि के समय वहां से चलकर ९ जुलाई को हम ग्लैनको में आये और ५ दिन यहां व्याख्यान दिये। जिनका वर्णन नैटाल विटनैस से उद्धृत लेखों में आ चुका है। एक दिन डनहासर में जाकर प्रचार किया। १६ जुलाई को हम लेडी स्मिथ प्रचार करने गये। यहां के मेयर महोदय ने प्रधान पद को स्वीकार किया और आनरेबिल हैरी कमिश्नर डिवीजन और कई गोरे लोगों ने भी अपनी उपस्थिति से सभा की शोभा बढ़ाई। यहाँ मैंने चार व्याख्यान दिये जिनसे जनता बड़ी प्रभावित हुई।

२० जुलाई को हम वहां से प्रस्थान करके डरबन में गये। यहाँ आर्य कन्या महा विद्यालय बड़ौदे का डेपूटेशन २८ स्त्री, पुरुषों और कन्याओं का उपस्थित था इस कारण मेरे व्याख्यानों का प्रबंध न हो सका। २३ जुलाई को गवरनर जनरल दक्षिण अफ्रीका ने इण्डियन नेशनल कॉंग्रेस साउथ अफ्रीका का निमन्त्रण भोजन स्वीकार कर लिया था इसलिये टाउनहाल में कांग्रेस ने ३ बजे से भोजन का प्रबंध किया और हमें भी निमंत्रित किया गवरनर जनरल ने हमें दर्शन दिये और हमसे हाथ मिलाया।

२५ जुलाई को कन्या महाविद्यालय की लड़कियों ने टाउनहाल में अपने खेल और कर्तव्य और नाच दिखलाये। टिकट लगाया गया। हाल खचाखच भरपूर था। जनता पर लड़कियों के खेल

देखकर बहुत प्रभाव पड़ा परन्तु मुझे तो बहुत बुरा लगा कि हमारी पुत्रियां जनता में आकर नाच करें और खेल दिखायें। और प्रबंध कर्ता लोग टिकट लगाकर भी धन एकत्रित करें और अपील करके भी धन एकत्रित करें। इस प्रकार धन एकत्रित करने का उन्होंने नया ढङ्ग निकाला है। पुत्रियों के ऐसे खेल और नाच पब्लिक में दिखाना आर्य संस्कृति के सर्वथा विरुद्ध है।

२८ जुलाई को रेलवे बारक में भारतीय सभ्यता और धर्म पर मेरा एक व्याख्यान हुआ। बाक़ी समय में मैंने लिखने पढ़ने का कार्य किया क्योंकि व्याख्यानों का प्रबन्ध न हो सका। इस प्रकार से जुलाई मास में केवल १८ व्याख्यान हुये। सी० एफ़० एण्डरूज़ भी जौहन्सबर्ग में मिले और डरबन में भी दो तीन रात हमारे पास रुस्तम जी सोहराब जी के स्थान पर ठहरे।

अगस्त मास का वृत्तान्त

१, २, ३ अगस्त को मैंने सेठ रुस्तम जी के विशाल भवन में तीन व्याख्यान दिये। अर्थात् भाषा का प्रादुर्भाव, मृतक को जलाना चाहिये या दबाना, चीन पर भारत की सभ्यता का प्रभाव, एक भाषण में महाशय उसमान जौहरी प्रधान साउथ अफ्रीकन कांग्रेस दूसरे में सी० एफ़० एण्डरूज़ और तीसरे में एम० सी० वर्मन प्रधान वैदिक मिशन ने प्रधान पद स्वीकार किया और बड़ी प्रसन्नता प्रगट की। ४ अगस्त को ओरियण्टल क्लब की ओर से गवरनर जनरल साउथ अफ्रीका को भोजन दिया गया। उसमें मैं भी सम्मिलित हुआ और गवरनर जनरल महोदय से मुलाक़ात करने का अवसर

मिला । भोजनशाला में मुझे उनके समीप बिठाया गया । रात को सी० एफ० एण्डरूज़ को भारत जाने के अवसर पर अंतिम विदा पार्टी रुस्तम जी सोहराब जी ने दी उसमें भी मैं सम्मिलित हुआ मैंने भारत सम्बन्धी उनकी सेवाओं का वर्णन करते हुये भाषण किया ।

१० अगस्त को हमने कैम्बरले को प्रस्थान किया । १- अगस्त को प्रातःकाल वहां पहुँच गये । महाशय एन० के० पैले के स्थान पर हम ठहरे । उसने तथा उसकी धर्म पत्नी ने बड़ी श्रद्धा से हमारा स्वागत और सत्कार किया । वहाँ मैंने ९ व्याख्यान दिये । १४ अगस्त के अङ्क में डाइमंड फील्ड एडवरटाइज़र ने निम्न लिखित लेख मेरे सम्बन्ध में मुद्रित किया ।

Diamond Field Advertiser 14. 8. 1934.

Distinguished Philosopher in Kimberley.

Pandit Mehta Jaimini, B. A., L L. B., M. R. A. S., Ph. D., an eminent scholar in comparative philosophy, has arrieved in Kimberlay. He has travelled in America, Europe, Australia, Asia, East Africa, and is at present touring South Africa. His lectures on Indian culture, Indian culture, Indian philosohy, and Indian literature have been appreciated by audiences in all the countries he has visited. The public has a wonderful opportunity of hearing the learned

pandit delivering lectures on all subjects appertaining to the East.

A public reception is to be accorded to him in the City Hall on Wednesday evening at8 O'clock. The Mayor will preside.

कैम्बरले में एक प्रसिद्ध फ़िलासफ़र

पंडित महता जैमिनी एक प्रसिद्ध विद्वान तुलनात्मक तत्व ज्ञान का व्याख्याता कैम्बरले में आया है। आपने आस्ट्रेलिया, युरोप, अमेरिका ऐशिया और पूर्वी अफ्रीका की यात्रा की है और अब दक्षिण अफ्रीका में भ्रमण कर रहा है। आपके व्याख्यान भारतीय संस्कृति भारतीय साहित्य और भारतीय तत्व ज्ञान पर उन देशों में बहुत पसंद किये गये हैं। जनता को ऐसे विद्वान से उत्तम व्याख्यान सुनने का अत्यन्त उत्तम अवसर प्राप्त हुआ है। आपका स्वागत बुधवार रात्रि को ८ बजे टाउनहाल में होगा। पूजनीय टामस लौनी मेम्बर ने प्रधान पद को ग्रहण करना स्वीकार कर लिया है।

इस व्याख्यान में इतने गोरे लोग सम्मिलित हुये कि दक्षिण अफ्रीका में भी इतनी संख्या में नहीं आये थे। मैंने भारत की संस्कृति पर व्याख्यान दिया जिससे गोरे लोग अत्यन्त प्रभावित हुये। एक व्याख्यान अफ्रीका के मूल निवासियों में दिया। उनमें से अधिक लोग अब अंग्रेजी भाषा समझने लग गये हैं। जब मैंने अफ्रीका और भारत का प्राचीन संबन्ध उन्हें बताया तो वह अत्यत प्रसन्न हुये। अन्य व्याख्यान हिन्दू वैदिक समाज में रामायण,

गीता, महाभारत और वेद के महत्व व शिक्षा पर हुये। इन व्याख्यानों से जनता पर बड़ा उत्तम प्रभाव पड़ा। मदरासी लोग इन व्याख्यानों से बहुत प्रसन्न हुये। ऐसे व्याख्यान इन लोगों ने पहिले कभी नहीं सुने थे। यहां हीरा निकालने की खनिज हैं इस लिये अंग्रेज लोग बहुत रहते हैं। कुछ हमारे गुजराती, मुसलमान और मदरासी भाई हैं जिनकी संख्या दो सौ के लगभग होगी।

यह लोग धर्म की बातें सुनने के लिये बड़े उत्सुक रहते हैं परंतु हमारे उपदेशक यहां बहुत कम आते हैं प्रायः उपदेशक नैटाल में प्रचार करके चले जाते हैं। गोरे लोगों और मूल निवासियों में किसी उपदेशक ने आकर प्रचार नहीं किया। इसलिये वह भारत की संस्कृति और सभ्यता से अनभिज्ञ हैं ज्यों ज्यों वह भारत की संस्कृति से परिचित होते जाते हैं त्यों त्यों वह भारतीयों का संमान अधिक करते हैं। गोरे लोगों में जो व्याख्यान हुआ उस पर कैम्बरले के समाचार पत्र ने अपने १८ अगस्त के अङ्क में निम्न लिखित टिप्पणी लिखी।

Diamond 16. 8. 1934.

Ancient and Modern Indian Culture.

Eloquent Lecture by Pandit Mehta Jaimini.

A large and representative gathering of Europeans and Indians listened with deep interest to a lecture on ancient and modern Indian culture, literature and philosophy delivered by Pandit Mehta Jaimini, B. A., L L. B., M. R. A S.,

Ph. D., in the City Hall last night. The lecturer is a very able and sincere speaker with a vast knowledge of his subject.

The Mayor (Councillor Thoms. Looney) presided. He introduced and welcomed the visitor, and spoke of the continual advancement made by the people of India in all spheres of life, particularly in that of culture. The Indians of Kimberley, he said, upheld the high traditions of their native land and were highly respected in the city.

The Pandit deplored the manner in which India had been misrepresented and misunderstood by visitors who spent a short time in that country and by historians whose knowlede was usually second-hand, and he then gave extracts of the favourable opinions formed by European students who had studied the question of India deeply.

He compared Indian culture with that of Greece, Rome and modern Europe, and stated that India culture was all embracing and set out to perfect human life in intellectual, social, moral and spiritual spheres, while the other cultures

were concerned with one or two particular aims. He gave a detailed description of Indian literature and of the work of eminent men of letters, scientists and philosophers of modern India.

Mr. G. M. H Barrell, M. P. C., Proposed a vote of thanks, which was seconded by Mr. C. R. Naidoo.

प्राचीन और वर्तमान भारत की संस्कृति
पंडित महता जैमिनी का विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान

महता जैमिनी बी० ए० ने जो कल रात सिटी हाल में भारत की प्राचीन और वर्तमान संस्कृति, साहित्य और फिलासफी पर व्याख्यान दिया वह युरोपियन और भारतीय लोगों की एक भारी संख्या ने बड़ी श्रद्धा, प्रेम और सावधानी से सुना। व्याख्यानदाता बहुत योग्य विद्वान और सच्चे दिल से बोलने वाला और विशाल ज्ञान वाला प्रतीत होता है।

मेअर काउंसलर टामस लौनी ने प्रधानपद स्वीकार किया। उसने पहिले महता जी का परिचय कराया और शुभागमन किया। आपने वर्णन किया कि भारत के लोगों ने किस प्रकार से संस्कृति में उन्नति की है और हर प्रकार से जीवन को उच्च बनाने का यत्न किया है। उसने कहा कि कैम्बरले के भारतीय अपनी भारत माता की कथाओं (रवायात) को अब तक सुरक्षित रक्खे हुये हैं और इस लिये उनका अच्छा सन्मान और सत्कार है।

पंडित जी ने बड़े शोक से कहा कि किस तरह भारत को विदेशी यात्रियों और लेखकों ने मिथ्या विचारों से गलत बताकर भ्रम जाल फैलाया है। इस पर आपने युरोप के उन विद्वानों की सम्मतियां प्रगट की जिन्होंने भारत सम्बन्धी ज्ञान निष्पक्ष होकर स्वयं अवलोकन करके प्राप्त किया है। उसने भारत की संस्कृति को प्राचीन यूनान, मिश्र, रूमा और वर्तमान समय की युरोप की संस्कृति से तुलना करके बताया कि भारत की संस्कृति विशाल और सम्पूर्ण है और जीवन के हर एक पहलू के लिये लाभदायक है। शेष संस्कृतियां जीवन का अधूरा आदर्श ही उपस्थित करती हैं। उसने भारत साहित्य का विस्तारपूर्वक वर्णन किया और उन महान विद्वानों के कार्य की प्रशंसा प्रगट की जिन्होंने भारत से युरोप और अमेरिका में जाकर भारत की फ़िलासफी और साहित्य की उत्तमता प्रगट की है और यश गौरव प्राप्त किया है।

प्रधान सभा ने आपके व्याख्यान की अति प्रशंसा की और सी० आर० नैयडू ने समर्थन किया।

२२ अगस्त को हम डरबन लौट आये और २५, २६, २७, २८ अगस्त को तामिल इन्स्टीट्यूट में निम्न विषयों पर व्याख्यान दिये।

(१) वैदिक त्रिमूर्ति (२) वैदिक विवाह आदर्श (३) जापान की शीघ्र उन्नति के कारण (४) स्वामी दयानंद का वेद भाष्य क्यों सब से उत्तम है।

३० अगस्त को वेदों के अनादि होने पर आर्य समाज डरबन

की ओर से तामिल इंस्टीट्यूट में व्याख्यान हुआ । इस प्रकार अगस्त मास में कुल १७ व्याख्यान हुये । १२ सितम्बर को हमने यहां प्रचार समाप्त किया और ११ व्याख्यान भिन्न २ विषयों पर दिये । १३ सितम्बर को दक्षिण अफ्रीका से प्रस्थान किया।

(१)	पीटर मारटिजबर्ग में	१८ व्याख्यान
(२)	लेडीस्मिथ	४
(३)	साँघटर	१२
(४)	सांघटर के समीप	५
(५)	ग्लैनको	५
(६)	जौहन्सबर्ग	२१
(७)	डरबन शहर	७१
(८)	डरबन के आस पास	२५

इस प्रकार कुल १६१ व्याख्यान दिये ।

दक्षिण अफ्रीका के प्रचार का संक्षिप्त वृतान्त

मैंने १४ मार्च से १३ सितम्बर तक ६ मास दक्षिण अफ्रीका में ठहर कर प्रचार किया और नैटाल, ट्रान्सवाल और केप कालौनी के कई शहरों में भ्रमण करके वेद संदेश पहुंचाया, १८० दिनमें मेरे १६१ व्याख्यान हुये । १९ दिन व्याख्यान न होने का कारण रेल-यात्रा और किसी दिन प्रबन्ध न हो सकना है । मुझे रविवार को कभी २ तीन २ स्थानों में व्याख्यान देने पड़े । आर्य समाज का कार्य बड़ा शिथिल है । विदेशों में आर्य समाज में यहां जैसी शिथिलता कहीं दृष्टिगोचर न हुई । ट्रान्सवाल और केप कालौनी में तो कहीं

भी आर्य समाज का नाम नहीं । रोडोशिया और न्यासालैण्ड भी आर्य समाज से शून्य हैं। केवल नैटाल में कुछ चर्चा है ।

मैं समाजों और अन्य संस्थाओं का वर्णन कुछ ऊपर कर चुका हूं। नैटाल में तो कुछ पुरुषार्थी भाइयों ने यथाशक्ति कार्य किया है परन्तु ट्रान्सवाल और कैपकालोनी में जो उपदेशक भारत से आये उनमें से बहुत कम वहां प्रचार करने गये। इसलिये ट्रान्सवाल में हिन्दू सेवा समाज और केपकालोनी में भी हिन्दू संस्थायें कुछ न कुछ कार्य कर रही हैं। कहीं कहीं पाठशालायें भी हैं जो हिन्दी शिक्षा देने में सहायक हैं । शिथिलता का अधिक कारण यह है कि दक्षिण अफ्रीका में आर्य लोग आचरण तथा सदाचार की ओर पूरा ध्यान नहीं देते । और न आर्य समाज के नेता लोग आर्य जनता पर इस बात का जोर देते हैं। लोग सिद्धान्तों से भी परिचित नहीं हैं । इसलिये वहां पर लोगों को आकृष्ट करने वाला कोई भी साधन दृष्टि गोचर नहीं होता ।

यदि कोई उपदेशक मांस, मदिरा के विरुद्ध व्याख्यान दे देवे और सदाचार पर ध्यान दिलावे तो उसका घोर विरोध करते हैं । चुनाचे आर्य समाज कैटोमाईनर के मंत्री ने जो पत्र सार्वदेशिक सभा देहली को लिखा और पंडित शिवनारायण पांडे ने जो पत्र आर्यमित्र में मुद्रित कराने को भेजे, उनको न तो सार्वदेशिक सभा ने और न आर्य मित्र ने मुद्रित किया । इससे प्रगट होता है कि मेरे विरोध का कारण यही बात थी । मैं चाहता था कि दक्षिण अफ्रीका के वह लोग जो अपने आपको प्रधान और सन्यासी कहते हैं आदर्श जीवन व्यतीत करने वाले हों जिससे साधारण जनता उनका अनुकरण करे और उनके जीवन से आकृष्ट हों । परन्तु वह लोग मेरे उपदेशों से लाभ उठाने के स्थान में घोर विरोध

करने लग गये। यही बात डाक्टर भगतराम के साथ हुई। परंतु मैं इस बात की परवाह नहीं करता कि मेरे विरुद्ध कैसे असत्य और भ्रमपूर्ण लेख मुद्रित कराये गये हैं। मैंने अपने कर्तव्य का पालन किया है। यही कारण है कि अधिकतया वहां की जनता मेरे कार्य को प्रशंसा की दृष्टि से स्मरण करती है और मुझे वहां के लिये फिर निमंत्रित करती है। चुनाचे प्रधान हिन्दू महासभा का ७ मार्च १९३५ का पत्र, जो मुझे आया यहां दर्ज करता हूं।

Copy of the letter of B. N. Patel
President South African Hindu Mahasabha
Dated 7 th March 1935.

My dear Pandit ji,

I had seen Pandit Bhawani Dayal in November past after we had received the paper Vankteshwar Samachar in which Magnu Lall had criticised you and Pandit Bhawani Dayal has agreed that neither he nor his friends will publish any more articles in India.

I still maintain that you have served the Hindu Community through your religious and cultural lectures in this country at a time when the Hindu youth of this country was hungering for such knowledge. No doubt the South African Hindus are grateful to you for what you have done in this country during your short stay here and hope that in future we may have occasion to seek your guidance and advice.

Yours obediently. B. N. Patel.

आर्य समाज के अतिरिक्त यहां कई स्थानों में वैदिक समाजें हिन्दू सेवा समाज और अन्य नामों से संस्थायें हैं । इन सब का संबंध हिन्दू महासभा के साथ है जिसका केन्द्र स्थान डरबन शहर है । इन सभाओं ने ही यहां हिन्दू जाति को जिन्दा रक्खा हुवा है । मुझे इन सब सभाओं में प्रचार करने का अवसर मिला है । मैंने इन सभाओं के द्वारा ही वैदिक धर्म का महत्व, भारत की संस्कृति भारत की सभ्यता और फ़िलासफ़ी को युरोपियन और हिन्दुस्तानियों पर प्रगट किया, विशेषकर नवयुवकों के अन्दर देश भक्ति और जातियता के भाव उत्पन्न किये । इन संस्थाओं ने बड़े प्रेम और श्रद्धा से मेरे व्याख्यान कराये । आर्य प्रतिनिधि सभा ने मुझे प्रचार के कार्य में कोई सहायता नहीं दी । मेरे कार्य का संक्षिप्त वृतान्त यह है ।

(१) मैंने २३ भिन्न २ नगरों में भ्रमण करके १६१ व्याख्यान दिये । इन व्याख्यानों में हिंदू, गोरे, मुसलमान, ईसाई और अफ्रीका के मूल निवासी अधिकतया सम्मिलित होते रहे । युरोपियन लोगों ने कई स्थानों पर प्रश्न भी किये । उन्हें संतोषजनक उत्तर दिये गये ।

(२) इंडो युरोपियन क्लब, पार्लियामेंटरी डिबेटिङ्ग सोसाइटी, ओरिएटल क्लब आदि हर प्रकार की सभाओं ने मेरे व्याख्यान कराये और बहुत प्रभावित व आकर्षित हुये और मेरे लिये प्रशंसा के भाषण करते रहे ।

(३) स्थानीय समाचार पत्रों ने मेरे व्याख्यानों के सम्बन्ध में प्रशंसनीय टिपप्पणियां लिखीं और अपने रिपोर्टर भेज कर नोट लेते रहे ।

(४) कई स्थानों या शहरों के मुख्य प्रबन्धकर्त्ता (Mayor) डिप्टी मेअर काउंसलर, कालिजों के प्रौफेसर, इटेलियन, फ्रेञ्च, जरमन अमेरिकन विद्वान, वैरिस्टर, बड़े राज्यधिकारी और यशस्वी लोग प्रधान पद को सुशोभित करते रहे और अन्त में बहुत प्रशंसा प्रगट करते रहे और भली प्रकार मेरा स्वागत भी करते रहे ।

(५) हिन्दू महासभा की कांफ्रेन्स मेरे प्रधानत्व में बड़े समारोह से हुई इतनी सफलता दक्षिण अफ्रीका में कभी नहीं हुई । अपना भवन बनाने का सभा ने निश्चय किया ।

(६) आर्य समाज डरबन, ग्लैनको और इडियन कल्चर सभा की स्थापना की ।

(७) कैम्बरले और कम्पाला में मूल निवासियों में और जञ्जीबार में ऐराबी लोगों में भी भाषण दिये । पहिले किसी उपदेशक ने इन लोगों में आकर काम नहीं किया, भारत की सभ्यता, संस्कृति और धर्म के महत्व को सुनकर यह लोग स्पष्ट कहते थे कि अगर हमें ऐसे उत्तम धर्म का पहिले ज्ञान होता तो हम कभी ईसा की शरण में न जाते ।

(८) बड़े २ राज्यधिकारियों से मिलने का अवसर मिला । उन से विचार परिवर्तन किये । यहां तक कि गवरनर जनरल से दो बार एजण्ट जनरल गवर्नमेंट हिन्द से भी मिलने का अवसर मिला और उनके साथ मिलकर भोजन भी किया । ९९१ यहाँ के उच्च कोटि के मुसलमानों में पक्षपात नहीं है वे उदारता से बर्ताव करते

रहे और भोजन खिलाते रहे। मेरे व्याख्यानों में कई बार प्रधान बने। उन्होंने अपनी उत्तम सम्मति भी प्रगट की।

यहां के भारतीय अधिकतया समृद्धिशाली हैं। परन्तु अब आर्थिक दशा प्रतिदिन हीन होती जा रही है। लोग अपनी उन्नति की ओर ध्यान नहीं देते।

सितम्बर मास में प्रचार

चूंकि १३ सितम्बर को हमको यहां से रवाना होना था इस लिये १२ सितम्बर को कई समाजें और सभाओं ने विदा-पत्र दिये और मेरे व्याख्यान कराये। उनमें से आर्य समाज पीटर मारटिज़-बर्ग, आर्य समाज क्यू माइनर, आर्य समाज सेंट्रल डरबन और हिन्दू महासभा के एडरस और प्रेजीडेण्ट साउथ अफ्रीका इंडियन नेशनल कॉंग्रेस के प्रशंसा पत्रों को यहाँ उद्धृत करता हूं।

आर्य समाज पीटर मारटिज़बर्ग का अभिनन्दन पत्र

२ सितम्बर १९३४

On the eve of your departure from Maritzburg, it reminds me of 30th April 1934 when a public reception was accorded to you at the city Hall where a huge crowd of people were present. What enthusiastic moment it was and today it falls on my lot to bid you farewell. Pandit ji we have not lost sight of the fact of your services to the world. You have gone round the world

seven times and preached not only to your kith and kin but also to the western nations who appreciated your lectures so well. I must say Panditji's speech is so impresive, his knowledge so vast, his experience of the outer-world so great and his memory is so powerful that those who listen to him get hyponotised and spell-bound. I can frankly say that Panditji is the first speaker ever come to South Africa with so vast knowledge, comparative study of religious, philosophies and culture, gigantic and prodigious memory and flow of speech replete with accurate figures and humourous demeanour. Panditji by his culture, refinement, ability and learning has magnetised the people. His sweet, forceful and composed voice will long after him continue to thrill the hearts of all those who had the good fortune to hear him. May providance grant you long life, happiness, tranquility and strength to carry on the good work and crown your mission with unparallel succes. We expect you will grace South Africa on your next world tour.

R. B. MAHARAJ
President.

अर्थात्— मारटिज़बर्ग से आपके वियोग के समय मुझे ३० अप्रेल सन् १९२४ ई० का दृश्य सामने आ रहा है जब आपको सिटी हाल में भारी जनता में शुभागमन का अभिनन्दन पत्र दिया गया था। वह कैसा उत्साहजनक समय था। आज फिर मुझे आपके अन्तिम वियोग पर कुछ कहना पड़ता है। पण्डित जी जो सेवा आपने संसार भर में प्रचार करने से की है वह हम कदापि नहीं भूल सकते। आपने सात बार संसार भर में भ्रमण करके न केवल अपने भाईबन्दों में ही प्रचार किया है किन्तु पश्चिमी जातियों को भी भारत की संस्कृति का ज्ञान दिया है और उन्होंने आपके भाषणों की प्रशंसा की है।

मैं यह कहने से नहीं रुकता कि आपका भाषण ऐसा प्रभावशाली होता है आपका ज्ञान ऐसा विशाल है और आपकी स्मरण शक्ति ऐसी बलवती है कि श्रोतागण आप पर मुग्ध और अति आकर्षित हो जाते हैं। मैं स्पष्टरूप से कहता हूं कि पण्डित जी ही पहिला व्यक्ति है जो इतने विशाल ज्ञान, धर्म, तत्व ज्ञान और संस्कृति के तुलनात्मक ज्ञान के साथ आया है जिसकी स्मरण शक्ति अद्भुत है और भाषण की धारा, विद्वत्तापूर्ण हंसमुख चेहरे के साथ प्रवाहित होती है। पण्डित जी ने अपनी योग्यता, शुद्धता, विद्वत्ता और संस्कृति से जनता को मोहित कर लिया है। उसकी मधुर, बलवती वाणी श्रोतागण के हृदयों पर अङ्कित रहेगी। इसके चले जाने के चिरकाल पश्चात् तक परमात्मा आपको चिरञ्जीव रक्खे और आनन्द, शान्ति और शक्ति अधिक दे जिससे आपने जिस कार्य का बीड़ा उठाया है पूर्ण सफलता के साथ सम्पूर्ण कर सकें।

हम आशा करते हैं कि आप फिर भी अपने संसार भ्रमण में दक्षिण अफ्रीका का निवासियों को दर्शन दें ।

आर० बी० महाराज
प्रधान

Letter of Prasident South Africa.

Indian National Congress Durban.
98 First Areonue 12 September 1934.

My dear Pandtitji,

On the eve of your departure to India I take the ypportunity of expressing my sincere appreciation and thanks for the many interesting and inspiring lectures delivered by you during your stay among us for the past six months or so.

I might say that your masterly exposition on Indian culture and other religious and educational subjects, delivered from time to time in M. K. Gandhi Library at Durban in a seres of lecture over some of which I had the honour and previlege of presiding and at other centries of South Africa, were not only of high and cultural attainments but have created in the minds of younger generation of our community, A sense of unbounded patriotism for their motherland and her sublime culture. Your two lectures

at the Oriental Club-Insipingo on the spirit of Islam and brotherhood of man have been source of pleasure to the members almost all of them are muslims. I am of the firm belief that if preachers of your culture and learning were to visit this country the bonds of friendship existing between the followers of two great religions will be further strengthened and peace, good will and harmony will no doubt reign supreme. I wish you long life and every success in your future mission.

I beg to remain yours very truly.
Omar Hajee Amod Jhaveri.

दक्षिण अफ्रीका इण्डियन नेशनल कांग्रेस का प्रशंसा-पत्र
१८ सितम्बर सन् १९३४ ई० डरबन से।

अर्थात्–प्रिय पण्डित जी ! आपकी भारत को विदाई के समय, आपका हार्दिक धन्यवाद और प्रशंसा करता हूँ उन मनोरञ्जक और शिक्षाप्रद उपदेशों के लिये जो आपने हमारे मध्य में छः मास के निवास में दिये हैं। मैं कह सकता हूं कि आपकी विद्वत्तापूर्ण भारतीय संस्कृति की व्याख्या और धार्मिक, शिक्षा सम्बन्धी विषयों पर जो आपने महात्मा गांधी पुस्तकालय भवन डरबन में समय समय पर दिये उनमें कई व्याख्यानों में मुझे प्रधानपद ग्रहण करने का शुभावसर प्राप्त हुआ। न केवल वे व्याख्यान उच्च कोटि के थे किन्तु भारतीय नवयुवकों के हृदयों में देश-भक्ति के भाव और

भारत माता की संस्कृति की भावना को फूंक दिया है। आपने जो दो व्याख्यान इसीपिङ्गो ओरियण्टल क्लब में इस्लाम के तत्व और भ्रातृ-भाव पर दिये, इन से मुसलमान भाई जिनकी संख्या बहुत अधिक है प्रसन्न हुये और प्रभावित हुये।

मेरा पूर्ण विश्वास है कि यदि आपकी योग्यता और विद्वत्ता के प्रचारक इस देश में आते रहे तो दो बड़े धर्मों के बीच मित्रता का सम्बन्ध दृढ़ हो जाय और शान्ति, शुभ भाव और समानता उत्पन्न हो। मेरी कामना है कि परमात्मा आपकी आयु अधिक करे और आपके आगामी मिशन में आपको हर प्रकार की सफलता प्राप्त हो।

आपका शुभचिन्तक—उमर हाजी अमूद

Farewell Address of Hindu Maha Sabha.

South Africa Durban 12. 9. 1934.

Ladies and Gentlemen.

Today we have met here for the purpose of honouring our ravered Pandit Jaimini on the eve of his departure to Motherland. His advent to this country was hailed with great delight as the ambassador of India representing a universal religion, philosophy and culture. His visit has heralded the real awakening of the spirit and enthusiasm of the Hindus in particulars and Indians in general. His inspiring lectures were so interesting and instructive as to command

very large audience. The young men of the country were so attracted by his discourses that they revealed unprecedented enthusiasm and unabated interest in his lectures.

During his sojourn in this land he has travelled to the various parts of Natal, Transwal and Cape Provinces at the express invitation of our people resident in those parts. His tour was one of triumphal progress from place to place. In each centre the people gathered in large numbers eager to listen to his exposition of the sublime and lofty ideals of Vedic Seers. The call upon him was such that on several occasions he had to deliver four to five lectures on one day. Throughout his lectures he won the admiration of the various sections of Indian community and also Europeans. His profound knowledge and wonderful memory were remarkable features in his intellectual attainments. He has aroused the people in our midst to arise to the great call of our Motherland and her mission in order to spread hhr glory, exercise her spiritual influence and to whow forth her all embracing culture. In all he has delivered about two hundred lectures in this country and won the undying gratitude of his people here. He has rendered signel

services in the revival of South African Hindu Maha Sabha and had the unique distinction honour of presiding over the Third South African Hindu Conference held recently and attended by three hundred delegates from all parts of South Africa, To his ripened experience and tact the success of the conference in a great measure is due. His services have an abiding place in our hearts and will ever serve to remember him to us while he is thousands of miles away and separated from us by the wide and mighty expanse of Indian Ocean. He will greatly be remembered by us and our hearts will couple greatfully his noble name with those of Bhai Parmanand and Swami Shankeranand. We are deeply grieved over the impending departure of our learned Panditji and his secretary but the knowledge that our loss is India's gain serves to fortify and console us.

Now I have to bid farewell. May Parmatma grant you long life to carry on your selfless work in the cause of Mother India and Vedic Dharm. May your future career be blessed with every success and may your name figure in the firmament of great souls.

We fervently pray that we may have occasion to welcome you to this country again.

38 Cathedral Road
Durban (Natal)
12th September 1934

B. N. PATEL.
President.
S. A. Hindu Maha Sabha.

देवियों और भद्र पुरुषों !

आज हम यहां अपने मान्यवर प्रतिष्ठित पण्डित जैमिनी को विदा करने के लिये जो भारतभूमि में जा रहा है, एकत्रित हुये हैं। यहां उसका शुभागमन उत्साहपूर्वक हुआ था क्योंकि वह भारत की संस्कृति तत्व-ज्ञान और सार्वजनिक धर्म का प्रतिनिधि था। उसके आगमन से लोगों में उत्साह भर गया है विशेषकर हिन्दू जाति में जागृति पैदा हुई है और भारतीयों में साधारणतौर पर। उसके ओजस्वी व्याख्यान ऐसे शिक्षादायक थे कि भारी जनता उन से आकर्षित हुई। इस देश के नवयुवक आपके व्याख्यानों से ऐसे आकृष्ट होते रहे कि उन्होंने अद्वितीय उत्साह और न घटने वाला जोश उनके सुनने में प्रगट किया। उसने इस देश में नैटाल, ट्रांसवाल और केप कालोनी के प्रान्तों में वहां के निवासियों के निमन्त्रण पर भ्रमण करके प्रचार किया। उसका भ्रमण एक स्थान से दूसरे स्थान तक पूर्ण सफल था। हर स्थान पर वैदिक धर्म के उच्च आदर्श और महत्व को सुनने के लिये जनता अधिक संख्या में एकत्रित होती रही। उसे इतने निमन्त्रण आये कि कभी २ एक दिन में चार पाँच स्थानों पर भाषण करना पड़ा। इन व्याख्यानों से उस ने भारतीय और युरोपियन लोगों की प्रशंसा प्राप्त की। उसका विशाल ज्ञान और अद्भुत स्मरण शक्ति, बुद्धिमत्ता और योग्यता में विशेष गुण थे। उसने हमारे मध्य में प्रवासी भारतीयों में भारत

भूमि का प्रेम जागृत कर दिया और जनता पर भारत के गौरव, महत्व और संस्कृति को प्रकाशित कर दिया।

उसने दो सौ के लगभग व्याख्यान दिये और यहां की जनता के धन्यवाद और कृतज्ञता को जीत लिया। उसने दक्षिण अफ्रीका की हिन्दू महासभा के पुनर्जीवित करने में भारी सेवा की है और तीसरी हिन्दू कांफ्रेन्स के प्रधान पद को ग्रहण करने और उसे योग्यता और अनुभव से सफल करने । सराहनीय और प्रशंसनीय कार्य किया है। इस कांफ्रेंस में तमाम दक्षिण अफ्रीका के स्थानों से तीन सौ प्रतिनिधि सम्मिलित हुये। उसकी निष्फल सेवा हमारे हृदयों में अङ्कित हो चुकी है। वह चाहे हमसे हजारों मील दूर होगा और भारत सागर द्वारा हमसे पृथक हो जायगा परन्तु उसके महान कार्य को हम कदापि न भूलेंगे, वह हमें स्मरण रहेगा। उस का नाम भाई परमानन्द और स्वामी शंकरानंद के साथ हमारे दिलों में अङ्कित रहेगा। हम सुयोग्य पंडित जी के वियोग से अति दुखित हैं। परन्तु यह जानकर कि हमारी हानि से भारत को लाभ पहुँचेगा, हमें कुछ संतोष प्राप्त होता है। अब मैं आपसे अंतिम विदा लेता हुआ परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह आपकी आयु वृद्धि करे। आप भारत माता और वैदिक धर्म के महान कार्य को सफलतापूर्वक जारी रक्खें। आपका भविष्य जीवन हर प्रकार से सफल हो और आपका नाम महान आत्माओं के समान चमके। हम बड़े उत्साह और शुभ कामना से प्रार्थना करते हैं कि हमें इस देश में फिर आप के दर्शनों का शुभावसर प्राप्त हो। डा० एन० पटेल

प्रधान साउथ अफ्रीका हिन्दू महासभा

दक्षिण अफ्रीका का विशेष वृतान्त

पहिला वर्ग

यह देश वृटिश सरकार के आधीन है। इसमें चार देश सम्मिलित हैं। नैटाल, ट्राँसवाल, केप कालौनी और फ्री आरेञ्ज स्टेट। कुल इलाके का क्षेत्रफल २७६९९५ वर्गमील है। कुल जन संख्या पैंतीस लाख साठ हज़ार है। इसमें से नैटाल की जन संख्या ग्यारह लाख बानवे हज़ार, ट्रांसवाल की सोलह लाख छयासी हज़ार, आरेञ्ज स्टेट की पांच लाख अट्ठाइस हज़ार है। यहाँ का जल-वायु आनन्दप्रद तथा आरोग्यवर्द्धक है। ट्रांसवाल में स्वर्ण की खान अधिक है इसलिये इसका नाम स्वर्णभूमि भी है। आरेञ्ज स्टेट में हीरे की खान है। हर प्रकार की सब्ज़ी और फल यहां उत्पन्न होते हैं। नैटाल में मकई और गन्ना ट्रांसवाल में गेहूँ अधिकता से पैदा होते हैं।

यहाँ के मूल निवासी कई जातियों में विभाजित हैं जो काफ़िर कहलाते हैं। उनमें से एक जाति के लोग झाड़ियों में रहने वाले कहलाते हैं जो छोटे क़द के होते हैं। रंग भूरा होता है यह लोग पशु मार कर खा जाते हैं। दूसरी जाति हाटनटाट कहलाती है। यह लोग भेड़ बकरियाँ चराते और खेती करते हैं परन्तु अपवित्र, मलीन और सुस्त होते हैं। खाना पीना और नाचना इनके जीवन का उद्देश्य है। ये लोग धन एकत्रित करना नहीं

जानते। सूर्य, चन्द्र तथा तारागण को ईश्वर मानकर उनकी पूजा करते हैं। काफ़िर लोग कोयले के समान काले होते हैं।

इन लोगों की कई उपजातियां हैं जिनमें जिलू, भोट, मकोको आदि प्रसिद्ध हैं। इन लोगों की संख्या प्रतिदिन कम हो रही है। सम्भव है कि कुछ समय के पश्चात् उनकी अस्थियां अद्भुतालयों (अजायबघरों) में नमूने के तौर पर यादगार के रूप में रह जावें। अधिक लोग तो पश्चिमी जातियों के आक्रमणों का मुकाबला करते हुये मारे गये। गोरे लोग या तो उन्हें पशुओं के समान मार डालते या अपना दास बना लेते थे। एक एक गोरे जमींदार के पास एक एक हज़ार गुलाम होते थे। बन्तों जाति ने गोरों का मुक़ाबला कब तक कर सकते थे।

जिस प्रकार भारत की खोज करने के लिये कोलम्बस को अमेरिका का पता मिला, इसी प्रकार परथालम्बो को १४८८ ई० में दक्षिणी अफ्रीका की उम्मीद अन्तरीप (Cape of Good hope) का मिला। इससे पहिले अर्बी लोग भारत का माल वीनस के मार्ग से यूरोप को भेजते थे। इसलिये वीनस व्यापार का केन्द्र स्थान था। अन्त में २५ दिसम्बर १४९७ ई० को वास्कोडिगामा को दक्षिण अफ्रीका का एक देश दिखाई पड़ा। उसका नाम नैटाल इसलिये रक्खा कि वह उसे हज़रत ईसा के जन्म दिवस को दिखाई दिया। नैटाल के अर्थ जन्म दिवस के हैं। परन्तु पुर्तगीज़ों ने नये देश का पता लगने पर भी उसपर अपना अधिकार नहीं जमाया क्योंकि उनकी दृष्टि तो भारत के धन पर लगी हुई थी।

सन् १५०६ ई० में उन्होंने सोफ़ाला पर अपना क़ब्ज़ा कर लिया। क्योंकि यह प्रान्त और हरा भरा था। १५४५ ई० में डलगोवा खाड़ी में उन्होंने व्यापार आरम्भ किया तब से अफ्रीका के साथ उनका सम्बन्ध बढ़ता ही गया। १६०१ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कई जहाज उम्मीद अन्तरीप में आ पहुँचे और १६५० ई० में दो अंग्रेज कप्तानों ने इस देश पर सर्व प्रथम इङ्गलैण्ड के बादशाह का झंडा गाड़ दिया। उसी समय हालैण्ड देश से १७ डाइरेक्टरों की एक कम्पनी बनकर अंग्रेजों और पुर्तगोज़ों के मुक़ाबले में व्यापार करने के लिये निकली।

सन् १५४५ में इस कम्पनी का जहाज टेबलैण्ड में जाकर टूट गया। इसलिये उन्हें कई दिन वहां ठहरना पड़ा। उन्होंने लौट कर अपने बादशाह से इस भूमि की बहुत प्रशंसा की और कहा कि यदि वहां एक क़िला बनवा दिया जावे तो भारत के व्यापार के लिये मार्ग में ठहरने की बहुत सुगमता होगी। इसलिये उन्होंने १६४७ ई० में केप पर अधिकार प्राप्त कर लिया। धीरे धीरे नैटाल में डच लोगों की संख्या अधिक होने लगी। कुछ फ्रांसीसी लोग भी आकर निवास करने लगे और डच लोगों के साथ मिलकर काम करने लगे। उस समय किसी को भी यहां राज्य करने का ख्याल न था। केवल व्यापार करने का ख्याल था। उन्होंने मूल निवासियों को गुलाम बनाना और उनपर अत्याचार करना प्रारम्भ किया।

१७७९ ई० में करनल गारडन ने आरेञ्ज स्टेट का पता लगाया। वहां धीरे २ डच लोग जाकर बसने लगे और ट्रांसवाल

में भी प्रवेश करने लगे। उधर केप कालौनी में अंग्रेज धीरे धीरे पैर जमाने लगे। यह देखकर डच लोग भयभीत होने लगे। १७८७ ई० में डच लोगों ने फ्राँसीसियों के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध आवाज़ उठाई। फ्रांस सरकार ने डच लोगों की सहायता के लिये अपना नौका अध्यक्ष जंगी समुद्री जहाज के साथ भेजा। अङ्गरेज़ वहां से निकाल दिये गये परन्तु १७८५ ई० में यह देश अङ्गरेजों के अधिकार में आ गया परन्तु फिर १८०६ ई० में डच लोगों ने यह देश प्राप्त कर लिया। १८१४ ई० में फिर उसपर अङ्गरेजों का अधिकार हो गया। इससे प्रवासी बोअर लोग बहुत अप्रसन्न हुये।

१८८० ई० में बृटिश सरकार ने चार हजार अङ्गरेज़ चुन कर दक्षिण अफ्रीका में भेजे। पादरियों ने भी बृटिश राज्य की वृद्धि में पूरी सहायता की। पादरी लोग बोअर लोगों और अङ्गरेजों के अत्याचारों की जो वे मूलनिवासियों पर करते थे घोर निंदा करते थे। १८२८ ई० में जौन फ़िल्प पादरी की प्रेरणा से अंग्रेजों ने मूल निवासियों को दास प्रथा से मुक्त कर दिया। १८३४ ई० में तमाम बृटिश सम्राट से दास प्रथा हटा दी गई। जब प्रथा बंद हो गई तो गोरे मूलनिवासियों में परस्पर युद्ध हुआ। पादरियों की प्रेरणा पर सरकार ने गवरनर केप कालौनी को आज्ञा दी कि मूल निवासियों से जो प्रांत छीन लिये हैं उन्हें वापिस कर दिये जायं। इस पर गवरनर अप्रसन्न हुआ और उसने आठ हज़ार गोरे और बोअर लोग वहाँ से छोड़कर आरेञ्ज स्टेट प्रस्थान कर गये। उन्होंने नैटाल में पहुँच कर अपनी बस्ती स्थापित की। पीटर मारटिज़बर्ग में स्वतंत्रता की स्थापना की।

१८४३ ई० में बृटिश सरकार ने नैटाल को भी अपने आधीन कर लिया। इससे असन्तुष्ट होकर कई बोअर लोग ड्राकिन्सबर्ग के पास जाकर आबाद हुये। तभी से नैटाल में बृटिश संख्या बढ़ती ही गई। पहिले नैटाल कैपकालोनी के गवरनर के आधीन था परंतु १८५६ ई० में पृथक प्रांत बना दिया गया और १८९३ ई० में इसे स्वराज्य मिल गया १८६४ ई० में ट्रांसवाल प्रजातंत्र राज्य बन गया। आरेन्ज स्टेट १८५४ ई० में ही स्वतंत्र राज्य बन गया था।

इसके पश्चात् रूसी, जर्मन, फ्रेंच जातियों के लोग भी यहाँ आकर आबाद होने लगे। १८७७ ई० में अङ्गरेजों ने ट्रांसवाल को अपने आधीन करना चाहा। उस पर बोअर लोगों ने भारी युद्ध किया और अंग्रेज सेनापति को क़त्ल कर दिया। इस सफलता से दक्षिण अफ्रीका के सब बोअर लोग संघटित हो गये और अंगरेजों से घृणा करने लगे। अन्त में प्रीटोरिया में एक सभा हुई जिसमें यह निर्णय हुआ कि बोअर लोगों को स्वराज्य दिया गया। १८८४ ई० की लंदन कन्वोकेशन के निर्णय अनुसार ट्रांसवाल में प्रजातंत्र राज्य हो गया। १८८६ ई० में पाल क्रोगर प्रधान की आज्ञा से ट्राँसवाल में सोना निकालने का कार्य आरम्भ हुआ। और १८८७ ई० में ८१ हजार पौंड का सोना बरामद हुआ। वर्तमान समय में ५३ कम्पनियां ३० लाख पौंड का सोना माहवारी निकाल रही हैं। इस सोने के लोभ से अंग्रेजों की दृष्टि फिर ट्रांसवाल पर पड़ी। पहिले पत्र व्यौहार होता रहा। अन्त में १८९९ ई० में ट्राँसवाल की सरकार ने प्रीटोरिया में बृटिश दूत (कौंसलर) को ३ दिनमें वहाँ से निकल जाने की आज्ञा दी। इसलिये ११ अक्तूबर को युद्ध की

घोषणा की गई। ट्रांसवाल और आरेञ्ज फ्री स्टेट ने बृतानिया के विरुद्ध शस्त्र उठाये। नैटाल और केपकालोनी के बोअर लोगों ने भी उनका साथ दिया। बोअर लोगों ने अत्यन्त वीरता दिखाई। परन्तु अन्त में बोअर लोग परास्त हुये। ३१ मई १९०२ ई० को परस्पर सन्धी हो गई।

१९१० ई० में चारों प्रांत संगठित करके उसका नाम यूनीयन आफ़ साउथ अफ्रीका रक्खा गया। उसे उपनिवेशिक स्वराज्य। (Colonial Status) दिया गया। अब बृटिश सम्राट यहां का गवरनर जनरल नियत करता है। शेष प्रबंध यहां की पालिया-मेंट करती है। क़ानून आदि सब प्रबंध यहां की सरकार का है। प्रबंधक सभा के सदस्य, गवरनर जनरल अपनी इच्छा के अनु-सार नियत करता है। सचिव सभा के ४ सभासद हैं उन में से आठ गवरनर जनरल नियत करता है बाक़ी ३२ में से हर प्रांत से आठ २ चुने जाते हैं। पार्लियामेंट में कुल २१ सभासद हैं। हर एक प्राँत का गवरनर पांच वर्ष के लिये नियत होता है। उसके साथ एक एग्जीक्यूटिव कौंसिल और एक लेजिस्लेटिव कौंसिल होती है। अंगरेज़ी और डच भाषा दोनों राज्य कार्य में उपयोग की जाती हैं। भारतियों को राज्य प्रबन्ध में या वोट देने में कोई अधिकार नहीं है।

नैटाल में भारतियों का आगमन

वर्ग दूसरा

१८५६ ई० में नैटाल केपकालोनी से पृथक हो गया। यहां के अङ्गरेजों ने देखा कि हर प्रकार की उपजाऊ वस्तुयें यहां हो सकती हैं। गन्ना, चाय और अगरोट की खेती अधिक होने लगी। परन्तु परिश्रमियों की न्यूनता के कारण गोरों को बहुत कष्ट होता था। यहां के मूल निवासी दिल लगाकर काम नहीं करते थे। इस लिये उनको दृष्टि भारत पर पड़ी। भारत सरकार से पत्र व्योहार होने लगा। भारत सरकार ने पांच वर्ष के अहदनामे पर मजदूर भेजने स्वीकार किये। इसलिये १६ नवम्बर १८६० ई० को पहिला जहाज भारतीय मजदूरों का यहां आया। शर्त पूरी होने के बाद गोरे लोग उन्हें भूमि देने का लालच देकर यहां आबाद करने लगे। यह प्रथा १८६६ ई० तक जारी रही। इसके पश्चात् बन्द होगई। इससे नैटाल के व्यवसाइयों के कार्य को अत्यन्त हानि हुई। इसलिये १८७८ ई० में फिर यह प्रथा जारी की गई। इस प्रकार नैटाल को भारी उन्नति हुई।

१८८७ ई० में एक कमीशन नियत किया गया कि भारतीय मजदूरों का यहां आना बन्द किया जावे परन्तु कमीशन ने जाँच पड़ताल करके रिपोर्ट की कि बिना भारतीय मजदूरों के नैटाल का कार्य न चल सकेगा। इसलिये यह प्रथा जारी रही। १८८४ ई० से १९०७ तक नैटाल में ३४६ ४ भारतीय आये और १८६० ई० से १९०७ ई० तक कुल मजदूर ५४०४२ आये जिनमें से १२२३०

अपनी अवधि समाप्त करके वापिस चले गये। तत्पश्चात् व्यापारी लोग भी स्वतंत्ररूप से आने लगे। १९१३ ई में नैटाल में ११५९३० भारतीय थे जो शर्तबन्दी का पट्टा लिखाकर इस देश में आये साथ ही १७०४२ स्वतंत्र रूप से रोज़गार के लिये आये हुये भारतीय यहां आकर आबाद हुये।

मज़दूरों पर अत्याचार, उनकी आरोग्यता की ओर ध्यान न देना, छोटे से मकान में पांच सात आदमियों को रख देना, ज़रा ज़रा सी बात पर उन्हें कोड़े मारना, स्त्रियों से सख्त और कठोर काम लेना, उनके बच्चे पैदा होने पर केवल १२ दिन की छुट्टी देना, जैसे अत्याचार हर एक उपनिवेश में इतनी भयानकता से हुये कि जिनको सुन कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जब लोग अपनी अवधि समाप्त कर लेते तो कई तो भूमि लेकर कृषि करने लग जाते। कुछ थोड़ी सी पूंजी से दुकान खोल लेते, कुछ फेरी का काम करने लगे। प्रत्येक भारतीय अपनी आर्थिक दशा सुधारने में दृढ़ हो गया। धीरे धीरे वे उन्नति करने लगे। इन्होंने कई प्रकार के व्यापार और धन्धे प्रारम्भ कर दिये।

भारतीय लोग पुरुषार्थी थे। उन्होंने व्यापार में अनुभव बढ़ा लिया। थोड़े से नफे पर सस्ता माल देने लगे। उनके अपने खर्च कम थे। जीवन सादा था और आवश्यकतायें कम थीं। इसलिये छोटे व्यापार सब उनके अधिकार में आ गये। उनके हाथ में बहुतसा धन आ गया। बहुत से भाई हज़ारों बीघे भूमि के मालिक बन गये। थोड़े ही समय में उन्होंने अच्छी उन्नति कर ली। धन धान्य से परिपूर्ण हो गये। उन्होंने इस देश को हरा भरा कर दिया।

केला आम, अंगूर, संतरा, सेब, नासपाती आदि सभी फल और आलू, अदरक, सेम, गोभी, मटर, शाक सब सब्जियां पैदा करके इस देश को उन्होंने लहराता हुआ उपवन बना दिया। उनके परिश्रम से जंगल में मंगल हो गया। उनके पुरुषार्थ और गन्ने की खेती से नैटाल अपने पांव पर खड़ा हो गया। यह देश पहिले जंगली हाथियों शेरों और सांपों से आबाद था। उनकी चिघाड़ से हृदय कांप उठते थे। इस देश में प्रवेश करना भी अति कठिन था। भारतीय लोगों ने अपनी जान जोखों में डालकर जंगलों को काटा और उपजाऊ भूमि और निवास स्थान बना दिया। उस समय भारतीय लोग गोरे लोगों की दृष्टि में उत्तम और सज्जन थे और हर प्रकार से उन्हें उत्साहित करते थे परन्तु जब यह देश अन्न और धन से परिपूर्ण हो गया, हर प्रकार की आवश्यक्तायें यहां पूर्ण होने लगीं, युरोप से आये गोरे लोगों की संख्या अधिक बढ़ गई तब गोरे लोगों की दृष्टि भारतीय लोगों की ओर से बदलने लगी। वे भारतीयों से घृणा करने लगे। उनकी दृष्टि में भारतीय कांटे के समान चुभने लगे। वे उनको बाहर निकालने के उपाय सोचने लगे। इतने ही में दक्षिण अफ्रीका के सेठ अब्दुल्ला ने महात्मा गांधी के भाई को लिखा कि हमारा एक बड़ा भारी मुक़दमा अफ्रीका में चल रहा है अगर गांधीजी इस मुकद्दमे में हमारे युरोपियन बैरिस्टरों को यह मुक़दमा समझाने के लिये हमारी तरफ़ से आ जायें तो हम उनके आने जाने का अव्वल दर्जे का किराया, यहाँ का सब खर्च और एक सौ पाँच पौंड जाते वक्त उन्हें भेंट देंगे। इस मुकद्दमे के कारण महात्मा गांधी जी अप्रेल मास के अन्त में १९०३ ई० में डरबन पहुँच गये।

जब महात्मा गांधी जी अफ्रीका की अदालत में गये तो मैजिस्ट्रेट ने आपको हुक्म दिया कि पगड़ी उतार कर बैठो। आप ने इन्कार कर दिया और वहां से उठकर चले आये। यहां आपको लोग कुली बैरिस्टर कहते थे। मुकदमा प्रीटोरिया में चल रहा था, इसलिये आप डरबन से प्रीटोरिया रवाना हुये। रेलगाड़ी में अव्वल दर्जे का टिकट लिया और गाड़ी में सवार हो गये। परन्तु मार-टिज़बर्ग पहुँचने पर गार्ड ने एक पुलिसमैन को बुलाकर ज़बरदस्ती आपको फ़र्स्ट क्लास से बाहर निकाल दिया और असबाब भी प्लेटफ़ार्म पर फेंक दिया और कहा कि कुली बैरिस्टर थर्ड क्लास में बैठ सकते हैं। इतने ही में गाड़ी रवाना हो गई। आप सारी रात सर्दी में स्टेशन पर पड़े रहे। विवश होकर दूसरे दिन शाम को गाड़ी के आने पर थर्ड क्लास में बैठ कर चार्ल्स टाउन पहुँचे। क्योंकि वहीं तक रेल जाती थी। वहाँ से आगे शिकरम जाती थी। आप शिकरम में सवार हुये परन्तु इसमें भी आपको अन्दर बैठने को जगह न मिली। कोचवान ने अपने पास बाहर बैठने को जगह दी। वहाँ भी कोचवान ने आपके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया। उससे काफ़ी झगड़ा हो गया और आपको उसने नीचे गिराने की भी कोशिश की परन्तु आप संभल गये।

जब आप स्टैण्डरटन पहुंचे तो बहुत से हिन्दुस्तानी आप से मिलने आये और सेठ ईसा के मकान पर ले गये। वहां से सुबह को ही शिकरम चलने वाली थी। आपको शिकरम में अच्छी जगह मिल गई और जौहन्सबर्ग तक सकुशल पहुँच गये। वहां से आगे प्रीटोरिया तक रेल थी। आपने स्टेशन मास्टर से फ़र्स्ट क्लास का

टिकट मांगा। उसने इस शर्त पर दिया कि अगर आपको गार्ड फर्स्ट क्लास से उतार कर तीसरे दर्जे में बिठादे तो आप मुझ पर या रेलवे कम्पनी पर दावा न करें। आप टिकट लेकर फर्स्ट क्लास में जा बैठे। उस डिब्बे में सिर्फ एक सज्जन अंग्रेज बैठा था। गार्ड आपको देखने आया और उङ्गली से इशारा करने लगा कि तीसरे दर्जे में जाकर बैठो। आपने इन्कार कर दिया। अंग्रेज मुसाफ़िर ने भी गार्ड को डांट बताई। गार्ड बड़बड़ाता हुआ चला गया। आप कुशलपूर्वक प्रीटोरिया पहुँच गये। रविवार होने के कारण आपके स्वागत को कोई आदमी स्टेशन न आ सका। आपने एक छोटे से होटल में पहुँचकर ठहरने का प्रबंध किया। तत्पश्चात् सेठ अब्दुल्ला के कर्मचारियों ने एक ग़रीब स्त्री का मकान किराये पर लेकर आप के निवास का प्रबन्ध किया। यहां आपने कुलियों की बड़ी दुर्दशा देखी। आपने देखा कि मालिक उनको बुरी तरह से पीटते हैं।

आरेन्ज फ्री स्टेट में हिन्दुस्तानियों के विरुद्ध क़ानून पास हुआ कि हिन्दुस्तानी हर प्रकार के अधिकारों से वञ्चित कर दिये गये हैं केवल होटलों में नौकर या किसी धनपति के पास बैरा के तौर पर नौकर रह सकते हैं। नये भारती यहां किसी प्रकार भी प्रवेश न करें। व्यापारियों को किञ्चित मात्र हर्जाना देकर वहाँ से निर्वासित कर दिया गया। १८८५ ई० में ट्रांसवाल में एक कड़ा क़ानून पास हुआ। १८८६ ई० में उसमें कुछ संशोधन हुआ जिसके अनुसार भारतीयों को नैटाल में प्रवेश करने के लिये ३ पौंड कर देना पड़ता था। विशेष स्थानों के अतिरिक्त वे कहीं भी भूमि नहीं ख़रीद सकते थे। न उनको सम्मति देने का ही कोई अधिकार प्राप्त था।

हिन्दुस्तानियों को सड़क के किनारे की पटड़ी पर चलने को मनाई थी। रात्रि को ९ बजे के पश्चात् घर से बाहर नहीं निकल सकते थे। परन्तु अरब के लोग इस क़ानून से मुक्त थे।

महात्मा गाँधी जी जिस अभियोग में गये थे उसमें उन्होंने राज़ीनामा करा दिया और दोनों परिवारों को नष्ट होने से बचा दिया। महात्मा जी मुक़द्दमे से निबटकर भारत लौटने के लिये तैयार हुये। स्टडन्हम नगर में आपको जाते समय सन्मान पत्र दिये जाने का प्रबन्ध किया गया। आप जब वहाँ पहुँचे तो आप को अखबार नैटाल टाइम्ज़ का परचा पढ़ने को मिला जिसमें आपने पढ़ा कि क़ानून की सभा में एक नया क़ानून पेश है कि भारतीयों को सम्मति देने से वंचित किया जावे। लोगों को इस मसविदे का पता न था। आपने सेठ अब्दुल्ला से ज़िक्र किया। उसने कहा कि हमें इन बातों का ज्ञान नहीं होता, हमतो अपने व्यापार के काम को ही जानते हैं। इससे पहिले सरकार ने फ्री आरेञ्जस्टेट के व्यौपार को नष्ट कर दिया है। आपने सेठ से कहा "यदि यह क़ानून पास हो गया तो आपके सन्मान और स्वतंत्रता की यहाँ मृत्यु हो जायगी।" कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने महात्मा जी से प्रार्थना की कि यदि आपको हमारे साथ सहानुभूति है तो आप जहाज़ का टिकट मंसूख करायें। एक वर्ष यहां ठहर जायें हम हर प्रकार से आपकी सेवा करेंगे और आपकी आज्ञानुसार यत्न करेंगे। महात्मा गांधी जी ने वहां ठहरना स्वीकार कर लिया। सेठ हाजी मौहम्मद की अध्यक्षता में सेठ अब्दुल्ला के मकान पर एक बड़ी सभा हुई जिसमें यह निश्चय हुआ कि इस क़ानून का

विरोध किया जावे। स्वयं सेवक बनाने आरम्भ किये गये। उनमें भारतीय ईसाई भी सम्मिलित हुये। पहिले प्रधान कौंसिल के नाम तार भेजा गया कि इस मसवदे पर वाद विवाद स्थगित किया जावे। एक तार राज्य मंत्री लंदन के नाम भेजा गया। प्रधान कौंसिल ने दो दिन के लिये मसवदे को स्थगित कर दिया। एक प्रार्थनापत्र कौंसिल में उपस्थित करने के लिये तैयार किया गया। उस पर प्रसिद्ध प्रसिद्ध भारतीयों के हस्ताक्षर कराके भेजा गया। इसको वहां के समाचारपत्रों में भी मुद्रित कराया गया। इस प्रार्थना पत्र पर कौंसिल में विचार किया गया परंतु फिर भी कानून पास कर दिया गया।

नैटाल के भारतीयों में इस बात से नवीन जागृति उत्पन्न हो गई। फिर आपने दस हज़ार भारतीयों के हस्ताक्षर कराके एक प्रार्थनापत्र लार्ड रिपन, उपनिवेश मंत्री इङ्गलिस्तान के नाम भेजा। लंदन टाइम्ज़ और टाइम्ज़ आफ इण्डिया ने हिन्दुस्तानियों के इस प्रार्थनापत्र का समर्थन किया। लोगों ने फिर गांधीजी से ठहरने के लिये आग्रह किया जिसे आपने स्वीकार कर लिया। महात्मा जी ने एक सभा की स्थापना की जिसका नाम नैटाल इण्डियन कांग्रेस रक्खा गया। इसकी स्थापना २२ मई १८९३ ई० को की गई। इसके आधीन एक शिक्षा सभा भी बनाई गई और एक पुस्तकालय स्थापित किया गया।

कांग्रेस का उद्देश्य यह था कि इङ्गलिस्तान और अफ्रीका के अङ्गरेज़ अधिकारियों को भारतीयों की वास्तविक अवस्था का परिचय दिया जाय। गांधी जी ने दो छोटी पुस्तकें मुद्रित कराईं (१) दक्षिण

अफ्रीका से प्रत्येक बृटिश निवासी से प्रार्थना (२) भारतीय और सम्मति देने का अधिकार। इसका परिणाम यह हुआ कि दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों से सहानुभूति करने वाले कितने ही अङ्गरेज बन गये तथा भारत की सब सभाओं को इस विषय में अफ्रीका के प्रवासियों से सहानुभूति हो गई।

१८९४ ई० में अफ्रीकन सरकार ने परिश्रमियों पर पच्चीस पौंड वार्षिक कर लगाने का विचार किया क्योंकि युरोपियन व्यौपारियों को भारतीयों को उत्तम अवस्था देखकर ईर्षा और भय उत्पन्न हो गया। एक कमीशन भारत में भेजा गया कि यह प्रस्ताव भारत की सरकार से स्वीकृत कराये। परन्तु भारत के वायसराय ने इसे स्वीकार न किया। परन्तु गोरों के दबाव से तीन पौंड वार्षिक कर स्वीकार कर लिया जोकि बड़ा अन्याय था। नैटाल कॉंग्रेस ने इस का घोर विरोध किया और बड़ा आन्दोलन किया। इस परिश्रम का फल यह हुआ कि वायसराय ने २५ पौंड के बजाय ३ पौंड ही कर की स्वीकारी दी। कांग्रेस ने यह आन्दोलन जारी रक्खा। २० वर्ष के बाद यह क़ानून रद्द हुआ।

महात्मा गांधी जी तीन वर्ष के पश्चात् भारत को लौटे। यहां आकर आपने अफ्रीका के प्रवासी भारतीयों की अवस्था सुनाई और तमाम बड़े बड़े नेताओं को मिलाकर कॉंग्रेस में, अफ्रीका के भारतीयों पर अत्याचार सम्बन्धी प्रस्ताव पेश कराया। समाचार पत्रों ने भी इस आन्दोलन में बहुत भाग लिया। महात्मा जी फिर अपनी स्त्री बच्चों सहित डरबन पहुंचे। गोरे लोगों ने आप पर आक्रमण करके मार डालने का प्रयत्न किया परंतु पुलिस की

सहायता से आपकी जान बच गई। गोरे लोगों को भारत निवासी खतरनाक प्रतीत होने लगे। उन्होंने दो और नये क़ानून कौंसिल में उपस्थित किये। एक का उद्देश्य भारतीय व्योपारियों के लाभ को नष्ट करना था और दूसरे का उद्देश्य भारतीयों का अफ्रीका में प्रवेश बन्द करने का था। समिति वाले कानून के पश्चात् यह निर्णय हो चुका था कि आइन्दा कोई क़ानून विशेष, भारतीयों के विरुद्ध उपस्थित नहीं किया जायेगा। परंतु फिर भी वे दो नये कानून इस उद्देश्य से बनाये गये कि भारतीयों के लिये भविष्य में अधिक बाधायें डाली जायं। उपनिवेश मंत्री का ध्यान इन क़ानूनों की ओर दिलाया गया परन्तु उसने हस्ताक्षेप करने से इन्कार कर दिया।

१८९६ ई० के नियमानुसार भारतीयों को सम्मति देने के अधिकार से बञ्चित किया गया। १८९७ ई० में भारतीयों को यहाँ प्रवेश करने से रोकने के लिये इमीग्रेशन एक्ट बनाया गया। जो भारत को जाना चाहें वे इमीग्रेशन आफीसर से आज्ञा-पत्र लेकर जायं। देश से लौटने पर वह आज्ञा-पत्र दिखाकर ही प्रवेश कर सकेंगे। साथ ही यह शर्त लगाई गई कि जो भारतीय अङ्गरेजी की परीक्षा उत्तीर्ण करेगा, अपना व्यवहार अङ्गरेजी भाषा में करेगा उसे अपनी योग्यता सिद्ध कर देने पर रहने का अधिकार प्राप्त होगा, इस पर भारत के कितने ही व्यक्ति फेल करके लौटा दिये गये। इससे भारतीयों का आगमन बंद हो गया।

१९०३ ई० में नैटाल के बन्दरगाह पर सब मिलाकर ६७८३ भारतीय उतरने से रोक लिये गये। यद्यपि यह क़ानून सभीके

लिये बनाया गया परन्तु अधिकतया भारतीयों के लिये ही था। १८८७ ई० में यह नियम था कि सब व्यौपारियों को लाइसैन्स लेना पड़ता था इसके लिये अध्यक्ष का निर्णय अंतिम समझा जाता था। बिना लाइसैन्स व्यौपार करने वाले व्यक्ति को तीनसौ रुपये का दण्ड दिया जाता था। इस नियम के अनुसार यहाँ के व्यौपारियों का हिसाब किताब जांच पड़ताल किया जाता था। जरा सी गलती होने पर उसका लाइसैन्स रद्द कर दिया जाता था और इस प्रकार उसका कारोबार भी नष्ट हो जाता था। अब इसके संबन्ध में सुप्रीमकोर्ट में अपील करने का अधिकार दिया गया है परन्तु नया लाइसैन्स देने या वर्तमान लाइसैन्स को बदलने का अधिकार अब भी अध्यक्ष को ही पूर्ण रीति से हैं। इस प्रकार यहां के भारतीय व्यौपारियों को व्यौपार में अनेकों कठिनाइयां तथा बहुत सी असुविधायें हैं जिनके लिये समय २ पर आन्दोलन होता रहा है।

केपकालौनी और आरेञ्ज फ्री स्टेट

तीसरा वर्ग

यहां भी भारतीयों के लिये कड़ी शर्तें लगाई गई हैं। यहांपर प्रवेश करने के लिये अंग्रेजी का जानना आवश्यक है। यदि कोई पहिले का भारतीय भारत जाना चाहे तो आज्ञा-पत्र में वापिसी की तिथि लिखी जाती है। यदि वह एक दिन भी अधिक लगाकर आये तो उसे उतरने भी नहीं दिया जाता। दूसरा व्यौपारियों के लिये आज्ञापत्र (Dealers Licence act) भी बहुत कड़ा है। इस से व्यापार के काम में बहुत हानि हुई है। अब यहां पर कुछ सात हजार के लगभग भारतीय हैं। यहां के होटलों में ठहरने के लिये बैरिस्टर तथा एल० एल० डी० को भी ठहरने के लिये जगह नहीं मिलती।

आरेञ्ज फ्री स्टेट ने ११ सितम्बर १८९१ ई० में एशिया वासियों के विरुद्ध यह क़ानून बनाया कि यहां कोई एशिया-वासी निवास नहीं कर सकता और यहाँ प्रेजीडेण्ट की आज्ञा बिना दो मास से अधिक कोई भ्रमण करने के लिये भी नहीं आ सकता। यदि कोई दर्शक वहाँ जाना चाहे तो पहिले स्पष्ट रूप से लिखकर बयान दे कि मैं कोई धन्धा या व्यापार वहां जाकर नहीं करूंगा। उसका यह लेख सरकारी गज़टमें मुद्रित किया जाता है। यदि एक मास के अन्दर उसका कोई विरोध न करे तो प्रार्थनापत्र पर

ध्यान दिया जाता है। केपकालोनी के मलाई लोग आ सकते हैं। केवल पाकशाला के नौकर या बैरा बनकर काम कर सकते हैं। १८९३ ई० में भारतीयों को वहां से निर्वासित कर दिया गया। अब एकसौ के लगभग भारतीय नीचे (छोटे) कामों पर काम करने वाले रहते हैं।

ट्रान्सवाल

चौथा वर्ग

नैटाल में शर्तबन्द परिश्रमी की अवधि समाप्त करके कई भारतीय यहाँ आकर आबाद हुये और व्यौपार तथा अन्य धन्धे करने लगे। १८८५ ई० में बोअर लोगों ने यह नियम बनाया कि एशिया निवासी नागरिक न बन सकेंगे। उन्हें नियत किये हुये नगर के भाग के भीतर रहना होगा। सरकार को अधिकार होगा कि उनके निवास के लिये विशेष स्थान नियत करे। इसलिये अब कोई भारतीय वहाँ भूमि नहीं खरीद सकता।

१८९९ ई० में काले वर्ण के लोगों को सड़क के दोनों ओर के पैदल मार्गों पर चलने की मनाई की गई। उस पर भारतीयों ने ९९ साल के ठेके पर जौन्हसबर्ग के निकट भूमि लेकर अपने मकान बनाये और दूसरे नगरों में फैलकर अपने हाथ में व्यौपार को ले लिया। एशिया निवासी ट्रान्सवाल में जमीन के मालिक नहीं बन सकते। परंतु ऐसा करते रहे कि अपने किसी युरोपियन मित्र के नाम भूमि रजिस्टरी करा दी और फिर उसे उस जमीन

का रहननामा लिख दिया और अपना काम चला लिया। दो तीन आदमियों की लिमिटेड कम्पनी बनाकर भूमि खरीद सकते हैं। इस नियम से भारतीयों ने लाभ उठाया। कुल ट्रान्सवाल में ५७०० हिंदू और ५२०० मुसलमान रहते हैं। इस प्रकार वहांपर ११ हजार की भारतीय आबादी है।

बोअर युद्ध में भारतीयों ने सरकार की बहुत सहायता की। गांधी जी भारतीय कोर के अगुआ थे। घायल सिपाहियों को उठा लाने और उनकी सेवा सुश्रुषा करने में भारतीयों ने बहुत ही प्रशंसनीय कार्य किया। इस विषय में अखबार एडवरटाइजर ने लिखा "आखिर तो भारतवासी सम्राट की संतान हैं। बृटिश साम्राज्य उनका यह उत्तम समर्पण कदापि भूल सकता।"

रेवेरेण्ड ड्यूक साहब लिखते हैं कि जोहन्सबर्ग में स्मारक चिन्ह, उन भारतीयों की यादगार में बनाया गया था जो गांधी जी की संरक्षकता में घायल सिपाहियों को रणभूमि से उठाकर हस्पताल में ले जाकर उनकी सेवा करते हुये मर गये, यह स्मारक भारतीयों के चन्दे से बना था परन्तु इस कृतज्ञता और बलिदान को अब पश्चिमी लोग भूल गये हैं। ३१ मई १९०२ ई० को ट्रांसवाल अंग्रेजों के अधिकार में आ गया परन्तु भारतीयों के साथ बोअर लोगों की अपेक्षा अधिक अत्याचार किया जाता है। यह भारतीयों की सेवा और आज्ञा पालन का पुरस्कार है जो उन्हें दिया जा रहा है। मुख्य मुख्य बातें इस प्रकार हैं:—

(१) बोअर लोगों के समय में व्यापार के लिये लाइसैन्स की

कोई फ़ीस न थी अब तीन पौंड फ़ीस ली जाती है। नया आज्ञा-पत्र केवल लोकेशन (Location) के लिये दिया जाता है।

(२) बोअर समय में भारतीय ट्रान्सवाल के हर विभाग में रह सकते थे। अब बिना विशेष आज्ञापत्र के कोई भारतीय शहर में नहीं रह सकता।

(३) बोअर समय में गोरों के नाम से भारतीय भूमि खरीद सकते थे परन्तु अब ऐसा करना रोक दिया गया है।

(४) बोअर समय में बिना रोक टोक भारतीय ट्रांसवाल प्रवेश कर सकते थे परन्तु अन्य नये भारतीयों का प्रवेश बंद कर दिया गया है।

(५) बोअर समय में बिना भारतीयों को आज्ञापत्र देने के लिये विशेष कार्यालय न था अब भारतीयों के लिये जंगली जाति के लोगों के कार्यालय के समान एशियाटिक आफिस स्थापित कर दिया गया है।

(६) बोअर समय में बृटिशदूत (कौंसलर) भारतीयों के हित का ध्यान करता था। अब भारतवासी लोकेशन के अतिरिक्त अन्य नगरों में व्यापार भी नहीं कर सकते।

लार्ड मिलनर ने १९०३ ई० में ऐशियाटिक रजिस्ट्रेशन सर्टीफ़िकेट जारी किया। महात्मा गांधी जी ने इण्डियन ओपीनियन (Indian Opinion) समाचार पत्र जारी किया, जिससे भारतीयों

में आन्दोलन किया जावे और सब भारतीयों को अपने भाइयों के दुख दर्द का पता लगता रहे ।

१९०४ ई० में जोहन्सबर्ग की म्यूनिसिपेलिटी ने घोषणा की कि जहां भारतीय लोग निवास करते हैं वहां गोरे लोग आबाद किये जावेंगे। भारतीयों ने ९९ साल के पट्टे पर भूमि लेकर अपने मकान बनाये थे। इस घोषणा से हिन्दुस्तानियों में हलचल मच गई। ट्रांसवाल इण्डियन ऐसोसियेशन ने महात्मा गाँधी द्वारा उस का घोर विरोध किया । बड़े बड़े बैरिस्टरों को लेकर अदालत में लड़ाई की गई और पार्लियामैण्ट इङ्गलिस्तान में भी अपने कष्टों का संदेशा भेजा गया परन्तु किसी ने भी ध्यान न दिया । चौथाई भाग मूल्य देकर भूमि छीन ली गई । पबलिक हैल्थ कारपोरेशन ने निश्चय किया कि जहाँ काफ़िरों की बस्ती है वहां भारतीयों को स्थान दिया जावे परन्तु गोरों ने यह स्थान भी न लेने दिया और कहा कि वह स्थान भी गोरे लोगों के लिये रक्खा जावेगा। तत्पश्चात् प्लेग फैल जाने से भी भारतीयों की बड़ी हानि हुई ।

१९०६ ई० में म्यूनिसिपेलिटी को अधिकार दिया गया कि वह एशियाटिक लोगों के लिये किसी विशेष बाजार में रहने की व्यवस्था करे । उनके उस स्थान पर बसने की अवधि घटाने बढ़ाने और उनके निरीक्षण करने का अधिकार कमेटी को होगा। साथ ही ट्रामकार क़ानून बनाया कि युरोपियन लोगों के साथ भारतीय ट्रामकारों में न बैठ सकें । भारतीयों, काफ़िरों के लिये पृथक ट्रामकारें होनी चाहिये । ऐसी ही रेलमें व्यवस्था की गई । साथ ही भारतीयों को गोरों की श्मशान भूमि में प्रवेश करने से मने किया गया ।

शस्त्र रखने के लिये भी मिनिस्टर की आज्ञा बिना भारतीय रोक दिये गये। गांधी जी प्रीटोरिया में गये। भारतीयों का हाल सुन कर वह सरकारी अधिकारियों से मिलना चाहते थे उन्हें मिलने से रोक दिया गया। यहां तक कि जब उपनिवेश मंत्री जौहन्सबर्ग में आये तो उनसे भी महात्मा गांधी जी को नहीं मिलने दिया गया।

१९०६ ई० में जलू लोगों ने अंग्रेजों पर आक्रमण किया। भारतीयों ने अङ्गरेजों की उस समय भी बहुत सहायता की। महात्मा गांधी जी ने अगुआ बनकर इस अवसर पर कार्य किया। भारतीयों ने बहुत कष्ट उठाये।

१९०४ ई० में महात्मा गांधी जी ने एक आश्रम बनाया। मुसलमानों ने डरबन में दो और जौहन्सबर्ग में एक मसजिद बनाई। ईसाइयों ने यहां बहुत कार्य किया। हजारों भारतीयों को शिक्षा अन्य साधनों से ईसाई बना लिया।

४ अगस्त १९०६ ई० को फिर कौंसिल में एशियाटिक एमीग्रेशन एक्ट का मसविदा पेश हुआ। ११ सितम्बर को जौहन्सबर्ग के एम्पायर थियेटर में भारतीयों ने विराट सभा की और उसका घोर विरोध किया। साथ ही निश्चय किया गया कि विलायत के लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिये, वहां एक डेपूटेशन भेजा जाय। भारतीयों के विरोध का तनिक भी ध्यान न करते हुये ११ सितम्बरको क़ानून पास कर दिया गया। उसका उद्देश्य यह था कि हर भारतीय को अपना नाम रजिस्टर में लिखाना होगा और दस उङ्गलियों का इकट्ठा और आठ उङ्गलियों की अलग अलग छाप

देना होगा। इस नियम से भारतीयों के लिये खुल्लमखुल्ला कुली शब्द का प्रयोग किया गया। ट्रांसवाल में चोर बदमाशों के समान बर्ताव किया जाने लगा। नवीन भारतीयों का प्रवेश बंद कर दिया गया। इस एक्ट के अनुसार एशियाटिक रजिस्ट्रेशन सर्टीफिकेट हर समय अपने पास रखने का भारतीयों के लिये हुक्म था और किसी सिपाही या अफ़सर के पूछने पर फ़ौरन उसे दिखाने की आज्ञा थी। यह क़ानून स्वीकृति के लिये विलायत भेजा गया।

भारतीयों ने महात्मा गाँधी जी को अपना प्रतिनिधि बनाकर विलायत भेजा। महात्मा जी ८ नवम्बर को उपनिवेश मंत्री से जा मिले और भारत मंत्री से भी मुलाकात की। सर हैनरी काटन और भारत से सहानुभूति रखने वाले अन्य गोरों ने महात्मा जी का साथ दिया। विलायत के समाचारपत्रों ने भी सरकार को सम्मति दी। सम्राट एडवर्ड सप्तम ने भी उसपर हस्ताक्षर करने से इन्कार किया। मजदूरों के सदस्य भारतीयों के कष्ट निवारण करने की चेष्टा करने लगे। सरकार को सम्मति दी कि उपनिवेशों में भारतीयों पर गोरे लोगों के अत्याचार रोके जायं। लार्ड मारले ने महात्मा जी के साथ सहानुभूति प्रगट की। साठ मजदूर दल के सदस्यों ने सभा करके इसके विरुद्ध प्रस्ताव पास किया और सम्राट से प्रार्थना की कि इस नियम पर हस्ताक्षर न करे।

इस क़ानून में संशोधन करने के लिये मजदूरों की एक सभा नियत हुई। २९ नवम्बर को विलायत में साउथ अफ्रीकन बृटिश इंडियन कमेटी की स्थापना हुई। इसके सभापति सर लेपिल ग्रीफ़िथ

महोदय निर्वाचित हुये । लार्ड एलगीन ने सहानुभूति प्रगट करते हुये कहा कि मुझे आज ही प्रवासी भारतीयों का तार मिला है कि हम डेपूटेशन के साथ सहमत हैं । आखिर ३ दिसम्बर को सम्राट ने यह क़ानून अस्वीकार कर दिया परन्तु २२ मार्च १९०७ ई० को ट्रान्सवाल की पार्लियामेंट ने फिर इसे पास कर दिया और मई को बादशाह एडवर्ड ने इसपर स्वीकृति के हस्ताक्षर कर दिया। पहली जौलाई से उस पर अमल दरामद शुरू हुआ। प्रीटोरिया में एशियाटिक आफ़िस खोला गया। परन्तु किसी भी भारतीय ने नाम दर्ज कराना स्वीकार न किया। आठ हज़ार भारतीयों में से कुल चारसौ भारतीयों ने नाम दर्ज कराये। इससे सिद्ध हो गया कि बृटिश सरकार को भारतीयों की अपेक्षा गोरों से अधिक प्रेम है।

लाचार भारतीयों ने बृहद् सभा करके दृढ़ निश्चय किया कि चाहे कितने ही कष्ट सहने पड़ें, हम इतना अपमान न सह सकेंगे। हम उसका पूरा विरोध करेंगे। सब जगह सभा करके ऐसा ही निश्चय किया गया। ३ नवम्बर को सत्याग्रह का युद्ध आरम्भ हुआ। सरकार ने पूर्ण दमन नीति से काम किया। ११ नवम्बर १९०७ ई को भारतीयों को पकड़ने काम आरंभ हुआ। २८ दिसम्बर को जौहन्सबर्ग के मैजिस्ट्रेट ने महात्मा गांधी को ट्राँसवाल से निकल जाने का हुक्म दिया। उनके इन्कार करनेपर उन्हें दो मास की कैद का दण्ड दिया। प्रीटोरिया में कई भारतियों को छः मास की कैद का मिला। उनसे खूनी मुजरिमों के समान बर्ताव किया गया। प्रतिदिन लोग जेल में भरे जाने लगे। २९ जनवरी तक १५५ आदमी जेल में पहुँच गये। भारतियों को अब सरकार ने कहा कि यदि अपनी इच्छा से अपना नाम रजिस्टर में दर्ज करा

लिया तो यह क़ानून रद्द कर दिया जावेगा। इस पर गांधी जी राज़ी हो गये। ३० जनवरी १९०८ को सब कैदी छोड़ दिये गये। इस से गाँधी जी से बहुत से लोग असंतुष्ट हो गये और उन्हें मार डालने को तैयार हो गये। १० फर्वरी को गांधी जी और नायडो उङ्गलियों का निशान देकर आज्ञापत्र लेने चले तो क्रान्ति दल के लोगों में से एक पठान ने महात्मागाँधी पर आक्रमण कर दिया। उन के दाँत टूट गये, सर फट गया और वे लहूलुहान हो गये। वह उनको मरा समझकर भाग गये। पादरी ड्यूक साहब उन्हें उठाकर अपने घर लाये। पुलिस ने क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार कर लिया। मगर महात्मा जी ने मुक़द्दमा चलाने से इङ्कार किया और लोगों को यही सम्मति दी कि वह दस उङ्गलियों का निशान न देवें तत्पश्चात् क्रान्ति दल सभा में महात्मा गांधी जी पर पिस्तौल चलाया गया परंतु वे बाल बाल बच गये।

सरकारने अपने बचन को पूरा न किया किंतु पार्लियामैंट ट्रांसवाल ने पास किया कि जिन लोगों ने १० मई से पहिले अपने नाम दर्ज कराये हैं वह कारोबार कर सकेंगे बाक़ी लोगों को धंधे और व्यौपार करने के लिये ४० पौंड जुर्माना देना होगा। २४ जून १९०८ को खूनी कायदा रद्द करने से इङ्कार किया। इसलिये सत्याग्रह का युद्ध फिर आरम्भ हुआ। मि० सोहराब जी नैटाल से ट्रान्सवाल पहिले पहल प्रवेश करने गये। उन्हें पकड़कर एक मास के लिये जेल भेज दिया गया। १२ जुलाई को जौहन्सबर्ग में पबलिक मीटिङ्ग हुई। उसमें निश्चय किया गया कि रजिस्टर में कदापि नाम न लिखायें। दो हजार भारतीयों ने अपने आज्ञापत्र जला

दिये । ३० अगस्त को प्रीटोरिया में भारतीयों ने बड़ी सभा की और वहां भी दो सौ आज्ञापत्र जला दिये । नये क़ानून को मानने से इङ्कार किया गया ।

गांधी जी पुनः ७ अक्तूबर को पकड़े गये । १४ अक्तूबर को १४ अन्य भारतीयों के साथ डेढ़ डेढ़ मास के लिये जेल भेज दिये गये । ग्यारह वर्ष के एक बालक को भी १४ दिन की कैद हुई । गांधी जी से जेल में पत्थर तुड़वाये जाते थे और जंगलियों के समान बर्ताव किया जाता था । कड़ी धूप में सख्त भूमि खोदनी पड़ती थी । उनकी स्त्री सख्त बीमार हो गई । परन्तु आपने जुर्माना अदा करके छुटकारा पाने से इङ्कार किया । ९ नवम्बर तक २२७ भारतीय जेल में पहुँच गये ।

विलायत में इस सत्याग्रह की खूब हलचल मच गई । विलायत के लोगों का डेपूटेशन लार्ड मारले के पास संधि कराने के लिये पहुँचा परन्तु उसने कोई संतोषजनक उत्तर न दिया । फिर लंदन के किङ्गस्टन हाल में सर मैनचर जी की अध्यक्षता में सभा हुई और इस अत्याचार पर कड़ी आलोचना की गई । उसमें ला० लाजपतराय और विपिन चन्द्रपाल के ज़ोरदार भाषण हुये । १५ जनवरी तक दो हज़ार भारतीय जेलों में जा चुके थे । महात्मा जी दिसम्बर में छुट गये परन्तु जनवरी में ट्रांसवाल जाते हुये फिर गिरफ़ार कर लिये गये । उन्हें फिर तीन मास की सज़ा हो गई । अन्य भारतीयों को छः मास का दंड दिया गया ।

१० मार्च को डलगोआवे के मार्ग से भारतीयों को निकालने का विचार हुआ । १६ जुलाई को कितने ही भारतीयों को जहाज में

बैठाकर भारत भेज दिया गया नैटाल में भी लाइसैन्स लेने का नया क़ानून बना। इसलिये यहां भी आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। गिरफ्तारियां और सजायें प्रारम्भ हो गईं। जेल से छूटकर महात्मा गांधी जी फिर विलायत गये। स्थान स्थान पर वे भारतीयों के कष्ट सुनाते थे इधर मि० पोलक ने भारत में आकर दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतीयों का दुखड़ा रो रोकर सुनाया। फ़िरोजशाह महता ने भारत के वायसराय और मंत्री भारत के नाम तार भेजे। टाटा कम्पनी ने २५ हज़ार रुपया सत्याग्रहियों की सहायता के लिये भेंट किया। स्वर्गीय गोखले ने २५ जनवरी को कौंसिल में प्रस्ताव रक्खा कि भारतीय मज़दूर अफ्रीका में भविष्य में भेजने बंद कर दिये जायं। परन्तु अफ्रीका के गोरों ने अपने मज़दूर भेजकर भारत से मजदूर मंगवाने का यत्न किया। चुनाचे ५०० मजदूर कलकत्ता और ५०० मद्रास बन्दरगाह पर तैयार कर लिये गये। परन्तु सरकार भारत ने उनका जहाज़ रोक लिया। इससे अफ्रीका के मजदूरों का मान अधिक होने लगा। भारत सरकार ने मि० गोखले को दक्षिण अफ्रीका में रवाना किया। आपने हर जगह व्याख्यान दिये और सरकारी अधिकारियों से मिलकर भारतीयों के कष्टों का वर्णन किया। उन्होंने वचन दिया कि उनके कष्ट निवारण कर दिये जायेंगे परन्तु फिर भी वही ढाक के तीन पात वाली कहावत रही।

१९११ ई० में यूनीयन के बन जाने पर केप टाउन में यह कानून पास हुआ कि १८९५ ई० के पश्चात् आये हुये भारतीय यहां के नागरिक नहीं समझे जावेंगे। केप टाउन में वही प्रवेश-

कर सकेंगे जो अंग्रेजी में निपुण हों। तीन पौंड का कर भी क़ायम रक्खा गया। जिस मजहब में एक से अधिक विवाह करने का रिवाज है। उसके अनुसार किया हुआ विवाह नाजायज ठहराया गया। प्रत्येक भारतीय को अदालत में जाकर विवाह रजिस्ट्री कराना होगा। इसपर भारतीयों ने ग्लैडस्टौन राज्य मंत्री को तार दिया कि वह यह क़ानून विलायत में स्वीकृत न होने दें। भारतीयों ने यहाँ उसका घोर विरोध किया। विलायत में गोखले और रौपथज ने उसका विरोध आरम्भ किया। भारत में भी उसके विपरीत आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। सत्याग्रह का युद्ध चल निकला।

१६ मनुष्यों का जत्था जिसमें चार स्त्रियां भी थीं, गांधी जी सहित ट्रान्सवाल की सीमा में गया। वहां जाकर वे सब पकड़ लिये गये। उन्हें तीन महीने का कारावास हुआ। १८ सितम्बर १९१३ ई० को बृटिश इण्डियन ऐसोसियेशन का विशेष जलसा हुआ और सत्याग्रह के युद्ध के लिये बहुत उत्तेजना उत्पन्न करने वाले भाषण किये गये। कई आदमियों ने क़ानून के विरुद्ध फेरी करना प्रारम्भ कर दिया जिसके कारण उन्हें पकड़ लिया गया। मिसेज नायडू और मिसेज भवानी दयालु ने भी सत्याग्रह करके जेल जाना पसन्द किया। इस प्रकार स्त्रियों ने भी सत्याग्रह में भाग लिया। पहिले वे फेरी करती रहीं परन्तु किसी ने उन्हें न पकड़ा। फिर फिनिक्स में जाकर फेरी करने लगीं जिन्हें पकड़ लिया गया। तीन तीन मास की उन्हें सजा दी गई। भिन्न भिन्न स्थानों में हड़ताल शुरू होगई। लोग सत्याग्रह में भाग लेने लगे। हर ओर भारी हलचल मच गई। मजदूरों ने कारखानों और खानों में काम करना बन्द कर दिया। न्यूकासिल में १६० मजदूरों

को काम पर न जाने के कारण छः छः मास की सज़ा दी गई। ऐसा ही डरबी, लेडी स्मिथ और चार्लेस्टन से सैंकड़ों मज़दूर पकड़ पकड़ कर जेल में ठूंस दिये गये। जेल में स्थान न रहने पर मज़दूरों के डिपो को जेल स्थान बना दिया गया। इन से खानों में लेजा कर काम लिया जाने लगा।

६ नवम्बर १९१४ ई को महात्मा गांधी जी चार हज़ार मज़दूरों को साथ लेकर ट्रान्सवाल की सीमा पार करने गये। उनमें स्त्रियाँ भी अपने बच्चे गोद में लिये हुये सम्मिलित थीं। उन्होंने ट्रान्सवाल की सीमा पार करके वालकरस्ट के बाहर डेरा डाला। दूसरा एक और दल न्यूकासिल की ओर से आ पहुँचा और चार्लेस्टन में ठहरा। ट्रान्सवाल की सीमा पर पांच हज़ार भारतीय एकत्रित हो गये। गोरे लोग उनकी वीरता और साहस देख कर आश्चर्य करते थे। ८ नवम्बर को गांधी जी पकड़ लिये गये। बाक़ी सब को छोड़ दिया। उन्होंने अपना कूच जारी रक्खा। मैजिस्ट्रेट ने महात्मा गाँधी जी पर मुकदमा चलाया। ५० पौंड की जमानत लेकर उन्हें छोड़ दिया। आप तुरन्त अपने दल के साथ जा मिले। फिर आप डण्डी में पकड़ लिये गये। और आप के दल को सरकार ने रेल में बिठा कर नैटाल लाकर छोड़ दिया। वालकरस्ट में सरकार ने फ़ौजी छावनी डाल दी जिससे कोई ट्रान्सवाल न जाने पाये। इससे अधिक हलचल मच गई और हड़ताल प्रारम्भ हो गई।

मिस्टर पोलक भारतीयों के हितकारी व्यक्ति को भी सरकार ने तीन मास की जेल दे दी। किलनबेक को भी इसी प्रकार दण्ड

दिया सत्याग्रही क़ैदियों को मारटिज़बर्ग की जेल में रक्खा। क़ैदियों ने जेल में घी माँगा न मिलने पर उन्होंने उपवास प्रारम्भ कर दिया। सुपरिण्टेण्डेण्ट ने छः नेताओं को पृथक पृथक कोठरियों में बन्द कर दिया। बाक़ी क़ैदियों को जुदा जुदा धमकाना शुरू किया। कुछ क़ैदियों पर दबाव पड़ गया और उन्होंने खाना खाना प्रारम्भ कर दिया। उनको पत्थर तोड़ने का काम दिया गया। छः नेताओं को भी धमकाया और फिर मैजिस्ट्रेट ने धमकाया परन्तु सत्याग्रहियों ने एक न मानी। दो दिन पश्चात सत्याग्रहियों के बीमार हो जाने पर अस्पताल भर गया। मारटिज़बर्ग की जनता ने एक बड़ी मीटिङ्ग करके विलायत में तार भेजा कि सत्याग्रहियों को घी मिलना चाहिये अन्यथा ये सब मर जावेंगे। दूसरे दिन विलायत से तार आया कि उन्हें घी दिया जावे। तब उन्होंने उपवास को तोड़ा।

हड़ताल का फिर भी जोश बढ़ता गया। नार्थ कोस्ट में भी हड़ताल हो गई। सरकारी सिपाहियों ने बन्दूक, पिस्तौल और लाठियों से हड़तालियों पर आक्रमण किये। भारतीयों ने सब कारखानों में काम करना बन्द कर दिया। कई स्थानों में भारतीय घायल हुये। भारी हलचल मच गई। सब स्थानों पर काम बन्द होने लगे। हड़ताल की अग्नि अधिकाधिक प्रज्वलित होती गई। हड़तालियों पर बहुत अत्याचार हुये। बड़े बड़े नगरों में सभा करके उन से सहानुभूति प्रगट की गई। मिस्टर गोखले ने भारत से उन के साथ सहानुभूति का तार भेजा हड़ताली अपने विचार पर दृढ़ रहे। सरकार ने सब ही नेताओं को पकड़कर जेल में डाला और

मजदूरों को दंड दिया, धमकाया और प्रलोभन दिये परन्तु किसी ने भी एक बात न मानी।

भारत में भी प्रवासी भारतीयों के अत्याचार के सम्बन्ध में भारी जल्से किये गये। सहायता के लिये धन एकत्रित करके भेजा गया। अन्त में दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने हड़ताल आदि के सम्बन्ध में जांच करने के लिये एक कमीशन नियत किया जिसका प्रधान सर विलियम सालोमन जस्टिस हाई कोर्ट जौहन्सबर्ग बनाया गया। भारतीयों ने इस कमीशन का बायकाट किया क्योंकि इस में भारतीयों का कोई भी प्रतिनिधि सम्मिलित न किया गया था। ईसाइयों की रैड चर्च कौंसिल में इस कमीशन का विरोध किया। हड़तालियों को दंड मिलता रहा। कमीशन की सहायता करने के लिये गांधी जी, पोलक और किलन बैक छोड़ दिया गया। प्रत्येक स्थान पर समारोहपूर्वक उनका स्वागत हुआ। डरबन में एक विराट सभा में कमीशन के बायकाट का प्रस्ताव पास हुआ। सरकार से भी इस विषय में पत्र व्यौहार हुआ परन्तु विलायत के राज्य मंत्री ने असन्तोषजनक उत्तर दिया।

२२ दिसम्बर को स्त्रियों का पहिला समूह (जत्था) जेल से छूटा जिसमें श्रीमती गांधी जी भी थीं। धूमधाम के साथ उनका स्वागत किया गया। इसी प्रकार ज्यों २ अन्य नेता अपनी अवधि समाप्त करके छूटते गये, उनका भली प्रकार स्वागत होता रहा। अपना जेल का अनुभव तथा वहां के कष्ट वे सार्वजनिक सभाओं में सुनाते रहे।

२ जनवरी को मिस्टर थमी और पी० के० नायडू ८५ मनुष्यों का समूह लेकर पाटनटोन जाने के लिये रवाना हुये। २९ स्त्रियों और १० बालकों के साथ महाशय एजक और दीवान रेलगाड़ी में पाटनटोन गये। काम पर हाज़िर न होने के कारण ७३ मनुष्यों को पकड़ कर उन पर मुकदमा चलाया गया। उन्हें सज़ा दी गई और उन पर जुर्माना किया गया। बच्चों और स्त्रियों को न्यू जर्मनी में रखने का प्रबन्ध किया गया। भारतवर्ष से काँग्रेस के प्रधान ने भी सहानुभूति का तार भेजा। शीघ्र ही सी० एफ० एण्डरूज़ तथा पियरसन भी आ पहुँचे। उनका खूब स्वागत किया गया। भारत सरकार ने मिस्टर राबर्टसन चीफ़ कमिश्नर को ११ जनवरी को वहाँ भेजा। ट्रान्सवाल की वीर स्त्रियां जैसे ही छूट कर आईं उनका खूब धूमधाम से स्वागत किया गया। सरकार की ओर से पकड़ना और दण्ड देना बराबर जारी रहा।

९ जनवरी को एण्डरूज़ की माता की मृत्यु हो गई। इस कारण १२ फ़र्वरी को वे विलायत चले गये। मिस्टर पियरसन २६ फ़र्वरी को भारत लौट गये। अन्त में महात्मा गाँधी जी ने जनरल स्मस को लिखा कि तीन पौण्ड का टैक्स रद्द किया जावे। विवाह अपने अपने धर्म के अनुसार किया हुआ जायज़ समझा जावे। केप में प्रवेश के नियम को हटा लिया जावे। पुराने नियमों में न्यायपूर्वक बर्ताव किया जावे और कमीशन में भारतीय प्रतिनिधि लिया जावे। इन बातों के होने पर परस्पर सन्धी हो सकती है उससे शान्ति और अमन हो सकेगा। इस पर जनरल स्मस ने पूरा सन्तोषजनक उत्तर न दिया किन्तु यह लिखा कि पार्लियामैंट में पुनः इन विषयों पर विचार किया जावेगा।

कमीशन की कार्यवाही में एण्डरूज़, पियरसन, राबर्टसन जो भारत से आये हुये थे उनके तथा यहां के गोरों के बयान लिये गये। अधिकतया गोरों ने तीन पौंड के टैक्स को रद्द करने का समर्थन किया। हिन्दुओं के लिये विवाह जायज़ क़रार दिये। परन्तु लिखते हुये शोक होता है कि कुछ मुसलमानों ने कमीशन के सामने बयान दिये। मुसलमानों को भड़काया कि काफ़िरों का साथ न दो।

१० फ़र्वरी को सायंकाल के समय समस्त सत्याग्रही छोड़ दिये गये। सैंकड़ों लोग उनका स्वागत करने गये। मारटिज़बर्ग में उन्हें एक प्रीतिभोज दिया गया। कमीशन ने १८ मार्च १९१४ ई० को अपनी रिपोर्ट पेश की। उसने उसमें लिखा:—

(१) तीन पौंड का टैक्स अवश्य रद्द कर दिया जावे।

(२) हिन्दुस्तानी चाहे अपने धर्मानुसार कितने ही विवाह करें परन्तु बच्चे एक स्त्री के जायज़ और वारिस समझे जावें। जो पुरुष एक स्त्री को नियमानुसार विवाहित मानना चाहे वह सरकार के नियत किये हुये मौलवी या पण्डित से सर्टीफ़िकेट ले परन्तु केवल एक स्त्री जायज़ समझी जावेगी।

(३) फ्री आरेञ्ज स्टेट के विषय में जो शपथपत्र देने का क़ानून बना था वह रद्द कर दिया जावे।

(४) साउथ अफ्रीका में भारत से लौटकर आने के लिये तीन वर्ष की अवधि की जाय।

(५) केप टाउन में एक दो भाषिया नियत किया जावे। वहां के मैजिस्ट्रेट को अधिकार दिया गया कि एक प्रांत से दूसरे प्रांत

में जाने वाले प्रवासी को आज्ञापत्र देवे ।

(६) केप टाउन में अंगूठों के निशान लेने के स्थान में दोनों हाथों की उङ्गलियों के छाप लेने के क़ानून को बंद किया जावे ।

(७) आज्ञापत्र लेने के लिये जो एक पौंड लिया जाता है उसे कम करना चाहिये और मियाद आज्ञा अधिक करने के लिये कोई कर न लिया जाना चाहिये ।

(८) भारत से जो लोग मैजिस्ट्रेट से आज्ञापत्र लेकर यहां आते हैं उनके स्त्री बच्चों के साथ लाने की आज्ञा दी जानी चाहिये ।

५ जून १९१४ ई० को इण्डियन रिलीफ़ बिल पार्लियामैंट में उपस्थित किया गया । १ जुलाई १९१४ ई० को सम्राट की इस बिल पर स्वीकृति हो गई । इस प्रकार दक्षिण अफ्रीका में शान्ति हो गई । भारतीयों ने इतने कष्ट सहकर अपने विचार पर दृढ़ रह कर, सत्याग्रह द्वारा पूर्ण सफलता प्राप्त की । उनको शर्तों के सामने झुकना पड़ा । भारतीयों के विरुद्ध नये क़ानून बनने बन्द हो गये । उन्हें कुछ शान्ति मिलने लगी ।

महात्मा गांधी जी यहां से भारत को चलने को तैयार हुये । स्थान २ पर जनता ने उनका खूब स्वागत किया । बड़े २ नगरों में बिराट सभा करके उन्हें मानपत्र भेंट किये गये । १८ जुलाई को महात्मा जी अपनी धर्मपत्नि तथा क्लिनबर्ग के साथ पहिले विलायत गये । वहां वे मिस्टर गोखले से मिले । अन्य युरोपियन लोगों से मिल कर वे वहां से भारत को लौट गये ।

इस प्रकार दक्षिण अफ्रीका में जो हलचल मची थी और गोरे लोग निकाल कर भारतीयों को वहां से निकालना चाहते थे उसकी समाप्ति हुई। अब भारतीय और गोरे मिलकर रहते हैं। भारत सरकार की ओर से यहां अब एजेंट जनरल रहता है जो भारतीयों के अधिकारों की रक्षा करता है। उसकी अवधि तीन वर्ष की होती है।

पहिले एजंट जनरल श्रीनिवास शास्त्री बनाये गये। दूसरे महाशय रेडी बनाये गये। अब सर कुंवर महाराज सिंह जी हैं। श्रीनिवास शास्त्री ने १५ युरोपियन और १५ भारतीयों की एक सभा बनाई थी जिसका नाम इंडो युरोपियन क्लब रक्खा जो दोनों जातियों के संगठन का पूर्ण ध्यान रखती थी। शास्त्री जी के नाम पर हिन्दुओं ने एक बड़ा भारी कालिज भी स्थापित कर दिया। इस कालिज का बड़ा भारी भवन बनवाकर रुस्तम जी सेठ ने दान कर दिया। आजकल कुंवर महाराजसिंह जी भारतीयों के हित के लिये बहुत कुछ उद्योग कर रहे हैं। हर प्रकार की यहां अब शान्ति है।

आर्य समाज डरबन सेंट्रल का विवरण

इस समाज की स्थापना श्रीमान् पण्डित प्रवीणसिंह जी के कर कमलों से ता० ८ दिसम्बर १९२९ ई० को हुई थी। पहिले इस सभा का नाम आर्य समाज डापोरोड डरबन था। कुछ दिनों के पश्चात डीपोरोड नाम की जो स्ट्रीट थी उसका नाम बदल जाने के कारण से इस सभा ने अपना नाम आर्य समाज डरबन सेंट्रल रख लिया। इस सभा के अन्दर नितान्त नवयुवक ही रहे और जो कोई महाशय घुणाक्षर न्याय की तरह अधिक आयु वाला था उसने भी कभी सभाओं में अधिक भाग नहीं लिया था।

यह बड़े हर्ष की बात है कि जिस समय से इस सभा की स्थापना हुई है तब से यह अपनी शक्ति अनुसार कुछ न कुछ धर्म कार्यों को करती ही रहती है। यह नितान्त सत्य बात है कि यहां आर्य प्रतिनिधि सभा के ठेकेदार यदि इस समाज को कोई अन्य प्रकार की सहायता न भी देकर साधारणतया उत्साहित होकर इस में जोश ही उत्पन्न करते रहते तो भी बहुत था। बड़ी भारी बात तो यह है कि यह सब कुछ न भी होते हुये वह समाज अपना पग कभी पीछे हटाना जानती नहीं। समाज की स्थापना होने के साथ ही तत्क्षण इस समाज ने महाशय प्रगाश नामक व्यक्ति के ग्रह पर स्वयं जा जा कर ३० रोज लगातार हवन यज्ञ करवाया। कुछ थोड़े दिन बीतने के बाद पंडित रल्लाराम जी एम० ए० को बुलाकर इस देश में प्रचार कराया। और पंडित महता जैमिनी जी तथा पं० रल्लाराम जी एम० ए० को अन्तिम बिदाई के समय बड़ी श्रद्धा-भक्तिपूर्वक मानपत्र समर्पण किया और आर्य भजन मण्डल जोकि

इस समाज के अन्तरगत था उनके द्वारा कई एक स्थानों में खूब ज़ोर-शोर से प्रचार कराया गया। यह समाज प्रत्येक हिंदू त्यौहारों को समय २ पर मनाया करता है। जिसने अपने सदस्य और अन्य भी बड़े २ भद्र पुरुषों को निमंत्रित कर, उन त्यौहारों को मनाने का वास्तव में अभिप्राय क्या है इन सब बातों पर पूर्णरूप से प्रकाश डालने के लिये प्रयत्न किया जाता है। जब से इस समाज की स्थापना हुई है, भारत वर्ष से आये हुये प्रत्येक आर्य पुरुषों को स्वागत तथा मानपत्र दिये बिना यह कभी चुपचाप नहीं रही। एक महाशय रघुवीर नाम के व्यक्ति की पानी में डूबकर मृत्यु हो जाने के कारण उनकी धर्मपत्नी तथा उनके बच्चे जो अनाथ होगये थे उनको सहायतार्थ आर्यसमाज केटो मैनर ने जो सब आर्यसमाजों से प्रार्थना की थी कि इस वक्त प्रत्येक आर्यसमाज का कर्तव्य है कि वह महाशय रघुबीर के अनाथ बच्चों के लिये अपनी २ शक्ति के अनुसार कुछ थोड़ा बहुत अवश्य दान दें। यह समाचार पाकर इस आर्य समाज डरबन सेंट्रल ने भी अपनी शक्ति अनुसार अपनी समाज से चन्दा कर आर्य समाज केटो मैनर को समर्पण किया। इस सभा के सदस्यों ने पोर्टशेपस्टोन में उपरोक्त स्त्री की शुद्धी की थी कि जिसका नाम धर्मदेवी रक्खा गया था। इसके तीन बच्चे थे बड़े लड़के का नाम श्रीकृष्णचंद्र रक्खा गया उससे छोटे लड़के का नाम हरिश्चन्द्र और जो सबसे छोटा था उसका नाम [illegible]चन्द्र रखवाया गया। उनमें से बड़े लड़के जिसका नाम कृष्णचन्द्र रखवाया गया था उसका विवाह इस समाज के सदस्य महाशय एस० जगमोहन सिंह जी की इकलौती बहिन कुंआरी यशोदा जी से ता० १६ अप्रेल सन् १८३२ को करदिया।

महाशय जी ने सभा से कुछ सहायता न लेते हुये केवल व्याख्यान दाताओं और भजन मंडल की याचना कर बड़े समारोह के साथ विवाह किया। समाज ने भी अपना सहयोग देकर व्याख्यानों तथा भजन द्वारा उस विवाह संस्कार की महान शोभा बढ़ाई और अन्त में महाशय एस जगमोहनसिंह जी को अन्तःकरण से धन्यवाद दे कार्यवाही समाप्त की। डरबन कोपरेशन बारकस में एक हिन्दी पाठशाला है जिसके सञ्चारक म० सौहनलाल जी दूसरा म० आर० शिवनायक तीसरा म० बि० शिवदीन जी और बी० जगदेव थे, उपरोक्त पाठशाला को इस समाज ने बहुत सहायता पहुँचाई और आज दिन तक तन मन धन के साथ चला रही है।

सब से प्रथम इस सभा ने विशेषतया पोर्टशिपस्टोन नामक नगर में प्रचार किया था और उसका प्रभाव वहां पर बहुत अच्छा पड़ा। गङ्गाराम जी दुकानदार ने ठाकुर साहब के भजनों तथा व्याख्यानों से अत्यन्त प्रसन्न होकर तत्क्षण अपनी दुकान से पचास रुपया लाकर उपरोक्त सभा से प्रार्थना करके कहा कि मैं यह चाहता हूं कि यदि आपकी सभा दो अथवा तीन सदस्यों को हरेक मास में हमारे इस नगर में प्रचारार्थ भेजा करे तो हमें पूर्ण निश्चय है कि हमारे यहाँ के हिन्दु भाइयों को भी कुछ न कुछ वैदिक धर्म का अवश्य पता लग जाय।

द्वितीय बार महाशय ऐफ राम लगन जी जोकि उस समय उपरोक्त समाज का सभापति था और महाशय रूपानन्द जी पोर्टशिपस्टोन भेजे गये कि जिन्होंने भजनों तथा व्याख्यानों द्वारा वहां पर प्रचार अच्छी प्रकार किया और तीसरी बार महाशय

ईश्वरसिंह, महाशय डी० सिंह और महाशय रूपानन्द जी इत्यादि ने भजनों तथा व्याख्यानों द्वारा पुनः पोर्टशिपस्टोन में खूब प्रचार किया। चतुर्थ बार इसी समाज द्वारा श्रीमान् पंडित प्रवीणसिंह जी को और महाशय बी शिवर्दान को पुनः उक्त नगर में प्रचारार्थ भेजा गयो। और पंडित जी के प्रचार ने तो सोने पर सुहागा वाली कहावत कर दिखलाई। और पांचवी बार पोर्टशिपस्टोन के महाशय नोहर ने इस समाज को निमंत्रित किया और कहा कि मैं चाहता हूँ कि आर्य समाज डरबन सेन्ट्रल हमारे भाई के साले का विवाह वैदिक रीत्यानुसार स्वयं अपनी तरफ से योग्य पुरोहित को लाकर करवावे। इस बार इस सभा ने उस विवाह में भाग लेने के लिये अपने १२ सदस्यों को भेजा। वहां पर जाकर पंडित अवध विहारी जी तथा महाशय ऐफ रामलगन जी पुरोहितों द्वारा विवाह वैदिक रीत्यानुसार बड़ी धूम धाम के साथ करवाया। वहीं व्याख्यानों द्वारा वैदिक विवाह का महत्व भी स्पष्ट रीति से बतलाया गया। उससे दूसरे दिन उससे कुछ थोड़ी दूर पर अर्थात् कोई एक मील की दूरी पर जाकर इस सभा ने एक कुलोत्पन्न स्त्री कि जिसके तीन सन्तान भी थीं वेद मंत्रों द्वारा शुद्धि पंडित अवध विहारी जी द्वारा कराई। पंडित रल्लाराम जी एम० ए० को नैरोबी से निमंत्रित करके दक्षिण अफ्रीका में प्रचार कराया गया वहाँ आर्य समाज का महत्व उनके मनोरञ्जक उपदेशों से अधिक हो गया। उनके बुलाने में म० डी० सिंह ने बहुत भाग लिया।

इस समाज के प्राण रूप जो नारायण वल्लभ भक्त जी हैं उनके भक्ति भाव का इस स्थान पर उल्लेख करना आवश्यकीय

समझकर लिखा जाता है। यह महोदार पुरुष भक्त नारायण बल्लव जी इस आर्य समाज डरबन सेंट्रल के संरक्षक हैं। जिस समय द्वितीय बार पण्डित प्रवीणसिंह जी दक्षिण अफ्रीका में आये, तब कि ओवृपोट की रामायण सभा ने पण्डित प्रवीणसिंह जी को बुलाया था। कोई कारण बस पंडित जी रामायण सभा के पास नहीं रह सके, उस समय कोई ढाई वर्ष तक भक्त नारायण बल्लव जी ने पं० प्रवीणसिंह जी के रहने के लिये स्थान तथा उनके खान-पान के लिये जो कुछ भी खर्च होना था। सब अपने ऊपर ले लिया और उपरोक्त पंडित जी की बड़ी श्रद्धा भक्तिपूर्वक सेवा की। तत्पश्चात् जब पं० रल्लाराम एम० ए० आर्य समाज डरबन सेंट्रल के निमंत्रित से इस देश में पधारे थे उस समय भी प्रायः उनका सारा भार अपने पर ले लिया। अब जब बड़ौदा आर्य कन्यायें पंडित आनंदप्रिय सहित यहाँ पधारीं उनको भोज तथा पुष्पाहारों से सत्कार कर अन्त में उन्हें ३० गिन्नी दे बिदा किया। महाशय नारायण बल्लभ जी का दुमहला है अब ऊपर के महल में जो कमरे हैं उनमें से एक कमरा भक्त नारायण बल्लभ जी ने सदैव के लिये जब कि आर्य समाज डरबन की बैठक हो उसके लिये ही है कह कर समर्पण कर दिया है। इस वक्त हम महाशय मोखमचन्द जी को भी क्यों कर भूलें जिन्होंने इस दक्षिणी अफ्रीका में सब से प्रथम भाई परमानन्द जी को बुलाकर बहुत भारी उपकार किया। और जितने भी यहां पर आर्य प्रचारक आये प्रायः सभी मोखमचन्द जी की ही कृपा से आये।

लेखक ईश्वरसिंह